www.ghoonghatkibagawat www.ghoonghatkibagawat ghoonghatkibagawat37@gmail.com

घूँघट की बगावत

UP/HIN/1999/1282

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित | हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 24 अंक : 18 | गोरखपुर, 10 नवम्बर 2024 रविवार | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2

जम्मू-कश्मीर में बढ़ती में बढ़ती आतंकी घटनाएं

सनातन धर्म सभा संगठन ने इन हत्याओं के विरोध में किश्तवाड़ में पूर्ण बंद का आह्वान किया है। 'सनातन धर्म सभा' संगठन ने कहा, किश्तवाड़ के कुंतवाड़ा में दो वीडीजी सदस्यों की नृशंस हत्या के विरोध में पूरे किश्तवाड़ में पूर्ण बंद रहेगा।" जम्मू-कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस की सरकार बनने के बाद से घाटी में आतंकवाद की वापसी हो गयी है। रोजाना जम्मू-कश्मीर से आतंकी घटनाओं की खबरें सामने आने से पूरा देश चिंतित है। हम आपको बता दें कि आज भी आतंकियों ने दो लोगों की हत्या कर दी। किश्तवाड़ जिले के ऊपरी इलाकों में आतंकवादियों ने दो ग्राम रक्षा गार्ड (वीडीजी) को अगवा करने के बाद उनकी हत्या कर दी। हत्या की इस घटना के बाद पुलिस और सेना ने घने जंगल वाले इलाके में व्यापक संयुक्त तलाश अभियान शुरू किया है। पुलिस की प्रवक्ता ने बताया, ह्यह्यप्राप्त सूचना के अनुसार, ओहली कुंतवाड़ा निवासी वीडीजी के दो सदस्य नजीर अहमद और कुलदीप कुमार अपने मवेशियों को चराते समय ऊपरी इलाकों में लापता हो गए। उन्होंने बताया, बाद में उनके शवों की तस्वीरें सोशल मीडिया पर प्रसारित होने लगीं और परिवार के सदस्यों ने उनकी पहचान की पुष्टि की। उन्होंने बताया, इस संबंध में पुलिस और सेना संयुक्त तलाशी अभियान चला रही है। अधिकारियों ने बताया कि ओहली-कुंतवाड़ा निवासी नजीर अहमद और कुलदीप कुमार बृहस्पतिवार सुबह अधवारी क्षेत्र के मुंजला धार जंगल में अपने मवेशियों को चराने गए थे, लेकिन वे वापस नहीं लौटे। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों द्वारा उनका अपहरण कर उनकी हत्या किए जाने की खबरों के बीच पुलिस दल उन्हें खोजने निकले। कुलदीप कुमार के भाई पृथ्वी ने कहा, हमें सूचना मिली है कि मेरे भाई और अहमद को आतंकवादियों ने अगवा कर लिया है और उनकी हत्या कर दी है। वे वीडीजी थे और हमेशा की तरह मवेशी चराने गए थे। पृथ्वी ने कहा कि उनके पिता अमर चंद की एक सप्ताह पहले मौत हो गई थी और ऐसे में उनके भाई के बारे में ऐसी खबर मिलना परिवार के लिए एक और बड़ा सदमा है। नाम न बताने की शर्त पर एक स्थानीय व्यक्ति ने मीडिया को बताया कि गांव वालों को इस घटना के बारे में तब पता चला, जब आतंकवादियों ने हत्या की तस्वीरें मृतकों के फोन से साझा कीं। हम आपको बता दें कि पाकिस्तान से संचालित जैश-ए-मोहम्मद आतंकवादी संगठन से जुड़े 'कश्मीर टाइगर्स' ने इन हत्याओं की जिम्मेदारी ली है। उसने कुछ तस्वीरें साझा कीं जिनमें दोनों वीडीजी के शवों की आंखों पर पट्टी बंधी है। इस बीच, 'सनातन धर्म सभा' संगठन ने इन हत्याओं के विरोध में किश्तवाड़ में पूर्ण बंद का आह्वान किया है। 'सनातन धर्म सभा' संगठन ने कहा, ह्यह्यकिश्तवाड़ के कुंतवाड़ा में दो वीडीजी सदस्यों की नृशंस हत्या के विरोध में पूरे किश्तवाड़ में पूर्ण बंद रहेगा। किसी भी वाहन को सड़कों पर चलने की अनुमति नहीं होगी। व्यापारिक प्रतिष्ठान एवं कार्यालयों को बंद रखने की अपील की गई है। संगठन ने कहा कि किश्तवाड़ की आम जनता से अनुरोध है कि वे बंद का पूर्ण समर्थन करें तथा अपने सभी व्यापारिक प्रतिष्ठान, शैक्षणिक संस्थान और दुकानें बंद रखें। किश्तवाड़ में लोगों ने आतंकी घटनाओं के बढ़ने पर प्रदर्शन करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से हस्तक्षेप की मांग भी की।

जम्मू कश्मीर में अलगाववाद और तुष्टिकरण की राजनीति दोबारा परवान चढ़ने लगी

नेशनल कॉन्फ्रेंस एवं उमर अब्दुला सरकार ने सदन में अपने बहुमत का लाभ उठाते हुए बुधवार को बिना अनुच्छेद 370 की पुर्नबहाली शब्द का इस्तेमाल कर, विशेष दर्जे की बहाली का प्रस्ताव तीखी झड़पों, हाथापाई, लात-घूंसे एवं शोरशराबे के बीच ध्वनिमत से पारित करा, साबित कर दिया है, वह पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के साथ इस होड़ में पीछे रहने के मूड में नही है। ऐसा लगता है कि जम्मू कश्मीर में अलगाववाद और तुष्टिकरण की राजनीति फिर से परवान चढ़ने लगी है, आम कश्मीरी अवाम को गुमराह कर उसे बबार्दी की तरफ धकेलने की कुचेष्टाएं प्रारंभ हो गयी है। इस पारित प्रस्ताव में केंद्र सरकार से कहा गया है कि वह विशेष दर्जा वापस देने के लिए राज्य के प्रतिनिधियों से बातचीत करे। बुधवार को नवगठित राज्य विधानसभा में जब यह प्रस्ताव उप-मुख्यमंत्री सुरिंदर सिंह चौधरी ने पेश किया, तभी यह स्पष्ट हो गया था कि चौधरी का चयन ही इसलिए किया गया है कि भारतीय जनता पार्टी इसे सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश न कर सके। लेकिन भाजपा ने एक विधान एक निशान और राष्ट्रवाद के प्रति अपनी संकल्पबद्धता को दोहराते हुए इस प्रस्ताव का विरोध कर बताया कि वह प्रत्यक्ष तो क्या परोक्ष तौर पर भी किसी को घड़ी की सुइयां पीछे मोढ़ने की अनुमति नहीं देगी। जब तक केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की नरेन्द्र मोदी सरकार है, कोई भी अनुच्छेद 370 और 35ए को वापस नहीं ला सकता। अनुच्छेद 370 एक मरा हुआ सांप है, जिसे वह एक गले से दूसरे गले में डाल, जहर, आतंक एवं हिंसा फैलाने के षडयंत्र को सफल नहीं होने देगी। कश्मीर के नेताओं को समझना ही होगा कि पूरे भारत में अनुच्छेद 370 को लेकर जैसा जनमानस है, उसे देखते हुए अनुच्छेद 370 की वापसी असंभव है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से अनुच्छेद 370 हटने के बाद जम्मू-कश्मीर की धरती पर अनेक सकारात्मक स्थितियां उद्घाटित हुई है, विशेषतः लोकतंत्र को जीवंतता मिली है, वहां की अवाम ने चुनावों में बढ़-चढ़कर भाग लिया, शांति एवं विकास से इस प्रांत में एक नई इबारत लिखी जाने लगी है। जम्मू-कश्मीर हमारे देश का वो गहना है जिसे जब तक सम्पूर्ण भारत के साथ जोड़ा नहीं जाता, वहां शांति, आतंकमुक्ति एवं विकास की गंगा प्रवहमान नहीं होती, अधूरापन-सा नजर आता रहा है। इसलिए इसे शेष भारत के साथ हर दृष्टि से जोड़ा जाना महत्वपूर्ण है और यह कार्य मोदी एवं उनकी सरकार ने करके एक नये सूरज को उदित किया है, अब उस सूरज को अस्त नहीं होने दिया जायेगा। बड़ी जद्दोजहद से वहां एक नया दौर शुरू हुआ है, अब इस सुनहरे एवं उजले दौर को स्वार्थी एवं सत्ता की अलगाववादी एवं विघटनकारी राजनीति की भेंट नहीं चढ़ने देना चाहिए।

भारत की महानता उसकी विविधता में है। साम्प्रदायिकता एवं दलगत राजनीति का खेल, उसकी विविधता में एकता की पीठ में छुरा भोंकता रहा है, घाटी उसकी प्रतीक बनकर लहूलुहान रही है। जब हम नये भारत-सशक्त भारत बनने की ओर अग्रसर हैं, विश्व के बहुत बड़े आर्थिक बाजार बनने जा रहे हैं, विश्व की एक शक्ति बनने की भूमिका तैयार करने जा रहे हैं, तब हमारे मस्तक के ताज जम्मू-कश्मीर को जाति, धर्म व स्वार्थी राजनीति से बाहर रखना सबसे बड़ी जरूरत है। इसी दिशा में घाटी को अग्रसर करने में मोदी सरकार के प्रयत्न सराहनीय एवं स्वागतयोग्य रहे हैं। घाटी की कमजोर राजनीति एवं साम्प्रदायिक आग्रहों का फायदा पडोसी उठा रहे हैं, जिनके खुद के पांव जमीन पर नहीं वे आंख दिखाते रहे हैं। अब ऐसा न होना, केन्द्र की कठोरता एवं सशक्तीकरण का द्योतक हैं। कश्मीर के तथाकथित राजनीतिक कर्णधारों! अलगाववाद और तुष्टिकरण की राजनीति छोड़ो। अगर तेवर ही दिखाने हैं तो देश के दुश्मनों को दिखाओ, पडौसी देश के मनसूंबों को निस्तेज करों। अतीत की

विशेष राज्य का दर्जा पाने के मसले पर नेशनल कॉन्फ्रेंस जहां खड़ी है, पीडीपी उससे दो कदम आगे रहना चाहती है। ऐसे करके नेशनल कान्फ्रेंस और पीडीपी सरीखे दल यहां अलगाववाद और एक वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की राजनीति को जारी रखना चाहते हैं, वह यहां फिर से अलगाववाद को पैदा करना चाहते हैं, आम कश्मीरी अवाम को गुमराह कर उसे बबार्दी की तरफ धकेलना चाहते हैं, तभी अनुच्छेद 370 की बहाली का प्रस्ताव लाये हैं। जबकि अनुच्छेद 370 के हटने से घाटी में एक उजाला अवतरित हुआ है, अब फिर से घाटी को अंधेरों से नहीं घिरने देना चाहिए। भले ही नेशनल कॉन्फ्रेंस ने जम्मू-कश्मीर का चुनाव ही इसी घोषणा के साथ लड़ा और जीता है कि वह भारतीय संविधान में राज्य को उसका विशेष दर्जा वापस दिलाएगी। इसीलिये नेशनल कॉन्फ्रेंस ने सत्ता में आते ही पहला काम यही किया और विधानसभा ने राज्य को विशेष दर्जा दिए जाने का प्रस्ताव पारित कर दिया।



राजनीतिक भूलों को सुधारना और भविष्य के निर्माण में सावधानी से आगे कदमों को बढ़ाना, जम्मू-कश्मीर की चुनी हुई सरकार का संकल्प होना चाहिए।

विशेष राज्य का दर्जा पाने के मसले पर नेशनल कॉन्फ्रेंस जहां खड़ी है, पीडीपी उससे दो कदम आगे रहना चाहती है। ऐसे करके नेशनल कान्फ्रेंस और पीडीपी सरीखे दल यहां अलगाववाद और एक वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की राजनीति को जारी रखना चाहते हैं, वह यहां फिर से अलगाववाद को पैदा करना चाहते हैं, आम कश्मीरी अवाम को गुमराह कर उसे बबार्दी की तरफ धकेलना चाहते हैं, तभी अनुच्छेद 370 की बहाली का प्रस्ताव लाये हैं। जबकि अनुच्छेद 370 के हटने से घाटी में एक उजाला अवतरित हुआ है, अब फिर से घाटी को अंधेरों से नहीं घिरने देना चाहिए। भले ही नेशनल कॉन्फ्रेंस ने जम्मू-कश्मीर का चुनाव ही इसी घोषणा के साथ लड़ा और जीता है कि वह भारतीय संविधान में राज्य को उसका विशेष दर्जा वापस दिलाएगी। इसीलिये नेशनल कॉन्फ्रेंस ने सत्ता में आते ही पहला काम यही किया और विधानसभा ने राज्य को विशेष दर्जा दिए जाने का प्रस्ताव पारित कर दिया।

नेशनल कान्फ्रेंस को लगता है कि विशेष दर्जे के मुद्दे से कुछ लोगों के तार भावनात्मक रूप से जुड़े हैं, इसलिए ज्यादा अतिवादी रूख अपनाकर इसका कुछ राजनीतिक फायदा उठाया जा सकता है। दोनों ही प्रमुख दल इस मुद्दे का राजनीतिक लाभ उठाने की होड़ लगाते हुए दिख रहे हैं। तभी मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की टिप्पणी थी कि यह पीडीपी का केवल प्रचार स्टंट है और उसके विधायक सिर्फ कैमरे के आगे आने के लिए यह सब कर रहे हैं। मगर उमर अब्दुल्ला जो बात पीडीपी के लिए कह रहे हैं, वही शायद उनके लिए भी कही जा सकती है, वरना वह भी यह जानते हैं कि 5 अगस्त, 2019 को जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले संविधान के जिस अनुच्छेद 370 को खत्म किया गया था, उसकी वापसी अब इतनी आसान नहीं है। वैसे भी, इतना तो उन्हें पता ही होगा कि सिर्फ विधानसभा में प्रस्ताव पारित हो जाने भर से अनुच्छेद 370 वापस आने वाला नहीं है। फिर इस समय केंद्र में भाजपा सरकार है, जो किसी भी तरह से इस पर विचार करने के मूड में नहीं है। उसकी नजर में यह एक कागज का टूकड़ा है, जो बिना विचार के रद्दी की टोकड़ी में ही जाने वाला है।

अनुच्छेद 370 को लेकर कश्मीर की जनता और राजनेताओं, दोनों को समझना ही होगा कि 70 साल तक विशेष दर्जा होने के बावजूद इससे राज्य का कोई बहुत भला नहीं हुआ। देश की मूल धारा से कटकर यह प्रांत अंधेरों से घिरा रहा है। हिंसा एवं आतंकवाद की त्रासदी को झेलते हुए विकास एवं शांति की बाट जोहता रहा है। अब विशेष दर्जा हटाने का राज्य को बहुत लाभ मिला है, वहां विकास एवं जनकल्याण के काम तेजी से हो रहे हैं, न केवल विकास योजनाएं आकार ले रही है, बल्कि वहां शांति एवं सौहार्द का वातावरण बना है, आतंकवादी घटनाओं पर भी नियंत्रण किया जा सका है। मोदी की सरकार ने जम्मू-कश्मीर के विकास को चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ाया है। देश के साथ दुनिया को यह संदेश दिया गया कि कश्मीर में किसी का हस्तक्षेप स्वीकार्य नहीं, कश्मीर भारत का ताज है और हमेशा रहेगा। इघाटी के राजनीतिक दलों को वहां के अवाम के हित में सोचना चाहिए। क्योंकि अनुच्छेद 370 के खत्म होने से राज्य का कोई नुकसान हुआ, ऐसा नहीं दिखता। इसलिए जम्मू-कश्मीर को अब ऐसी राजनीति की जरूरत है, जो विशेष दर्जे से इतर तरक्की का नया खाका खींचे। अनुच्छेद 370 का खत्म होना इसलिये ही महत्वपूर्ण माना जा रहा है कि वहां के लोगों ने साम्प्रदायिकता, राष्ट्रीय-विखण्डन, आतंकवाद तथा घोटालों के जंगल में एक लम्बा सफर तय करने के बाद अमन-शांति, सौहार्द एवं विकास को साकार होते हुए देखा है। उनकी मानसिकता घायल थी तथा जिस विश्वास के धरातल पर उसकी सोच ठहरी हुई थी, वह भी हिली है। जम्मू-कश्मीर में शांति और सौहार्द के साथ लोकतंत्र और विकास की नई इबारत लिखी गयी है। जम्मू-कश्मीर को अशांत और संवेदनशील क्षेत्र बनाए रखने की कोशिश में लगे तत्वों एवं राजनीतिक दलों से सावधान रहने की जरूरत है, भले ही वे नेशनल कॉन्फ्रेंस हो या पीडीपी या अन्य पाकिस्तान परस्ती राजनीतिक दल।

उपचुनाव के नतीजों से प्रदेश की राजनीति में बड़े बदलाव की संभावना नहीं

राजस्थान में आगामी 13 नवंबर को सात विधानसभा सीटों पर होने जा रहे उपचुनाव के लिए वोट डाले जाएंगे। सात में से पांच विधानसभा सीटों झुंझुनू, दौसा, खींवसर, देवली-उनियारा, चौरासी में वहां के विधायकों के सांसद बनने के चलते इस्तीफा देने से उपचुनाव होने जा रहे हैं। वहीं सलूंबर व रामगढ़ में विधायकों की मृत्यु होने के चलते उपचुनाव हो रहे हैं। हालांकि इन विधानसभा उपचुनावो के नतीजों से प्रदेश की राजनीति में कोई बड़ा बदलाव होने की संभावना नहीं है। इससे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार को कोई खतरा होने वाला नहीं है।

मगर इन उपचुनाव के नतीजे का असर प्रदेश की राजनीति में कई पार्टियों व उनके नेताओं के राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित करेगा। 2023 के विधानसभा चुनाव में सात विधानसभा सीटों में से चार सीटों पर कांग्रेस पार्टी के विधायक थे। वही एक सीट पर भाजपा, एक पर राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (रालोपा) व एक पर भारतीय आदिवासी पार्टी (बाप) का विधायक था।

जिन सात विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हो रहे है। उनमें से प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा के पास सिर्फ एक सलूंबर की सीट थी। जहां उनके लगातार तीन बार के विधायक अमृतलाल मीणा के निधन के चलते उपचुनाव हो रहा है। भाजपा के लिए सलूंबर की सीट जीतना प्रतिष्ठा का सवाल बना हुआ है। इसीलिए भाजपा ने दिवंगत विधायक की पत्नी शांता मीणा को टिकट देकर सहानुभूति का लाभ उठाना चाहती है। इसके अलावा प्रदेश की अन्य विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव में भी भाजपा पूरी मजबूती के साथ चुनाव मैदान में उतरी है।

उपचुनाव में हार जीत के साथ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन 2014 व 2019 के लोकसभा चुनाव की तुलना में बहुत अच्छा नहीं रहा था। इसलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा चाहते हैं कि सभी सात सीटों पर उपचुनाव में उनकी पार्टी के प्रत्याशियों को विजय बनवाकर भाजपा आला कमान की नजरों में अपनी मजबूत छवि बना सके। भाजपा प्रदेश की सभी सातों सीटों पर पूरी मजबूती के साथ चुनाव लड़ रही है। भाजपा ने समय रहते अपने सभी बागियों को मना कर एकजुटता का संदेश देने में सफल रही है। पार्टी के अधिकृत प्रत्याशियों के खिलाफ उतरे बागियों को चुनाव से हटाने में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रयास सफल रहे हैं।

प्रदेश की सभी विधानसभा सीटों के उपचुनाव में विजय हासिल करने के चक्कर में भाजपा ने अपनी नीति व सिद्धांतों को भी ताक पर रख दिया है। दौसा सीट पर राजस्थान सरकार में मंत्री डॉक्टर किरोडीलाल मीणा के भाई जगमोहन मीणा को प्रत्याशी बनाया है। जबकि दौसा सीट सामान्य वर्ग की सीट है। मगर भाजपा ने डॉक्टर किरोडीलाल मीणा के दबाव में अनुसूचित जनजाति के प्रत्याशी को मैदान में उतार दिया है। डॉक्टर किरोडीलाल मीणा के भतीजे राजेन्द्र मीणा भी महुआ से विधायक है। इस तरह एक परिवार के तीन लोगों को पार्टी ने टिकट देकर परिवारवाद को बढ़ावा दिया है।

वही 2023 के विधानसभा चुनाव में झुंझुनू से भाजपा के प्रत्याशी निशित कुमार उर्फ बबलू के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ने वाले राजेंद्र भांभू व रामगढ़ से भाजपा प्रत्याशी जय आहूजा के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ने वाले सुखवंत सिंह को टिकट देकर मैदान में उतार दिया है। देवली-उनियारा सीट पर भी भाजपा ने पिछली बार चुनाव लड़े कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला के बेटे विजय बैसला का टिकट काटकर पूर्व विधायक राजेंद्र गुर्जर को मैदान में उतारा है। वहीं खींवसर सीट पर रालोपा के अध्यक्ष व नागौर के सांसद हनुमान बेनीवाल को पिछले विधानसभा चुनाव में कड़ी टक्कर देकर मात्र 2059 वोटो से हारने वाले रेवतराम डागा को फिर से मैदान में उतारा है।

चौरासी सीट पर पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी की करारी हार हुयी थी। इस बार भाजपा ने वहां नया प्रत्याशी कारीलाल ननोमा को मैदान में उतारा है। भाजपा प्रत्याशी सीमलवाड़ा पंचायत समिति के प्रधान है तथा सादड़िया के सरपंच रह चुके हैं। अब उनकी पुत्रवधू रेखा सरपंच है। उनकी पत्नी हाकली देवी भी सरपंच रह चुकी है। क्षेत्र में अच्छी पकड़ होने के कारण राजनीतिक विश्लेषक मान रहे हैं कि इस बार वहां भाजपा कड़ी टक्कर दे सकती है।

कांग्रेस को अपनी चार सीट झुंझुनू, दौसा, देवली-उनियारा व रामगढ़ फिर से जितनी होगी। साथ ही अन्य तीन सीटों पर भी अपनी ताकत दिखानी होगी कांग्रेस ने झुंझुनू सें सांसद बने बृजेंद्र सिंह ओला के बेटे अमित ओला को मैदान में उतारा है। अमित ओला ओला



परिवार की तीसरी पीढ़ी है तथा उनके दादा शीशराम ओला झुंझुनू से पांच बार सांसद नौ बार विधायक केंद्र तथा राज्य सरकार में कैबिनेट मंत्री रहे थे। वहीं रामगढ़ सीट पर दिवंगत विधायक जुबेर खान के पुत्र आर्यन खान को उतार कर सहानुभूति के बल पर चुनाव जीतना चाहती है।

दौसा सामान्य सीट पर कांग्रेस ने अनुसूचित जाति के दीनदयाल बैरवा को टिकट देकर मैदान में उतारा है। देवली-उनियारा से पूर्व अधिकारी कस्तूर चंद मीणा को मैदान में उतारा है। यहां कांग्रेस के बागी नरेश मीणा चुनाव को त्रिकोणात्मक बना रहे हैं। नरेश मीणा को कांग्रेस पार्टी मनाने में नाकाम रही है। जिसके चलते कांग्रेस प्रत्याशी की स्थिति ज्यादा बेहतर नहीं मानी जा रही है। सलूंबर में कांग्रेस ने 2018 में निर्दलिय चुनाव लड़कर कांग्रेस को हराने वाली रेशमा मीणा को मैदान में उतारा है। जिससे नाराज होकर सांसद, विधायक व मंत्री रह चुके रघुवीर मीणा अंदर खाने पार्टी प्रत्याशी को नुकसान पहुंचा रहे हैं। चौरासी सीट पर कांग्रेस पार्टी ने इस बार 29 साल के नए प्रत्याशी महेश रोत को मैदान में उतारा है। खींवसर सीट पर कांग्रेस पार्टी ने महिला प्रत्याशी रतन चैधरी को मैदान में उतार कर हनुमान बेनीवाल के वोट बैंक में बड़ी सेंध लगाई है। जिसका फायदा भाजपा को हो सकता है।

खींवसर सीट पर रालोपा के अध्यक्ष हनुमान बेनीवाल की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है। पिछला विधानसभा चुनाव वह मात्र 2059 वोटो से जीते थे। फिर कांग्रेस से गठबंधन कर नागौर से सांसद चुने जाने पर उन्होंने विधानसभा से इस्तीफा दे दिया था। अब उन्होंने अपनी पत्नी कनिका बेनीवाल को मैदान में उतारा है। यहां उनका मुकाबला भाजपा के रेवत राम डागा व कांग्रेस की रतन चैधरी से होगा। हनुमान बेनीवाल ने 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के रेवत राम डागा को महज 2059 वोटो से हराया था। विधानसभा उपचुनाव में यदि हनुमान बेनीवाल की पत्नी चुनाव हार जाती है तो उनकी पार्टी का विधानसभा में प्रतिनिधित्व तो समाप्त होगा ही साथ ही उनका प्रदेश की राजनीति में प्रभाव भी काम हो जायेगा। इसलिए हनुमान बेनीवाल के लिए उपचुनाव में करो व मारो वाली स्थिति बनी हुई है।

आदिवासी बहुल चैरासी विधानसभा सीट पर पिछले विधानसभा चुनाव में आप पार्टी के अध्यक्ष राजकुमार रोत 69166 वोटो से चुनाव जीते थे। उनके बांसवाड़ा-डूंगरपुर से सांसद बनने के चलते इस्तीफा देने से खाली हुई चौरासी सीट पर उपचुनाव हो रहा है। आदिवासी बेल्ट में बाप पार्टी का प्रभाव लगातार प्रभाव बढ़ रहा है। पिछले विधानसभा चुनाव में बाप पार्टी के तीन विधायक जीते थे। चौरासी सीट पर कांग्रेस व भाजपा ने भी इस बार नए प्रत्याशियों को मौका दिया है। वही बाप पार्टी का बागी बदामीलाल ताबियाड़ भी चुनाव मैदान में खड़ा है। उनकी पत्नी शर्मिला अभी चिखली पंचायत समिति की प्रधान है। बदामीलाल को पार्टी अध्यक्ष राजकुमार रोत मैदान से हटाने में असफल रहे हैं। सांसद रोत के लिए चौरासी सीट उनकी प्रतिष्ठा से जुड़ी हुई है। क्योंकि वह वहां से लगातार दो बार विधायक रह चुके हैं। यदि चैरासी से उनकी पार्टी का प्रत्याशी चुनाव हारता है तो उनके बढ़ते प्रभाव को झटका लगेगा। राजस्थान की सात में से चार विधानसभा सीटों झुंझुनू, देवली-उनियारा, खींवसर में तिकोना व चौरासी में चैकोना मुकाबला होने जा रहा है।

झुंझुनू में पूर्व मंत्री राजेंद्र गुढ़ा के मैदान में उतरने से मुकाबला तिकोना हो गया। गुढ़ा जितने मुस्लिम व अनुसूचित जाति के वोट लेंगे उसका सीधा नुकसान कांग्रेस को होगा। वहीं राजपूत वोटो का नुकसान भाजपा को होगा। विधानसभा उपचुनाव का प्रचार चरम पर पहुंच गया है। जैसे-जैसे उपचुनाव मतदान की तारीख नजदीक आती जा रही हैं। वैसे-वैसे राजनीतिक दलों के स्टार प्रचारक भी चुनाव मैदान में उतरकर प्रचार करने लगे हैं। उप चुनाव में भाजपा, कांग्रेस, रालोपा व बाप पार्टी की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है। अपनी प्रतिष्ठा बचाने में राजनीतिक पार्टियों कितनी सफल हो पाती है इसका पता तो चुनाव परिणाम के बाद ही चल पाएगा।

आखिरकार... प्रियंका गांधी चुनावी मैदान में उतर ही गईं

पिछले तीन दशकों से राजनीतिक मंचों पर नजर आने वाली प्रियंका गांधी आखिर काफी अगर मगर के बाद चुनवी राजनीति में भी उतर गई। इंदिरा गांधी जैसी दिखने और गांधी परिवार की राजनीतिक कमान सम्हालने भर से वह चुनावी राजनीति में सफल हो जायेंगी ? वह भी उस दौर में जो संघ की पाठशाला से निकले प्रधानमंत्री मोदी का दौर कहा जाता है ।जिस तरह उनके चुनाव लड़ने पर लम्बा अगर मगर लगा था, वैसा ही इस स्तर पर सफलता पर भी लगा है। बहरहाल ये दिलचस्प है कि अनुभवी प्रचारक प्रियंका एक नौसिखिया उम्मीदवार प्रियंका के लिए केरल की वायनाड सीट पर वोट मांग रही है। हालांकि पहली बार (जैसा खुद खुलासा किया उन्होंने 17 साल की उम्र में ही अपने पिता राजीव गांधी के लिए प्रचार करना शुरू किया था। भले ही वह कांग्रेस के लिए एक अनुभवी प्रचारक और संकटमोचक रही हैं। लेकिन इस लम्बे सफर में वह अब तक केवल चुनाव प्रचार करने वाली बहन और बेटी की भूमिका में ही थी। पहली बार अपने लिए वोट मांग रही प्रियंका चयनाह की सभाओं में पिता, मां और भाई के लिए दिए भाषणों की याद ताजा भी करती है। गांधी परिवार की सबसे ज्याद जनसमर्थन रखने वाली सदस्य प्रियंका ने 52 साल की उम्र में कांग्रेसी कार्यकताओं, नेताओं और मीडिया के उस अगर मगर का जवाब दिया, जिसमें कहा जाता था कि वह ऐसा करेंगी ।बतौर उम्मीदवार उनके पास चुनाव लड़ने का शून्य अनुभव हो, लेकिन इस बीच, प्रियंका गांधी पृष्ठभूमि में रहकर अपनी मां और भाई के चुनाव अभियान का प्रबंधन करती रही है। करीब छह साल पहले उनको संगठनात्मक जिम्मेदारी दी गई थी, जब 2019 में प्रियंका गांधी को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) का महासचिव नियुक्त किया गया और उन्हें पूर्वी उत्तर प्रदेश में पार्टी के अभियान का प्रभार दिया गया। उस समय कांग्रेस को ऐसा लगता था कि प्रियंका गांधी, इंदिरा गांधी की अक्स है और वो एक करिश्माई लीडर साबित हो सकती हैं। कांग्रेस परिवार हमेशा उसे एक तुरुप का पत्ता मानती थी साथ ही, चाहती थी कि जब भी प्रियंका गांधी राजनीति में आएंगी तो कांग्रेस को इसका बहुत फ यदा मिल सकता है और एक बड़ा बदलाव हो सकता है। उस समय प्रियंका ने साफ्ट हिंदुत्व की यह भी अपनाई थी। उन दिनों रुद्राक्ष की माला और माथे पर चंदन वाली प्रियंका हर जगह दिख जाती थी। हर विधानसभा क्षेत्र में दौरे में वह हर प्रसिद्ध मंदिर में जाने से नहीं चूकतीं थीं। अपने को बेहतर धार्मिक दिखाने के लिए उन्होंने गंगा यात्रा भी की थी। लेकिन ये सब कवायद बेकार गई और कयास केवल वली साबित हुए और कांग्रेस यूपी के अंदर पूरी तरह से फेल साबित हुई। यूपी में कांग्रेस सिर्फ वापसी करने में नाकाम नहीं रही, बल्कि जिस स्थिति में थी उससे कहीं ज्यादा बदत्तर स्थिति में चली गई। कांग्रेसियों ने जैसा हौवा बनाया था कि कांग्रेस की स्थिति बदल जाएगी, ऐसा कुछ नहीं हुआ और कांग्रेस का जो एक तुरुप का पता माना जाता था, वो तुरुप का पत्ता भी नहीं चला। लेकिन कांग्रेस को या यूं कहें कि गांधी परिवार अभी भी प्रियंका को बड़ा पैकेज मानती है। वैसे तो भाई-बहन में अच्छी टियूनिंग है लेकिन किसी टकराव से बचने के लिए उनको दक्षिण भारत से लांच किया जा रहा है। इसकी एक बड़ी वजह ये भी है कि उत्तर भारत में बीजेपी मजबूत है तो वहीं दक्षिण में अभी भी कर्नाटक को छोड़ दें तो हर राज्यों में सियासी जमीन ही तलाश रही है, ऐसे में कांग्रेस के लिए सेफ पैसेज है। प्रियंका की वहां मौजूदगी से कांग्रेस को केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु जैसे राज्यों में पार्टी को मजबूत करने में मदद मिलेगी। कांग्रेस की अगुवाई वाला गठबंधन केरल की सत्ता से दूर है। साल 2021 के केरल चुनाव में भी लेफ्ट गठबंधन ने लगातार दूसरी बार सरकार चलाने का जनादेश हासिल किया था। अब कांग्रेस को उम्मीद है कि प्रियंका गांधी के वायनाड में होने का सकारात्मक असर केरल चुनाव में देखने को मिलेगा और पार्टी को उनके यहां होने से चुनाव अभियान में कामयाबी मिल सकती है। इसके अलावा कांग्रेस कतई नहीं चाहती कि दक्षिण में ये संदेश न जाए कि उसे पार्टी बस स्टेपनी की तरह यूज करती है। प्रियंका को उतारने से दक्षिण के लोगों में यह संदेश जाएगा कि कांग्रेस पार्टी उनको पूरी अहमियत देती है। चुनावी राजनीति में प्रियंका भले ही नवअभ्यागत हो लेकिन वह एक मंजी हुई मंचीय नेता और कुशल वक्ता है। वह हर विषय पर सोच समझ कर बोलती हैं। वह अक्सर पीएम मोदी पर हमलावर रहती हैं लेकिन उनके बढ़नों से कभी ट्रक्स पैदा नहीं हुई। प्रियंका गांधी ने जिस तरह से बीजेपी के हमलों को बगैर किसी विवाद के काउंटर किया, उसे भी कांग्रेस के नजरिए से उम्मीद जगाने वाला माना जा रहा है। वायनाड सीट से अगर प्रियंका सफल होती हैं, जिसकी सम्भावना दिख रही है तो कांग्रेस को केरल की राजनीति में भी बड़ी मदद मिलने की उम्मीद है। दरअसल केरल में कांग्रेस की अगुवाई वाला गठबंधन केरल की सत्ता से काफी दिनों से दूर है। परिवारवाद जिस तरह से कांग्रेस में मजबूत हो रहा है, उस पर अब जोरदर अटैक करने का विरोधी पार्टियों को एक अवसर भी मिलेगा। आरोप है कि कम परिवारवाद में सिमट रही। दरअसल कांग्रेस को संचालित कौन कर रहा है ? कौन फैसले ले रहा है और गांधी परिवार की क्या भूमिका है ।वे जग जाहिर है ।ये भी तथ्य है कि जनता में प्रियंका का राहुल से बेहतर क्रेज है, अगर वह ल से आगे निकल जाती है तो गांधी परिवार के बफादर समूहों में मतभेद बढ़ सकते हैं। अलग-अलग गुट हो सकते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि कुछ दिनों बाद मल्लिकार्जुन खड़गे के बदले प्रियंका को पार्टी की कमान सौंपने की मांग उठने लगे। बालप्रियंका गांधी को अब गांधी परिवार से बाहर निकलना और राजनीति में अपना स्थान सुनिश्चित करना होगा। उनसे बड़ी अपेक्षाएं हैं और उनकी क्षमताओं का निर्णय वयनाड और अन्य चुनावी जीतों द्वारा निर्धारित किया जाएगा। वह सही है कि परिवार के लोगों का नाम लेकर, इंदिरा गांधी जैसी दिख कर चुनाव जीत सकती हैं, लेकिन कितने, कब तक ? प्रियंका को एक नेता के रूप में अपने को साबित करना होगा तभी वह पार्टी कार्यकताओं में एक नई जान फूंक सकती हैं। साल 2021 के केरल चुनाव में भी लेफ्ट गठबंधन ने लगातार दूसरी बार सरकार चलाने का जनादेश हासिल किया था। राहुल के वायनाड सांसद बनने और 2019 में संसदीय चुनाव में बेहतर प्रदर्शन के बाद भी कांग्रेस को केरल की राजनीति में कुछ खास हामिल नहीं हुआ था। लेकिन प्रियंका के व्यक्तित्व में देखते हुए उनसे कांग्रेस को वहां सकारात्मक असर पड़ने की आस है। एक बड़ाल ये भी उठ रहा है कि अखिर कांग्रेस ने प्रियंका को इतनी देर में क्यों चुनावी मैदान में उत्तरा ? जबकि उनका पहले वाला क्रेज भी नहीं रहा। लेकिन, कांग्रेस की राजनीति को समझने वाले विश्लेषकों का मानना है कि ये बिल्कुल सही समय है।

'ड्रग्स-फ्री इंडिया' अभियान को ठेंगा दिखाती नशे की शिकार युवा पीढ़ी



पंजाब में नशे की समस्या पर सुप्रीम कोर्ट भी चिन्ता व्यक्त करता रहा है, अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए उसने पंजाब सरकार को फटकार भी समय-समय पर लगाई है। पूर्व में सुप्रीम कोर्ट ने कहा, ह्यपंजाब में नशे की समस्या बढ़ती जा रही है। नकली शराब और नशीले पदार्थों को रोका जाना चाहिए। ऐसे तो युवा खत्म हो जाएंगे। गरीब लोग मर रहे हैं। पंजाब में हर गली में एक भट्टी होती है। अगर कोई चाहे तो देश को खत्म कर देगा। अगर बॉर्डर क्षेत्र सुरक्षित नहीं है तो कैसे चलेगा? नशा माफिया के आगे बेबस क्यों पंजाब सरकार?



पंजाब में राजनीति और ड्रग्स का चोली दामन का संबंध है, बड़ी राजनीतिज्ञ पार्टियों की नशा माफिया एवं नशीले पदार्थों के तस्करों के साथ काफी मिलीभगत है और यही वजह है कि पंजाब 'नशीले पदार्थों की राजनीति' के युग से गुजर रहा है। इसलिये भी यह समस्या उग्र से उग्रतर होती जा रही है।

पंजाब में नशे की समस्या पर सुप्रीम कोर्ट भी चिन्ता व्यक्त करता रहा है, अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए उसने पंजाब सरकार को फटकार भी समय-समय पर लगाई है। पूर्व में सुप्रीम कोर्ट ने कहा, ह्यपंजाब में नशे की समस्या बढ़ती जा रही है। नकली शराब और नशीले पदार्थों को रोका जाना चाहिए। ऐसे तो युवा खत्म हो जाएंगे। गरीब लोग मर रहे हैं। पंजाब में हर गली में एक भट्टी होती है। अगर कोई चाहे तो देश को खत्म कर देगा। अगर बॉर्डर क्षेत्र सुरक्षित नहीं है तो कैसे चलेगा? नशा माफिया के आगे बेबस क्यों पंजाब सरकार? सुप्रीम कोर्ट की चिन्ता पंजाब में नशे की गंभीर चुनौती को देखते हुए वाजिब है। जिसके खिलाफ व्यापक पैमाने पर योजनाबद्ध अभियान वक्त की जरूरत है। सरकारें लंबे समय से इसके विरुद्ध कार्रवाई की बात तो करती रही हैं, लेकिन जमीनी हकीकत में कम ही बदलाव नजर आया है। फिलहाल पंजाब में नशीले पदार्थों के खिलाफ जारी कार्रवाई आप सरकार की नई प्रतिबद्धता को दशार्ती है और सतही तौर पर नशे की खिलाफ सफलता के आंकड़े एक सराहनीय कार्रवाई को दशार्ते हैं, लेकिन इसके बावजूद समस्या की विकटता को देखते हुए ये आंकड़े पर्याप्त नहीं हैं।

पंजाब में आतंकवाद ही नहीं, तरह-तरह के नशे एवं ड्रग्स के धंधे ने व्यापक स्तर पर अपनी पहुंच बनाई है, जिसके दुष्परिणाम समूचे देश को भोगने को विवश होना पड़ रहा है। पंजाब नशे की अंधी गलियों में धंसता जा रहा है, सीमा पार से शुरू किए गए इस छद्म युद्ध की कीमत पंजाब चुका रहा है, जिसने लंबे समय से पंजाब को जकड़ रखा है। पिछले दस महीनों में पंजाब पुलिस ने 153 बड़े ऑपरेटरों सहित 10,524 तस्करों को गिरफ्तार किया है। पंजाब ने स्थानीय तस्करों के साथ-साथ बड़े ड्रग नेटवर्क को लक्षित करने में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की। हाल ही में 790 किलोग्राम हेरोइन, 860 किलोग्राम अफीम और अन्य नशीले पदार्थों के साथ-साथ 13 करोड़ रुपये से अधिक ड्रग मनी जब्त की गई है। इन आपराधिक अभियानों की वित्तीय बुनियाद पर प्रहार करते हुए नशे के कारोबार से जुड़े लोगों की 208 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति जब्त की गई। हालांकि, अभी पर्दे के पीछे से काम करने वाले प्रमुख तस्करों को बेनकाब करने और कानूनन दंडित करने की सख्त जरूरत है। ड्रग की तस्करी और व्यापक रूप से नशे की लत पंजाब की सबसे उल्लेखनीय घातक सामाजिक-राजनीतिक चुनौती बन चुकी है जो कई प्रकार से पूरे देश की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बनती जा रही है।

पाकिस्तान पोषित इस नशीले कारोबार की भयावहता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस साल सीमा सुरक्षा बल ने पंजाब की पाकिस्तान से लगती सीमा से 183 ड्रोन जब्त किए। जो वर्ष 2023 में बरामद 107 ड्रोन से कहीं अधिक हैं। पाक प्रायोजित यह तस्करी परिष्कृत एवं सुनियोजित तरीके से की जा रही है, जिसके खिलाफ सख्त कार्रवाई जरूरी है। खासकर, ऐसे संवेदनशील सीमावर्ती राज्य में इस समस्या की भयावहता को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि इसके खिलाफ एक ऐसी संपूर्ण लड़ाई छेड़ी जाए जिसमें कामयाब होने में अगर कई वर्ष भी लग जाएं तो उसे जारी रखा जाए। नशे की समस्या पिछले कई वर्षों के दौरान और बद से बदतर होती गई है और पिछले पंजाब में हुए विधानसभा चुनावों में यह एक बड़ा मुद्दा था। क्योंकि शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों से हर रोज युवाओं की मौत की खबरें हो या विधवाओं का क्रंदन समूचा देश हिला है। कितनी मांओं की गोद उजड़ गई और कितने वृद्ध पिताओं की सहारे की लाठी टूट गई। नशीले पदार्थों का धंधा सीमाओं से होते हुए देश की रग-रग में पसरता गया है।

पंजाब में बिछा ड्रग्स का जाल जनजीवन के लिये बड़ी चुनौती है। पंजाब पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं ईरान के तथाकथित गोल्डेन क्रेसेंट से तस्करी कर लाई गई नशीली दवाओं का एक पारगमन बिंदु (ट्रांजिट प्वाईंट) तथा बाजार दोनों ही है। जहां अफगानिस्तान में उत्पादित हेरोईन की भारत-पाकिस्तान की 553 किमी लंबी और अवैध घुसपैठ की संभावनाओं से युक्त सीमा से तस्करी की जाती है, अफीम, अफीम की भूसी, चरस एवं हशीश जैसी अन्य नशीली दवाएं आसपास के देशों से आती हैं। भारत एवं पाकिस्तान सीमा पर अच्छी सड़कों का अभाव भी सीमा पर लगी बाड़ के नीचे सुरंगों की खुदाई के जरिये भारी मात्रा में मादक दवाओं की खेप के हस्तांतरण के काम को आसान बना देती हैं। पंजाब पुलिस की नशे से जुड़े आतंकवदी तंत्र की जांच करने की सीमित क्षमता है, खासकर, इस समस्या का मुकाबला करने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकीय एवं वैज्ञानिक उपकरणों की उसके पास कमी है।

वक्त की जरूरत है कि लगातार भयावह होती स्थिति में पुलिस को इस खेल की बड़ी मछलियों को बेनकाब करके नशे के प्रवाह पर रोक लगानी चाहिए। इसके बाद बड़े नशा तस्करों के खिलाफ व्यापक स्तर का अभियान चलाना चाहिए। जिससे समाज में यह संदेश जाए कि कोई कितना भी ताकतवर व्यक्ति क्यों न हो, कानून से ऊपर नहीं है। साथ ही यह भी कि समाज विरोधी कार्यों में लिप्त होने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। ऐसे तत्वों को राजनीतिक संरक्षण देने वाली ताकतों को भी बेनकाब करने की जरूरत है।

पंजाब सरकार की सख्त कार्रवाई का यह संदेश नशा माफिया को जाना जरूरी है कि इस काले कारोबार से जुड़े लोगों की दंडमुक्ति संभव नहीं है। इसके अलावा सीमा पार से चलाए जा रहे नशे के कारोबार के लिये पडोसी देश को भी कड़ा संदेश जाना चाहिए। नशे की तस्करी में तमाम आधुनिक साधनों का उपयोग किया जा रहा है। हालांकि, बीएसएफ ने पहल करते हुए एंटी-ड्रोन सिस्टम लगाए हैं। जिसके सार्थक परिणाम भी मिल रहे हैं। पंजाब में नशे की गंभीर चुनौती को देखते हुए सीमा सुरक्षा को फुलप्रूफ करने की दिशा में कदम उठाए जाने चाहिये। जिसमें उच्च तकनीक व विभिन्न एजेंसियों में बेहतर तालमेल की जरूरत है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी पूर्व में 'ड्रग्स-फ्री इंडिया' अभियान चलाने की बात कहकर इस राष्ट्र की सबसे घातक बुराई की ओर जागृति का शंखनाद किया है। उन्होंने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे देश के युवा गुटका, चरस, गांजा, अफीम, स्मैक, शराब और भांग आदि के नशे में पड़ कर बर्बाद हो रहे हैं। इस कारण से वे आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से विकलांगता की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

विशेषतः पंजाब के युवा नशे की अंधी गलियों में धंसते जा रहे हैं, वे अपनी अमूल्य देह में बीमार फेफड़े और जिगर सहित अनेक जानलेवा बीमारियां लिए एक जिन्दा लाश बने जी रहे हैं पौरुषहीन भीड़ का अंग बन कर। नशे के ग्लैमर की चकाचौंध ने चिन्ताजनक स्थितियां खड़ी कर दी है। पाकिस्तान नशे के आतंक से अपने मनसूंबों को पूरा कर रहा है। चिकित्सकीय आधार पर देखें तो अफीम, हेरोइन, चरस, कोकीन, तथा स्मैक जैसे मादक पदार्थों से व्यक्ति वास्तव में अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है एवं पागल तथा सुप्तावस्था में हो जाता है।

ये ऐसे उत्तेजना लाने वाले पदार्थ हैं, जिनकी लत के प्रभाव में व्यक्ति अपराध तक कर बैठता है। मामला सिर्फ स्वास्थ्य से नहीं अपितु अपराध से भी जुड़ा हुआ है। कहा भी गया है कि जीवन अनमोल है। नशे के सेवन से यह अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है या अपराध की अंधी गलियों में धंसता चला जाता है, पाकिस्तान युवाओं को निस्तेज करके एक नये तरीके के आतंकवाद को अंजाम दे रहा है।

बम धमकियों के कारण बाधित होती उड़ानें

अक्सर दो तरह की धमकियां दी जाती हैं। एक धमकी ऐसी होती है जिसमे किसी विशेष फ्लाइट संख्या का नाम दिया गया हो। दुसरा सामान्य तरीके से जैसे कहा जाए कि एयर इंडिया की पांच उड़ानों मे दम है। एक अधिकारी ने बताया कि जोखिम आकलन किया जाता है। खतरे का स्रोत देखा जाता है, चाहे वह एक्स (पूर्व ट्विटर), वॉट्सऐप, कॉल या ईमेल के माध्यम से आया हो। इसका मूल्यांकन मैट्रिक्स के आधार पर कोड तय किया जाता है। इसमें लाल (बहुत गंभीर), एम्बर (गंभीर) या हरा (फर्जी कॉल की सबसे अधिक संभावना) ।ऊपरी तौर पर ऐसे घटनाक्रम का आर्थिक नुकसान विमानन कंपनियों को हो रहा है, लेकिन बाद में उसका असर आखिर यात्रियों की जेब पर ही पड़ना स्वाभाविक है। कुल मिलाकर नुकसान देश का ही है। बम धमकियों के कारण उड़ाने बाधित हो रही है और वित्तीय घाटा बढ़ रहा है, ऐसे में भारतीय विमानन क्षेत्र को और अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जब तक कि सख्त निवारक कार्रवाई नहीं की जाती। वर्तमान में, फर्जी बम धमकियों के खिलाफ कार्रवाई मौजूदा आपराधिक कानूनों के तहत पुलिस द्वारा की जाती है। हालांकि, सरकार ऐसी घटनाओं को रोकने और विमानन उद्योग पर बढ़ते वित्तीय और परिचालन तनाव को रोकने के लिए सख्त उपायों पर विचार कर रही है। सरकार की तरफ से इस दिशा में सख्त नियम बनाने का काम चल रहा है। नागरिक उड्डयन मंत्री के राममोहन नायडू ने कहा है कि सरकार इस मुद्दे को और अधिक प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए नागरिक उड्डयन नियमों में संशोधन पर काम कर रही है। नायडू ने कहा, हम इन धमकियों को गंभीरता से ले रहे हैं और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेंगे। मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय नियमों की समीक्षा कर रहा है और फर्जी वन धमकियों के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों को नो-फ्लाई लिस्ट में डालने पर विचार कर रहा है, साथ ही जरूरत पड़ने पर विधायी संशोधनों पर भी विचार कर रहा है। कमोबेश ऐसी ही स्थिति ट्रेनों के मार्ग पर लगातार अवरोधक लगाने की घटनाओं से भी सामने आई है। जिसके सामने तंत्र लाचार नजर आता है। सरकार को समझना चाहिए कि ऐसे अफरा-तफरी के माहौल से विमानन कंपनियों की सेवा व सुरक्षा व्यवस्था के प्रति लोगों में अविश्वास पैदा होता है। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था इतनी चाक चौबंद हो कि ऐसी फर्जी धमकियों पर विचलित होने के बजाय उड़ानों का संचालन सहज ढंग से हो सके।

कहीं न कहीं हमारे तंत्र में आत्मविश्वास की कमी की वजह से भी ऐसी अफरा-तफरी मचती है। हमारा सुरक्षा तंत्र इतना लचर भी नहीं होना चाहिए कि एक फर्जी धमकी से हम भयभीत हो जाएं। किसी भी स्तर पर लापरवाही की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। देखना यह भी जरूरी है कि फर्जी धमकी देने वाले सुरक्षित कैसे बच रहे है। लगातार विस्तार पाती डिजिटल दुनिया में होने वाले साइबर अपराधों की तह तक पहुंचने वाला



हमारा तंत्र कमजोर क्यों नजर आ रहा है। क्यों हम धमकी भेजने वाले के ई-मेल पते को ट्रेस नहीं कर पा रहे हैं। आधुनिक तकनीक से डिजिटल निगरानी को वक्त की जरूरतों के हिसाब से तैयार किया जाना चाहिए।

हाल के दिनों में भारतीय उड़ानों में बम होने की झूठी कॉल खूब मिल रही हैं, जिससे एयरलाइंस को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। विमान कंपनियों और सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि धमकियों के बीच इन मामलों में एक नया चलन भी सामने आया है। पहले एक ही हैंडल से कई उड़ानों से जुड़ी धमकियां दी जाती थीं, लेकिन अब अलग-अलग हैंडल से अलग-अलग एयरलाइंस की उड़ानों के बारे में धमकियां दी जा रही हैं।

यह सवाल हर भारतीय को परेशान कर रहा है। कि भारतीय एयरलाइंस के जहाजों को लेकर दी जा रही धमकियों की यह बाढ सी क्यों आ रही है? आखिर फ्लाइट्स को डिजिटली धमकी देने वालों तक हमारा खुफिया तंत्र क्यों नहीं पहुंच पा रहा है? बार-बार मिलने वाली फर्जी धमकियों से जहां इन विमानन कंपनियों को आर्थिक नुकसान हो रहा है, वहीं यात्रियों को उड़ान में देरी व सुरक्षा जांच के चलते भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। विमानन कंपनियों के आर्थिक नुकसान व यात्रियों पर मानसिक दबाव के मद्देनजर जो तत्परता सरकार की तरफ से दिखाई जानी चाहिए थी, वो नजर नहीं आ रही है।

इस घटनाक्रम से आम यात्रियों में हवाई यात्रा को लेकर असुरक्षा बोध पैदा हो रहा है। हालांकि, अधिकांश धमकियां फर्जी ही निकली हैं, लेकिन इन अपराधियों तक पहुंचना जरूरी है। चिंता यह भी कि यदि भविष्य में किसी आतंकी साजिश के प्रति कोई वास्तविक सचेतक सूचना भी आएगी तो संभव है, उसे गंभीरता से न लिया जाए। अतः हर स्तर पर सावधानी बरती जानी जरूरी है वहाँ ऐसी हरकत करने वाले असामाजिक तत्वों के खिलाफ सख्त कारवाई करने की जरूरत है। इस तरह लगातार मिल रही धमकियों की वजह से निरंतर फ्लाइट्स देर से उड़ान भर रही हैं, यात्री और उनके परिजन परेशान हो रहे हैं। विमानन कंपनियों को अपनी फ्लाइट कैंसिल करनी पड़ रही हैं।

टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, चम की एक झुठी धमकी से एयरलाइन पानी विमानन कंपनी को 3 करोड़ रुपये से ज्यादा का नुकसान हो सकता है। दरअसल, किसी विमान में बम होने की सूचना मिलने पर फ्लाइट को अपने निर्धारित एयरपोर्ट के बजाय नजदीकी हवाई अड्डे पर उत्तारा जाता है। इससे तेल की खपत तो ज्यादा होती ही है, विमान की जांच करने, यात्रियों को होटलों में ठहराने और उन्हें उनके डेस्टिनेशन तक पहुंचाने के लिए विमान की व्यवस्था भी करनी पड़ती है। इन सब पर करीब तीन करोड़ रुपये तक खर्च हो जाते हैं। अगर इंटरनेशनल फ्लाइट है तो रूट पर किसी अन्य देश से समन्वय बनाने और लैंडिंग में होने वाली देरी और भारी पड़ती है।

इसे यूं समझें कि 14 अक्टूबर को एयर इंडिया की बोइंग 777 उड़ान मुंबई से न्यूयॉर्क के लिए रवाना हुई थी। उड़ान के कुछ समय बाद ही एयरलाइन को बम की धमकी मिली, जिसके चलते विमान को दिल्ली में इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। उड़ान के दौरान विमान का वजन लगभग 340-350 टन था, लेकिन लैंडिंग के लिए इसे 250 टन तक कम करना जरूरी था। इसके लिए विमान से 100 टन तेल को उड़ान भरने के सिर्फ 2 घंटे बाद ही बाहर फेंकना पड़ा। इस तेल की कीमत ही लगभग 1 करोड़ रुपये थी तेल की बर्बादी के साथ ही, दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग के चार्ज, यात्रियों और क्रू के ठहरने का खर्च, छूटी हुई कनेक्टिंग फ्लाइट्स का मुआवजा, विमान की जांच और नए फ्लाइट क्रू की व्यवस्था जैसी अतिरिक्त लागत भी जुड़ गई। इस पूरी प्रक्रिया से एक उड़ान को 3 करोड़ रुपये से भी अधिक का नुकसान हुआ। एक अन्य घटना में एयर इंडिया की एक फ्लाइट को बम की धमकी के कारण कनाडा के दूरस्थ इलाके इक्वाइट में लैंड करना पड़ा। इस कारण विमान को तीन दिनों से अधिक समय तक ग्राउंडेड रखा गया, जिससे एयरलाइन को 15-20 करोड़ रुपये तक का नुकसान हुआ। कई यात्री विमान में देरी होने पर अपनी कनेक्टिंग फ्लाइट मिस कर जाते हैं तो वे एयरलाइन को अदालत में घसीटने की धमकी देते हैं। ऐसे में हजांना देकर समझौता करना होता है।

वक्फ संपत्तियों का दुरुपयोग रुके

हाल के समय में वक्फ बोर्डों की मनमानी के कई उदाहरण आ चुके हैं। ये दक्षिण भारत से लेकर उत्तर भारत में देखने को मिले हैं। इसके बाद भी वक्फ अधिनियम में संशोधन की पहल का विरोध हो रहा है। यह विरोध मुस्लिम समुदाय के मजहबी नेता तो कर ही रहे हैं, अधिसंख्य विपक्षी दलों के नेता भी कर रहे हैं। विपक्षी नेताओं की मानें तो मौजूदा वक्फ अधिनियम में कहीं कोई खामी नहीं और इसलिए उसमें किसी तरह के संशोधन की आवश्यकता नहीं। यदि वास्तव में ऐसा ही है तो क्या वे वक्फ अधिनियम की तर्ज पर किसी सनातन भू अधिनियम की पैरवी करेंगे, ताकि हिंदू समुदाय भी अपने मठ, मंदिरों और उनकी जमीनों की रक्षा कर सके और उनका नियमन कर सके? न्याय का तकाजा तो यह कहता है कि सभी समुदायों के लिए वैसा ही अधिनियम होना चाहिए, जैसा मुस्लिम समाज के लिए वक्फ अधिनियम है। केंद्र सरकार की ओर से मौजूदा वक्फ कानून में संशोधन की जो पहल की जा रही है और जिस पर संसद की संयुक्त समिति यानी जेपीसी विचार कर रही है, उसके कामकाज से विपक्षी सांसद बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं। इसी कारण जेपीसी की बैठकों में हंगामा हो रहा है। जेपीसी अध्यक्ष के रवैये से विपक्षी सदस्य इतने खफा हैं कि वे उसका बहिष्कार करने की धमकी दे रहे हैं। पता नहीं उनकी आपत्ति क्या है, लेकिन यदि वे कर्नाटक के विजयपुरा जिले का मामला सामने आने के बाद भी यह चाहते हैं कि वक्फ कानून में किसी तरह का संशोधन-परिवर्तन न हो तो यह स्वीकार नहीं हो सकता। देश जानबूझकर जीती मक्खी नहीं निगल सकता। इससे इन्कार करना खुद को और साथ ही देश को जानबूझकर धोखा देना है कि मौजूदा वक्फ कानून में किसी बदलाव की जरूरत नहीं। इस कानून में ऐसे बदलाव किए ही जाने चाहिए, जिससे एक ओर जहां वक्फ बोर्ड मनमानी न कर सकें, वहीं दूसरी ओर वक्फ संपत्तियों का दुरुपयोग थमे। पता नहीं ट्रेन और बस की सीट पर रुमाल, बैग आदि रखकर उस पर अपना दावा करने का चलन आज भी है या नहीं, लेकिन यह पता चल गया कि वक्फ बोर्ड आज भी ऐसा कर रहे हैं। वे जिस जमीन-संपत्ति को चाहते हैं, उस पर नोटिस भेजकर अपना दावा जता देते हैं। इसका ताजा प्रमाण तब फिर मिला, जब कर्नाटक के विजयपुरा, कलबुर्गी, बीदर आदि जिलों के किसानों को नोटिस भेजकर कहा गया कि उनकी जमीन अब वक्फ की संपत्ति है। नोटिस भेजे जाने के साथ ही जब किसानों की जमीन का मालिकाना हक बदलने का काम शुरू होने की खबर आई तो उनमें हड़कंप मचा। उन्होंने पक्ष-विपक्ष के नेताओं से गुहार लगानी शुरू की और इस तरह वक्फ बोर्ड की मनमानी का मामला सामने आया। यह मनमानी किस हद तक थी, इसका पता इससे चलता है कि अकेले विजयपुरा जिले के होनावदा गांव के किसानों को नोटिस भेजकर उनकी 1,500 एकड़ जमीन को वक्फ संपत्ति बता दिया गया।

छठ कोकिला शारदा सिन्हा : लम्बे समय लोगों की पसंद रहेंगी

शारदा सिन्हा को राजनीतिके ऑफर भी बहुतेरे मिले। शायद ही कोई ऐसा छोटा-बड़ा सियासी दल हो, जिसने उनकोअपने यहां आने का निमंत्रण न दिया हो ?लेकिन वे सभी ऑफरों को सहर्ष ठुकराती गईं। कईमर्तबा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा भी कि उन्हें राजनीति बिलकुल पसंद नहीं। समाज ने उन्हें छठ कोकिला की उपाधि दे रखी थी जिसे वह सबसे बड़ा सम्मान ताउम्र मानती रहीं। छठ पर अपनी मीठी आवाज से संगीत प्रेमियों की जुबान पर ऐसी चढ़ीं कि कभी उतर नहीं पाईं।

शारदा सिन्हा के गीत केवल डूबते-उगते सूर्य की पूजा के पर्व के गीत तो गाते हैं ही उन गीतों के पास बैठकर हमारे जीवन का अंधेरा भी दूर होता है।

सघन चिकित्सा कक्ष की दीवारों को वेधकर उन पंक्तियों की गूंज तो नहीं जा रही होगी जो देश-दुनिया में छठ पर बज रहे हैं, लेकिन इन गीतों का उनकी गायिका के साथ एक अदृश्य रिश्ता अवश्य ही जुड़ रहा होगा। छठकी सबसे लोकप्रिय गायिका शारदा सिन्हा के जीवन का सूर्य तो हमेशा के लिए डूब रहा था लेकिन छठ की गवाही भी थी। कि लोकसंगीत के आकाश पर इस सूर्य की चमक कभी कम नहीं होगी।

छठ के अपने गीतों के बीच विख्यात गायिका शारदा सिन्हा अपनी अंतिम यात्राको निकल पड़ीं, हालांकि कोई भी अभी इसके लिए तैयार नहीं था। वे जो अपने गीतों के माध्यम से किसी पारिवारिक सदस्य की तरह हमारे बीच हमेशा उपस्थित रहीं, हमारे पर्व-त्योहार, सुख-दुःख में शामिल रहीं और आगे भी बरसों-बरस तक भोजपुरी समाज में उनके बिना कितना विपन्न लगेगा। स्वयं शारदा सिन्हा ने एक बातचीत में हंसते हुए कहा था कि लोग मुझे बताते हैं कि मेरे बगैर मेरे गीतों के बगैर उन्हें छठ अधूरा-सा लगता है। वे कहते हैं कि ज हम छठ के समान लेने जाते हैं बाजार तो बहुत सारे सामानों के साथ अगर शारदा सिन्हा के छठ के गीत नहीं लेते तो एक कमी सी लगती है। मेरे पास बहुत सारे फोन आते हैं, दूर-दराज के देशों से। वे कहते हैं कि हम बहुत दूर हैं लेकिन आपके गीतों को सुनने से लगता है कि जैसे हम भारत में हों। वे वहां से जाने वाले लोगों से भी मेरे गीत मंगवाते हैं और अपने पास रखते हैं। बहुत सारे वीडियो से मुझे यह पता चलता है कि जो विदेश में हैं वे छठ की पूजा के समय भी मेरे गीत बजाकर पूजा करते हैं।

लेकिन जमाना कितना बदला, बोल्ड और बिंदास हुआ, भोजपुरी को व्यवसायिक फायदे का चस्का



लगा, अश्लील, फूहड़, और द्वि-अर्थी चाशनी गीतों में मिलाई गई, शारदा सिन्हा के निश्चय को कोई डिगा नहीं सका। उन्होंने अपने गीतों में मर्यादा से कोई समझौता नहीं किया। भोजपुरी पर कीचड़ उछाले जाते रहे लेकिन शारदा सिन्हा का आंचल कभी मैला नहीं हुआ। उन्होंने फिल्में चुनीं तो राजश्री बैनर की और जब कभी किसी और के लिए भी गाया तो शालीनता से समझौता नहीं किया, हिंसा और गालियों से भरी गैंग्स ऑफ वासेपुर में भी बेतार-बिजली ही गाकर लौट आईं। शारदा सिन्हा ने एक बार बताया कि छठ के गीतों को पहले-पहल रिकार्ड कराने जब वे गईं तो एचएमवी वाले तैयार नहीं थे। वे इन गीतों को नहीं समझते थे। वे इन्हें नहीं करना चाहते थे क्योंकि उनके अनुसार, इनकी भाषा बहुत कठिन थी। 1978-79 में गाया था उन्होंने- 'अंगना में पोखरी खनाय...'। जब यह आया तो बहुत ही लोकप्रिय हुआ। 2016 में एक बार फिर कीर्तिमान बना जब उन्होंने 'पहिले-पहल...' गाया। छठ की एक घटना के बारे में उन्होने बताया कि एक बार की बात है कि पटना में बहुत इच्छा हुई कि छठ करूं। सीधा पल्ला करके, सिर पर आंचल लेकर जाने की सोची जिससे लोग पहचान न सके। कुछ मीडिया वाले भी साथ हो गये, बोले कि हम आपको ले चलेंगे। इसी दौरान एक बुजुर्ग महिला मुझे दिखीं जो दंडवत प्रणाम करते हुए छठ की पूजा को जा रही थीं। मेरी इच्छा उन्हें प्रणाम करने की हुई लेकिन मैं जैसे ही उन्हें प्रणाम करने को झकी, लोगों ने मुझे पहचान लिया। फिर तो सैकड़ों लोग मुझे ही प्रणाम करने लगे। मैं बुरी तरह घिर गई, बहुत घबरा गई। किसी प्रकार पुलिसआदि की मदद से मुझे निकाला जा सका। उसके बाद में कभी घाट पर नहीं गई। वह बताती हैं कि छठ एक ऐसा पर्व है जिसमें उगते सूर्य के साथ ही डूबते सूर्य की भी पूजा होती है। ऐसा हमारे यहां ही होता है। उगते सूर्य को तो दुनिया प्रणाम करती है, इसको लेकर मुहावरा भी है लेकिन डूबते सूर्य की पूजा हमारी परंपरा में है। अंधकार के बाद फिर प्रकाश आता है। उजाले की प्रकाश की प्रतयाशा उसकी उम्मीद में अंधकार को भी प्रणाम करते हैं। डूबते सूर्य को भी प्रणाम करते हैं कि आपको फिर उगकर हमें प्रकाशित करना है। यह हमारी आशा है, हमारे मन का विश्वास है कि हर अंधकार के बाद प्रकाश को आना है। सूर्य को डुबाना है लेकिन अगले दिन उगकर हमें फिर प्रकाशित करना है।

समय बदलते रहे ,बच्चे बड़े और बड़े बूढ़े होते गए, नए-नए गैजेट्स आते रहे, संगीत उद्योग करवट लेता रहा, बहुत सारे गायक-गायिकाओं के गीत गूंजते रहे लेकिन शारदा सिन्हा लंबे समय तक लोगों की पसंद बनी रहीं। उनके नाम को सम्मान के साथ लिया और सुना जाता रहा था तो इसकी कई वजहें भी थीं। संगीत की विभिन्न विधाओं की जानकारी होने, संगीत की शिक्षिका होने के बावजूद उन्होंने लोक संगीत की माटी से जुडे उसके सोंधेपन, उसकी अनगढ़ता, उसके खुरदुरे शिल्प को बड़े जतन से बचाए रखा। यही कारणा था कि जब वे गातीं तो लोक उससे जुड़ जाता था, अपने बीच का लगता रहा। वे सालों-साल घर-घर में पटना से वैदा बुलाती रहीं, बंगाल से सिंदूर मंगवाती रहीं, तनी ताक तक द बलमुवा की मिननत करती रहीं, लोग थे कि इस पुकार में अपने स्वर मिलाते रहे, मुस्कुराते और लजाते हुए। जगदंबा घर में दियरा, शिवमानत नाहीं, जैसी भक्ति रचनाएं वर्षों तक लोगों की प्रार्थनाओं में शामिल रहीं।

शारदा सिन्हा ने केकरा से कहां मिले... से जो लोकप्रियता पाई थी, वह उनकी लंबी संगीत यात्रा में कभी कम होती नहीं दिखी। वे हर घर-परिवार में कई-कई पीढ़ियों तक शामिल रहीं, उसके सुख-दुख को स्वर देती रहीं। भोजपुरी समाज की कल्पना शारदा सिन्हा के बीच अधूरी-सी लगती है। उनके गीतों ने न सिर्फ लोकप्रियता की ऊंचाइयों को छुआ, बल्कि उस लोकप्रियता को कायम भी रखा।

भारतीयों का पटाखा प्रेम

एक और दिवाली बीत गई। एक बार और दिल्ली एनसीआर स्मॉग की चादर से ढक गया। पटाखों पर बैन सिर्फ कागज पर रहा। लोगों ने जितनी मांग की उतने पटाखे दुकानों में बिके, लोगों ने खरीदे और मन भर कर चलाए यानी हर साल की तरह इस साल भी साबित हो गया कि स्वास्थ्य पर प्रदूषण के चिंताजनक असर के बारे में लोगों में जागरूकता फैलाने की कोशिशों में अभी भी भारी सुधार की गुंजाइश है। इसकी किसी को चिन्ता नहीं है, उल्टे हिन्दू त्योहार पर ही पटाखा पर प्रतिबंध क्यों का सवाल उठाने वाले हिन्दुत्व की पताका उठाने कले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मोहन भागवत ने इसे हिन्दू मुसलमान और ईसाई के त्योहारों के मुकाबले पर खड़ा कर दिया।

दिवाली बाद सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार और दिल्ली पुलिस आयुक्त को नोटिस जारी किया है कि शहर में पटाखों पर लगे प्रतिबंध को लागू करने के लिए क्या कदम उठाए गए। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने अखबार में प्रकाशित उन खबरों का हवाला दिया, जिनमें पटाखों पर प्रतिबंध से जुड़े अदालती आदेशों के उल्लंघन का जिक्र किया गया है। शीर्ष अदालत ने पंजाब, हरियाणा की राज्य सरकारों से पराली को लेकर भी जवाब मांगा है।

डॉक्टर कह-कह कर थक गए कि प्रदूषण आपको सिर्फ थोड़ी सी खांसी नहीं देता बल्कि सांस की बीमारियां देकर जान तक ले लेता है। एजेंसियां आंकड़े दे-देकर थक गई कि प्रदूषण से मरने वालों की संख्या हर साल बढ़ती जा रही है। लेकिन पटाखों के प्रति लोगों का आकर्षण कम होने का नाम नहीं ले रहा है। दिल्ली पुलिस ने दिवाली से पहले करीब दो टन पटाखे जस्त किए थे लेकिन पटाखे जलाने वालों को कोई रोक नहीं पाया। जिसका असर अगली सुबह ही देखने को मिल गया। वायु की गुणवत्ता पर नजर रखने वाली





कंपनी आईक्यूएयर के मुताबिक एक नवंबर की सुबह हवा में पीएम2.5 के कणों की मात्रा 345 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर से भी ज्यादा हो गई, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से पांच या दस नहीं बल्कि 23 गुना ज्यादा है।

'लांसेट प्लेनेटरी हेल्थ' पत्रिका में प्रकाशित एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2008 - 2019 के बीच नई दिल्ली में हर साल लगभग 12 हजार लोगों की जान वायु प्रदूषण के कारण गई। यह शहर में हुई कुल मौतों का 11.5 प्रतिशत है. अमेरिका के हेल्थ इफेक्ट्स इं-स्टिट्यूट' और संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनिसेफ की एक रिपोर्ट कहती है कि 2021 में वायु प्रदूषण की वजह से भारत में 21 लाख लोग मारे गए बच्चों की मौत में तो पूरी दुनिया में भारत सबसे आगे रहा। उसी साल वायु प्रदूषण की वजह से देश में पांच साल से कम उम्र के 1,69,400 बच्चों की जान चली गई। लेकिन नई दिल्ली में लोग या तो इन सभी आंकड़ों से अनजान हैं या इन पर विश्वास नहीं करते। क्योंकि इस प्रकार की मौतें तत्काल नहीं बल्कि धीरे-धीरे दूसरी बीमारियों की शक्ल में आकर होती है। इस दिवाली एक बार फिर नई दिल्ली ने दुनिया के सबसे प्रदूषित शहर होने का खिताब अपने नाम कर लिया। लाहौर को भी पीछे छोड़ दिया। अब फिर से अस्पतालों के बाहर सांस लेने में तकलीफ की शिकायत लिए बड़ों, बूढ़ों और बच्चों की कतार लग गई, लेकिन जिन्हें पटाखे जलाने हैं उन्हें शायद इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता। सबके पास दलीलें भी तैयार हैं कि पटाखों के बिना दिवाली सूनी लगती है। गाड़ियों का धुंआ तो सालों भर रहता ही है, गाड़ियों पर बैन क्यों नहीं लगाते से लेकर बैन लगाने के लिए सबको हिंदुओं के त्यौहार से मिलते हैं, दूसरे धर्मों के त्योहारों पर तो कुछ नहीं कहते तक, हर तरह के जवाब हाजिर हैं। शायद समय आ गया है एक नए अध्ययन का एक सर्वे कर यह पता लगाना चाहिए कि आखिर पटाखों के प्रति इस प्रेम का मनोवैज्ञानिक स्पष्ठकरण क्या है। आखिर वो क्या बात है जिसकी वजह से लोग पर्यावरण का नुक-सान होने के अलावा बीमारी और मौत की चेतावनी से भी नहीं डरते और पटाखे जलाए बिना नहीं मानते।

शारदा सिन्हा का नश्वर दुनिया को अलविदा कहना

संपूर्ण मैथिली-भोजपुरी समाज के अतिरिक्त समूचे संसार के लिए शारदा सिन्हा का विसर्जन गहरा आघात है। पूर्वांचल की बगिया से कोयल के उड़ जाने जैसा स्वर कोकिला शारदा सिन्हा का नश्वर दुनिया को अलविदा कह देना। संगीत की दुनिया में शारदा का न रहना, कोयल बिना न सोभे बगिया जैसा मानाजाएगा। आठ भाइयों के बाद वह जन्मीं। जिनका जन्म 1 अक्टूबर 1952 को हुआ था। जन्म के दो वर्ष के भीतर ही उन्होंने गुनगुनाना आरंभ कर दिया था। 15 वर्ष की आयु में उनकी खनकती आवाज के लोग दीवाने हो गए थे।जब उनकी शादी हुई तो सास को कई पसंद नहीं था कि उनकी बहू गाना-बाना गाए। लेकिन नियति को शायद यही मंजूर था। भारी विरोध के बाद भी उन्होंने गायन जारी रखा। जब देश-विदेश से प्रशंसाएं मिलने लगीं तो सास ने भी कह दिया बहू तुम अच्छा गाती हो, गाती रहो। जब लीन होकर पूरे मदहोश में वह गाती थीं तो लगता था तो उनके कंठ में सरस्वती बैठी हुई हैं। शारदा सिन्हा के दो बच्चे हैं जिनमें एक बेटा अंशुमन सिन्हा और एक बेटी वंदना।

बतादें कि शारदा सिन्हा के पति ब्रज किशोर सिन्हा का निधन भी इसी वर्ष हुआ था जिसके बाद शारदा सिन्हा पूरी तरह टूट गई थीं। सूच्य है कि शारदा सिन्हा ने छठगीतों के अलावा फिल्म मैने प्यार किया में कहे तोसे ये तोहरी सजनिया गीत को भी गाया साथ ही अनेक भाषाओं में भी हिट गाने गाये।

पोषक भोजन की कमी बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में अधिक

कमजोर बच्चों की समस्या पूरे देश के बच्चों में है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के हालिया सर्वे से यह बात उजागर हुई है। सर्वे के मुताबिक पोषण के स्तर मे सुधार के बावजूद भारत में 6 से 23 माह तक की उम्र के 77 प्रतिशत बच्चों को उचित पोषक तत्वों से भरपूर खुराक नहीं मिलती। सबसे ज्यादा खराब स्थिति उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और गुजरात की है जहां 80 प्रतिशत से भी ज्यादा बच्चे उचित पोषक खुराक की कमी से ग्रस्त पाए गए हैं। सर्वे में भारत के 707 जिलों को शामिल किया गया था। जिनमें केवल दक्षिण, पूर्व और पूर्वोत्तर भारत के 95 जिलो की स्थिति थोड़ी बेहतर पाई गई। यहां 60 प्रतिशत या उससे कम बच्चे पोषक खुराक की कमी से ग्रस्त मिले जबकि बाकी जिलों में 70 प्रतिशत या उससे अधिक बच्चों में यह समस्या पाई गई। उत्तर प्रदेश में 86.1 प्रतिशत, राजस्थान में 85.1 प्रतिशत गुजरात में 84 प्रतिशत महाराष्ट्र में 87.9 प्रतिशत तथा मध्य प्रदेश में 81.6 प्रतिशत बच्चे पोषक खुराक की कमी से ग्रस्त पाए गए हैं।

डब्लूएचओ के सर्वे में कहा गया है कि पोषक भोजन की कमी बालकों के मुकाबले बालिकाओं में और खासकर समाज के पिछड़े वंचित तबकों में ज्यादा है। ये वे परिवार है जिन्हें आंगनवाड़ी केंद्रों के जरिए भी भोजन उपलब्ध नहीं हो पता और जिनकी पैदाईश कम उम्र की शादीशुदा महिलाओं से हुई है। डब्लूएचओ और यूनिसेफ दोनों ने मिलकर बच्चों के लिए आवश्यक न्यूनतम भोज्य विविधता (एमडीडी) के पैमाने ताय करते हुए सूचकांक तैयार किए हैं। जिनके आधार पर पता किया जा सकता है कि किस जिले, प्रदेश या देश के बच्चों में पोषण की स्थिति कैसी है। सर्वोच्च सूचकांक हासिल करने के लिए बच्चों को किस तरह का दूध, खुराक, नाश्ता या भोजन दिया जाना चाहिए, दोनों संस्थाओं ने इसके ब्यौरे वाला चार्ट भी तैयार किया है। जिसके मुताबिक उचित शारीरिक एवं मानसिक विकास (वजन, लंबाई, बुद्धि, मेधा, स्मरण शक्ति आदि) के लिए बच्चों को जन्म के 6 से 23 माह के दौरान आठ तरह के विविध खाद्य पदार्थों में से कम से कम पांच तरह के खाद्य पदार्थ खिलाए जाने चाहिए। इनमें स्तनपान, अनाज, कंद-मूल, दालें और नट, दूध, दही, छाछ, पनीर और घी अंडा व मांस, विटामिन से भरपूर फल एवं सब्जियां तथा सामान्य फल एवं सब्जियां शामिल हैं।



भारत में बच्चों के पोषण की स्थिति को लेकर समय-समय पर राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन सामने आते रहते हैं। जिनमें कमोबेश इसी तरह की अथवा इससे भी खराब स्थिति बयान की जाती है। मसलन, कुछ समय पहले एक रिपोर्ट जमा नेटवर्क की ओर से प्रकाशित की गई थी। जिसमें कहा गया कि भारत में 19.3 प्रतिशत बच्चे भुखमरी का शिकार हैं। रिपोर्ट ने इस मामले में भारत को गिनी और माली जैसे सबसे गरीब मुल्कों के बाद तीसरी श्रेणी में रख दिया। इसमें भी यूपी, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्य प्रदेश की हालत सबसे खराब बताई गई थी। यह अलग बात है कि भारत सरकार ने अपने सर्वेक्षणों के आधार पर इन रिपोर्टों को हमेशा खारिज किया है। सरकार के नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-5 के अनुसार भारतीय बच्चों में न्यूनतम भोज्य विविधता (मिनिमम डायटरी डायवर्सिटी एमडीडी) की दर 87.4 प्रतिशत से गिरकर 75 प्रतिशत से कुछ अधिक पर आ गई है। ऐसा अंडों, कंद-मूल तथा विटामिन-ए युक्त फलों एवं सब्जियों की खुराक बढ़ने से संभव हुआ है।

लेकिन इसके बावजूद नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे 5 बच्चों में कुपोषण की गंभीर स्थिति को स्वीकार करता है। इसके अनुसार 17 राज्यों में से 11 में 5 वर्ष तक की उम्र के मुकाबले बच्चों की लंबाई कम है। जबकि 17 में से 13 राज्यों में बच्चों का वजन उम्र के लिहाज से कम है। ये बच्चे जल्दी-जल्दी बीमार होते रहते हैं। बिहार और गुजरात में तो 40 प्रतिशत बच्चे कम वजन के पाए गए हैं। हालांकि सर्वे के मुताबिक कुल मिलाकर ठिगने बच्चों का प्रतिशत कम (36 प्रतिशत से घटकर 36 प्रतिशत) हुआ है। यह सुधार खासकर हरियाणा, उत्तराखंड, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, सिक्किम, झारखंड, मध्य प्रदेश, मणिपुर, छत्तीसगढ़ एवं बिहार में दिखाई दिया है। इसके अलावा लगभग सभी राज्यों में शिशु मृत्यु दर में कमी आई है। इस मामले में असम में सबसे ज्यादा सुधार (एक हजार शिशुओं में 48 की जगह केवल 32 की मृत्यु) हुआ है। जबकि बिहार में शिशु मृत्यु दर अब भी ऊंची (एक हजार शिशुओं में 47 की मृत्यु) बनी हुई है। ऐसा मुख्यतः अस्पतालों में प्रसव सुविधाएं बढ़ने तथा टीकाकरण की कामयाबी से हुआ है।

नारी अस्मिता को लेकर पुन: चुनावी घमासान

मुट्ठी भर महिलाओं के आगे बढ़ने से सम्पूर्ण महिला समाज का उत्थान नहीं होगा। महिला समानता और सुर-क्षा आज सबसे अहम मुद्दा है, जिसे किसी भी हालत में नकारा नहीं जा सकता। सच तो यह है कि एक छोटे से गांव से देश की राजधानी तक महिला सुरक्षित नहीं है। अंधेरा होते-होते महिला प्रगति और विकास की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुँचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी समानता और सुरक्षा की बात पर गहराई से मंथन करें।



चुनावों के दौरान नारी की अस्मिता को लेकर एक बार फिर मचा हुआ है और एक दूसरे पर आरोपों की झड़ी लगायी जाती है। महाराष्ट्र के एक बड़े नेताजी ने चुनाव लड़ रही एक महिला नेता को इम्पोर्टेड माल से विषयाखण्ड में एक मंत्रीजी ने एक महिला नेताको रिजेक्टेड घोषित कर दिया। यह तो एक बानगी है। ऐसी घटनाएं हमारे देश में आये दिन देखने और सुनने को मिल रही है। मौका मिलते ही हम महिलाओं को दुत्कारते देर नहीं करते। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर सरेआम महिला नेताओं के शरीर और चरित्र पर जुबानी हमले होते रहते है। अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। यहाँ किसी का नाम लिखने की जरूरत नहीं है।

ऐसे कार्यों में पक्ष और विपक्ष देनों के नेता समान रूप से जिम्मेदर है। हमारी कथनी और करनी में कितना अंतर है, यह साफ एष्टिगोचर होता है। बात बात पर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार का रोना रोने वाली महिला नेता ऐसी घटनाओं पर चुप्पी साध लेती है। वे इस दौरान पार्टी लाइन पर चलती है और उन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं है कि उनकी के नेताओं की महिलाओं के बारे में क्या सोच है। आ तब होता है जब महिला नेता ही दूसरे पक्ष की महिला नेता पर अशोभनीय टिप्पणियां करती है।

हमारे देश में शरी पूजने का हम गर्व के साथ स्मरण करते हैं। भारतीय संस्कृति सदैव स्यन्ते रमन्ते 'देवता' सिद्धान्त का अनमी है। भारत में सर्वदा नारी को अत्यन्त उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया तथा उसे लक्ष्मी, देवी साम्राजी, महिषी आदि सम्मानसूचक नामों से अलंकृत किया जाता था। मगर वह भी सच है मौका मिलते ही हम नारी की अस्मिता से खिलवाड़ करने से नहीं चूकते है। चुनाव आते ही हमारे देश में तरह तरह के बोल सुनने और देखने को मिलते है हम बात कर रहे है महाराष्ट्र और झारखण्ड चुनावों की।

कहने का तात्पर्य है महिला ही महिला की दुश्मन बन जाती है। एक तरफ सिवासी पार्टियां अपने चुनावी घोषणा पत्रों और गाटि में महिला वोटरों को लुभाने के लिए तरह तरह के प्रलोभन देते है वहीं चुनाव लड़ रही महिलाओं के चीरहरण में जरा भी विलम्ब नहीं करती। देश का दुर्भाग्य है महिलाओं पर अशोभनीय टिप्पणी करने वाले नेता जनमत को देखते ही माफी मांगने से गुरेज नहीं करते। मगर आज महिलाओं के समक्ष जो वास्तविक चुनौतियां हैं उस पर गंभीरता से मंथन करने की जरूरत है। देशभर में इन दिनों महिलाओं पर अत्याचार, छेड़खानी और दुष्कर्म की वारदातों से समाचार पत्रों के पन्ने रंग होते है। दुनियां चाहे कितनी ही तरक्की करले मगर महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार आज में जारी है। हम अपने व्यवहार और आदतों को बदलने को तैयार नहीं है। हम सुधरने को तैयार नहीं है। अपनी गलती का देषारोपण महिला पर लगाने को जैसे तत्पर रहते है। यह कहते हमें शर्म नहीं आती कि महिला रात को क्यों घूमती है। हकीकत यह है कि महिलाएं अज भी अपनी अस्मिता की रक्षा, न्याय और अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है। फिर बात करते है महिला समानता की जब तक हम अपनी कथनी और करनी में सुधार नहीं करेंगे तब तक समानता और विकास की अधूरी होगी।

सदियों से हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है। हमने नारी को दोयम दर्जे का माना है। आज समाज के दोहरे मापदण्ड नारी को एक तरफ पूजनीय बताते हैं तो दूसरी तरफ उनका शोषण करते हैं। यह नारी जाति का अपमान है। महिला समाज से वही सम्मान पाने की अधिकारी है जो समाज पुरुषों को उनकी गलतियों के बाद भी एक अच्छा आदमी बनने का अधिकार प्राप्त करता है सीता से लेकर द्रौपदी तक के उदाहरण हमारे सामने हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 में देश के प्रत्येक नागरिक को समानता का अधिकार दिया गया है। समानता का मतलब 'समानता' इसमें किसी प्रकार का लिंग भेद नहीं है।

समानता, स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार महिला-पुरुष दोनों को समान रूप से दिया गया है। शारीरिक और मानसिक तौर पर नर-नारी में किसी प्रकार का भेदभाव असंवैधानिक माना गया है। हालां-कि आवश्यकता महसूस होने पर महिलाओं और पुरुषों का वर्गीकरण किया जा सकता है। अनुच्छेद-15 में यह प्रावधान किया गया है कि स्वतंत्रता - समानता और न्याय के साथ-साथ के महिलाओं की सुरक्षा और संरक्षण का काम भी सरकार का कर्तव्य है। मगर इसे केवल सरकार के भरोसे नहीं छोड़ा जाता। समाज को भी अपनी भूमिका निभानी होंगी और अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर नारी का अपमान करने वाले लोगों को सबक सिखाना होगा। महिला आबादी की वास्तविकता और धरातलीय चुनौतियों को समझने की जरूरत है।

मुट्ठी भर महिलाओं के आगे बढ़ने से सम्पूर्ण महिला समाज का उत्थान नहीं होगा। महिला समानता और सुरक्षा आज सबसे अहम मुद्दा है, जिसे किसी भी हालत में नकारा नहीं जा सकता। सच तो यह है कि एक छोटे से गांव से देश की राजधानी तक महिला सुरक्षित नहीं है।

अंधेरा होते-होते महिला प्रगति और विकास की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुँचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी समानता और सुरक्षा की बात पर गहराई से मंथन करें।

कनाडा में हिंदुओं पर लक्षित हमलों की जवाबदेही किस पर

कनाडा भी अब पाकिस्तान और बांग्लादेश की राह पर चल पड़ा है। वहां के हिन्दू मंदिर पर भी खालिस्तानियों ने हमला किया है। दुनिया के कई इस्लामिक और ईसाई मुल्कों में ऐसी घटनाएं घटती रहती हैं। खुद भारत के भी कई राज्यों में ऐसी शर्मनाक घटनाएं पर्व-त्यौहारों पर सामने आती रहती हैं। इसलिए यक्ष प्रश्न है कि हिंदुओं पर लक्षित हमलों का जवाब आखिर कौन देगा, क्योंकि भारत सरकार, भारतीय संसद और भारतीय सुप्रीम कोर्ट धर्मनिरपेक्ष हैं!

कड़वा सच तो यह है कि इन सबकी धर्मनिरपेक्षता हिन्दू विरोधी और अल्पसंख्यक समर्थक है। यह बात मैं नहीं कह रहा हूँ, बल्कि इनके एक्शन से गाहे बगाहे साबित होता आया है। लोग इस बारे में अक्सर पूछते रहते हैं, लेकिन उच्चस्तरीय आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा से लैस ये लोग जबतक जगेंगे, तबतक बहुत देर हो चुकी होगी। वसुधैव कुटुम्बकम और सर्वे भवन्तु सुखिनः का यह मतलब कतई नहीं होता कि दुनिया भर में हिन्दू पिटते रहें और हमलोग तमाशबीन बनकर बैठे रहें। आपको पता होना चाहिए कि हिन्दू देवी-देवता शस्त्र और शास्त्र से लैस रहते हैं, जिसका सीधा संदेश है कि जब बात तर्क और तथ्य से नहीं सुधरे तो शस्त्र उठाना ही पड़ता है। कहा भी जाता है कि जब जब धर्म की हानि होती है और असुर-अभिमानी बढ़ जाते हैं, तब तब ईश्वर अवतार लेते हैं और दुष्टों का दलन करके सज्जनों की पीड़ा हरते हैं। आज समकालीन दुनिया में जिस-तरह से सत्ता संरक्षित हिंसा-प्रतिहिंसा हो रही है, उसकी समाप्ति भी भारत वर्ष से ही शुरू होगी। लेकिन जो लोग धर्मनिरपेक्ष हैं, वो ऐसा कतई नहीं करेंगे।

कहा जाता है कि भारत के धर्मनिरपेक्ष लोग वो महात्मा गांधी हैं, जो एक गाल पर थप्पड़ पड़ते ही दूसरा भी हाजिर कर देने के आदि बन चुके हैं। इसलिए रीढ़ विहीन मुल्क भी भारत को आंख दिखाते रहते हैं। इनके अनुगामियों ने भी पाकिस्तान, बांग्लादेश से लेकर कनाडा तक में हुए हिन्दू उत्पीड़न के मामले में वही किया। कहीं खामोशी की गहरी चादर, तो कहीं बयानबाजियों की खानापूर्ति। फलतः कभी अमेरिका में भारतीयों को निशाना बनाया गया, तो कभी ब्रिटेन में हमला किया गया और अब कनाडा में किसी भारतीय दूतावास पर या उसके सामने नहीं, बल्कि हिन्दू मंदिर पर एकत्रित लोगों पर हमला हुआ है। चूंकि ईसाई भी मुसलमानों के ही वंशज हैं, इसलिए उनके मुल्क में खालिस्तानी समर्थकों की करतूतों के पीछे पाक कनेक्शन ही होगा, पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई का ही कोई नया कुचक्र होगा, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। पंजाब का खालिस्तान आंदोलन यदि कनाडा में जिंदा है तो इसके पीछे अंतर्राष्ट्रीय साजिश से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। आप मानें या न माने, लेकिन भारत के खिलाफ भी अब उसी तरह के राजनैतिक षड्यंत्र किये जाने लगे हैं, जैसा कि अबतक अमेरिका, रूस और चीन के खिलाफ किए जाते थे। हालांकि, भारत और हिंदुओं को उनकी धर्मनिरपेक्ष सोच की मार ज्यादा पड़ रही है, जिसे हमारी संसद और सर्वोच्च न्यायालय ने हम पर जबरिया थोप रखा है। यही वजह है कि हिंदुत्व की रक्षा और विस्तार के लिए हमारे पास वह रणनीति नहीं है, जो कि ईसाई या इस्लाम हुकूमत वाले देशों के पास उनके धर्म के विस्तार के लिए है! सभी हिंदुओं के लिए यह विचारणीय प्रश्न है। कनाडा में जिस तरह से हिंदू विरोधी साजिश हुई, मंदिर पर हमला हुआ, स्थानीय पुलिस की चुप्पी और महज खानापूर्ति सामने आई है, उससे वहां की भारत विरोधी ट्रूडो सरकार एक बार फिर से सवालों के घेरे में आ चुकी है। जिस तरह से कनाडा के ब्रैम्पटन में खालिस्तान समर्थकों ने एक हिंदू मंदिर पर हमला किया और वहाँ चल रहे भारतीय कांसुलर कैंप को बाधित करने का प्रयास किया, वह निंदनीय है। भले ही भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस घटना की निंदा की और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की, वह नाकाफी है। भले ही कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने भी इस घटना को अस्वीकार्य बताया हो, लेकिन उनकी मिलीभगत से इंकार नहीं किया जा सकता है। हाल के दिनों की भारतीय-कनाडाई टीका-टिप्पणी भी इसी बात की चुगली करती है। खालिस्तानी समर्थकों के हमले के कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। इससे भारत और कनाडा के बीच तनानती बढ़ती ही जा रही है। पीएम मोदी ने कहा है कि- ₹मैं कनाडा में हिंदू मंदिर पर हुए जानबूझकर किए गए हमले की कड़ी निंदा करता हूं। हमारे राजनयिकों को डराने के कायरतापूर्ण प्रयास भी उतने ही निंदनीय हैं। हिंसा के ऐसे कृत्य भारत के संकल्प को कभी कमजोर नहीं कर पाएंगे। हम उम्मीद करते हैं कि कनाडा सरकार न्याय सुनिश्चित करेगी और कानून का राज कायम करेगी। बता दें कि हाल के महीनों में पीएम मोदी का यह बयान दूसरा उदाहरण है, जब उन्होंने भारत के बाहर हिंदुओं पर कथित हमलों का मुद्दा उठाया है। इस साल अगस्त में, उन्होंने बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस के समक्ष पड़ोसी देश में सत्ता परिवर्तन के बाद हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों को कथित तौर पर निशाना बनाए जाने का मुद्दा उठाया था। वहीं, भारत के विदेश मंत्रालय ने भी इस घटना पर चिंता जताई है और कनाडा सरकार से सभी धार्मिक स्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने को कहा है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा है कि ₹हम ओंटारियो के ब्रैम्पटन शहर में रविवार को हिंदू सभा मंदिर में कट्टरपंथियों और अलगाववादियों द्वारा की गई हिंसा की घटनाओं की निंदा करते हैं। हम कनाडा सरकार से यह सुनिश्चित करने का आह्वान करते हैं कि सभी पूजा स्थलों को ऐसे हमलों से बचाया जाए। हम यह भी उम्मीद करते हैं कि हिंसा में शामिल लोगों पर मुकदमा चलाया जाएगा। वहीं खालिस्तानी समर्थकों के हमले के बीच एक और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ जिसमें कथित तौर पर पुलिस को एक हिंदू युवक को पकड़कर हथकड़ी लगाते हुए दिखाया गया, जिसकी तुलना टिप्पणीकारों ने अमेरिका में जॉर्ज फ्लॉयड की घटना से की। काबिलेगौर है कि खुद कनाडा के सांसद चंद्र आर्य ने इस घटना को खालिस्तानी कार्यकताओं द्वारा एक सीमा पार करने जैसा बताया है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि इस घटना से कनाडा के कानून प्रवर्तन में खालिस्तानियों की घुसपैठ का पता चलता है। उन्होंने हमले का विरोध कर रहे हिंदुओं के प्रति ब्रैम्पटन पुलिस के रवैये पर भी सवाल उठाए। वहीं, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने इस घटना को अस्वीकार्य बताते हुए अपना अंतर्राष्ट्रीय बचाव करने की कोशिश की और कहा कि कनाडा में हर किसी को अपनी आस्था के पालन का अधिकार है। उन्होंने घटना की जाँच के आदेश दे दिए हैं। ट्रूडो ने कहा कि ब्रैम्पटन में आज हिंदू सभा मंदिर में हुई हिंसा की घटना अस्वीकार्य है। हर कनाडाई को अपनी आस्था का पालन स्वतंत्र और सुरक्षित रूप से करने का अधिकार है। समुदाय की सुरक्षा और इस घटना की जांच के लिए तुरंत प्रतिक्रिया देने के लिए पील रीजनल पुलिस का धन्यवाद। वहीं, कनाडा स्थित भारतीय उच्चायोग ने भी इस घटना पर दुख जताया है। उन्होंने कहा कि हम आवेदकों, जिनमें भारतीय नागरिक भी शामिल हैं, उनकी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं, जिनकी मांग पर स्थानीय सह-आयोजकों के पूर्ण सहयोग से इस तरह के आयोजनों का आयोजन किया जाता है। भारत विरोधी तत्वों के इन प्रयासों के बावजूद, हमारा वाणिज्य दूतावास भारतीय और कनाडाई आवेदकों को 1,000 से अधिक जीवन प्रमाण पत्र जारी करने में सफल रहा। बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब विदेश में हिंदुओं पर हमले हुए हैं। इससे पहले भी कई बार ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं। भारत सरकार ने इस मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग की है। वहीं, कनाडा में मंदिर पर हमले के बाद हिंदुओं का भी गुस्सा फूटा है। उन्होंने भी तिरंगा लहराते हुए प्रदर्शन किये। वहीं, विदेश मंत्री जयशंकर ने भी कनाडा सरकार को खूब सुनाया। भारत ने कनाडा के ब्रैम्पटन में हिंदू सभा मंदिर में हिंसा का कड़ा विरोध किया है, जबकि गत सोमवार को बड़ी संख्या में हिंदुओं ने मंदिर के बाहर तिरंगे लेकर प्रदर्शन किया। कनाडा के ब्रैम्पटन में मंदिर पर खालिस्तानी हमले ने एक बार पुनः हिंदुओं को एकजुट कर दिया है। 3 नवंबर को हमले के बाद, 4 नवंबर की शाम को ब्रैम्पटन में हिंदू सभा मंदिर के बाहर भारी भीड़ जमा हुई। प्रदर्शन रैली में शामिल लोगों के हाथों में तिरंगा था। 'वंदे मातरम' और 'जय श्री राम' के नारे लगाते हुए भीड़ ने मंदिर तथा हिंदुओं के साथ एकजुटता दिखाई। भारत ने खालिस्तानी झंडे लेकर आए प्रदर्शनकारियों द्वारा हिंदू मंदिर में लोगों के साथ की गई हिंसा पर सख्त रुख अपनाया है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी घटना पर चिंता जताई। वहीं, ब्रैम्पटन में हिंदू सभा मंदिर के बाहर जुटी भीड़ ने जस्टिन ट्रूडो सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। प्रदर्शन में शामिल लोगों ने कहाकि, 'हम हिंदू समुदाय के रूप में कल जो कुछ हुआ उससे बहुत दुखी हैं। हम हिंदू समुदाय के समर्थन में यहां आए हैं। हिंदू समुदाय ने कनाडा में बहुत योगदान दिया है और हम प्रगतिशील हैं, हम बहुत आर्थिक मूल्य जोड़ते हैं, हम जहां भी जाते हैं कानून और व्यवस्था का पालन करते हैं- चाहे वह कनाडा हो या कहीं और। इसलिए राजनेताओं और पुलिस की प्रतिक्रिया देखकर बहुत दुख हुआ, उन्होंने हमारे साथ कैसा व्यवहार किया... हम यहां समर्थन में आए हैं। हम बस यही मांग रहे हैं कि न्याय मिले। कानून के शासन का पालन किया जाए और अपराधियों पर कानून के शासन के तहत मुकदमा चलाया जाए।' रैली में भाग लेने वालों ने कहा कि, 'आज एक बात स्पष्ट है - कनाडा में हमारी जान है और हिंदुस्तान में हमारी जान बसती है। हिंदू कनाडाई कनाडा के प्रति बहुत वफादार हैं। हिंदू कनाडाई लोगों के साथ जो हो रहा है, वह सही नहीं है। अब समय आ गया है कि सभी राजनेता यह जान लें कि हिंदू कनाडाई लोगों के साथ जो हो रहा है वह गलत है... हम चाहते हैं कि कनाडा हिंदुओं के साथ अच्छा व्यवहार करे..हम चाहते हैं कि भारत और कनाडा के रिश्ते मजबूत हों, हम उन लोगों के खिलाफ हैं जो इसके खिलाफ हैं..।' गौरतलब है कि ब्रैम्पटन में भारतीय वाणिज्य दूतावास के अधिकारियों की मंदिर यात्रा के दौरान हिंसक झड़पों के एक दिन बाद यह हमला हुआ। पीएम नरेंद्र मोदी ने इसे 'जानबूझकर किया गया हमला' और 'हमारे राजनयिकों को डराने का कायरतापूर्ण प्रयास' करार दिया है। उन्होंने यह उम्मीद भी जताई कि कनाडा सरकार न्याय सुनिश्चित करेगी और कानून का शासन बनाए रखेगी। वहीं, विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा कि, 'कनाडा में कल हिंदू मंदिर में जो कुछ हुआ, वह निश्चित रूप से बेहद चिंताजनक है। किसी भी व्यक्ति को हमारे आधिकारिक प्रवक्ता का बयान और कल हमारे प्रधानमंत्री द्वारा व्यक्त की गई चिंता भी देखनी चाहिए थी। इससे सबको पता चल जाएगा कि हम इस घटना के बारे में कितनी गहरी भावना रखते हैं।' वहीं, पुलिस ने इस हमले से जुड़े तीन संदिग्धों की पहचान की है, जिनमें मिसिसॉगा के 42 वर्षीय दिलप्रीत सिंह बौंस, ब्रैम्पटन के 23 वर्षीय विकास (पूरा नाम अज्ञात) और मिसिसॉगा के 31 वर्षीय अमृतपाल सिंह शामिल हैं। एक वीडियो में देखा गया कि पील पुलिस का ऑफ ड्यूटी अधिकारी खालिस्तानी समर्थकों की रैली में भाग ले रहा था। उस अधिकारी को जांच पूरी होने तक निलंबित कर दिया गया है। कनाडा के एक पूर्व मंत्री ने प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को 'सामाजिक और राजनीतिक रूप से मूर्ख व्यक्ति' करार दिया और कहा कि ट्रूडो कभी समझ ही नहीं पाए कि ज्यादातर सिख धर्मनिरपेक्ष हैं और वे खालिस्तान से कोई सरोकार नहीं रखना चाहते। पूर्व प्रधानमंत्री पॉल मार्टिन की सरकार में संघीय कैबिनेट मंत्री रह चुके उज्जल दोसांझ (78) ने दावा किया कि कनाडा में कई मंदिरों पर खालिस्तान समर्थकों का नियंत्रण है। यह ट्रूडो की गलतियों का नतीजा है कि 'आज कनाडा के लोग खालिस्तानियों और सिख को एक मानते हैं, मानो कि अगर हम सिख हैं, तो हम सब खालिस्तानी हैं। कनाडा की घटना से यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के भी उस दृष्टिकोण को बल मिलता है कि बटेंगे तो कटेंगे। इसलिए अब बंगलादेश से कनाडा तक उनका यह नारा गूंजने लगा है। कहा भी जाता है कि ₹वृथा न जाए देव ऋषि वाणी।₹ यानी देवताओं और साधु-संतों के मुख से निकली वाणी कभी व्यर्थ नहीं होती है। इसलिए जब उनकी बात सच निकली है तो अब इससे बचाव के लिए विश्वव्यापी रणनीति बनाने की जिम्मेदारी भी उन्हीं जैसे अग्रसोची लोगों पर है। इसलिए प्रकृति के संदेश को समझिए और आगे बढ़िए। आकाशवाणी हो चुकी है।

खाद्य पदार्थों में मिलावट : मानवजीवन पर गंभीर संकट का कारण

खाद्य सामग्री में मिलावट एक गम्भीर समस्या है जो वर्तमान समय में तेजी से बढ़ रही है और मानव जीवन के लिए गम्भीर संकट का कारण बन रही है। हर दिन सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफॉर्म्सपर विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों में मिलावट के वीडियो वायरल होते रहते हैं, जो इस समस्या की गम्भीरता को दर्शाते हैं। मिलावट का प्रभाव न केवल हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है, बल्कि यह हमारी अर्थव्यवस्था और सामाजिक ढांचेपर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यह समस्या केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण और पहाड़ी इलाकों में भी इसका व्यापक प्रसार हो चुका है। आम जनता के बीच इसके प्रभाव को लेकर व्यापक चिन्ता है और इसे समाप्त करने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयासों की आवश्यकता है। खाद्य सामग्री में मिलावट के कई कारण हैं, जो इस समस्या की जड़ में मौजूद हैं। सबसे पहला कारण है बेरोजगारी और आर्थिक संकट, जो कई लोगों को गलत तरीकों का सहारा लेने के लिए मजबूर करता है। मौजूदा समय में बेरोजगारी की दर बढ़ती जा रही है और कई लोग अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए मिलावट जैसे गलत कामों में संलग्न हो जाते हैं। बढ़ती महंगी और आर्थिक अस्थिरता के कारण भी कुछ व्यापारी अधिक मुनाफा कमाने के लिए सस्ते और हानिकारक पदार्थों को असली उत्पादों में मिलाते हैं।

मिलावट का एक और गम्भीर दुष्प्रभाव यह है कि इससे उपभोक्ताओं का खाद्य उत्पादों पर से विश्वास उठने लगता है। लोग यह सोचनेपर मजबूर हो जाते हैं कि जो कुछ भी वे खा रहे हैं, वह उनकी सेहत के लिए सुरक्षित है या नहीं। इसका असर न केवल उपभोक्ताओं की मानसिकता पर पड़ता है, बल्कि खाद्य आपूर्ति श्रृंखला के सभी पहलुओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जब लोगोंका विश्वास उठने लगता है तो वे स्वस्थ और सुरक्षित विकल्पों की तलाश में अधिक खर्च करने को तैयार होते हैं, जिससे खाद्य पदार्थों की कीमतों में भी वृद्धि होती है। खाद्य सामग्री में मिलावट को रोकने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण उपाय है कानूनी सख्ती और कड़े दंड का प्रावधान। खाद्य सामग्री में मिलावट करने वालों के खिलाफ सख्त कारखाई होनी चाहिए और कड़े दंड निर्धारित किये जाने चाहिए। इसके अलावा भी सरकार को इस पर रोक लगाने के लिए कड़े उपाय करने होंगे।



इस तरह के व्यवहार से समाज में नैतिकता का पतन हो रहा है और लोग अपने लाभ के लिए दूसरों की जान को खतरे में डाल रहे हैं। कानूनी सख्ती की कमी भी खाद्य सामग्री में मिलावट की समस्या को बढ़ावा देती है। भारत में खाद्य सुरक्षा से संबंधित कई कानून हैं, लेकिन इनका सही ढंग से क्रियान्वयन नहीं हो पाता है। मिलावटखोर अक्सर कानून के झोल का फायदा उठाकर हानिकारक कार्यों को अंजाम देते हैं। जबतक सख्त दंड और प्रभावी कारखाई नहीं होगी, तबतक इस समस्यापर काबू पाना मुश्किल होगा। उपभोक्ता जागरूकता का अभाव भी एक बड़ा कारण है, जो मिलावटकी समस्या को बढ़ावा देता है। अधिकांश उपभोक्ता खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की जांच नहीं करते हैं और सस्ते दामों के लालच में आकर मिलावटी वस्तुएं खरीद लेते हैं। जागरूकता की कमी के कारण उपभोक्ता मिलावट के हानिकारक प्रभावों को समझ नहीं पाते हैं और अनजाने में अपना और अपने परिवारका स्वास्थ्य खतरेमें डालते हैं। ऐसेमें, उपभोक्ता जागरूकता अभियान चलाना अत्यंत आवश्यक है, ताकि लोग खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की पहचान कर सकें और मिलावट से बच सकें। खाद्य सामग्री में मिलावट के कई प्रकार हैं, जिनका प्रभाव हमारे स्वास्थ्यपर पड़ता है। दूध और दूध उत्पादों में मिलावट एक आम समस्या है। इसमें पानी, डिटर्जेंट, सिंथेटिक दूध, यूरिया और अन्य हानिकारक रसायनों का मिश्रण किया जाता है। इस प्रकार की मिलावट से दूध की पौष्टिकता कम हो जाती है और यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। इसके अतिरिक्त मसालोंमें मिलावट भी एक गम्भीर समस्या है। हल्दी, मिर्च, धनिया पाउडर आदि में कृत्रिम रंग इट का चूरा, चॉक पाउडर और अन्य अशुद्ध पदार्थ मिलाए जाते हैं, जो पेट से संबंधित बीमारियों का कारण बन सकते हैं। इसी तरह तेल और घी में सस्ते और हानिकारक तेल मिलाकर उन्हें शुद्ध घी के नाम पर बेचा जाता है, जो हृदय रोगों के जोखिम को बढ़ा सकता है। यह समस्या केवल प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों तक सीमित नहीं है, बल्कि सब्जियों और फलों में भी देखी जाती है।

ताजगी दिखाने के लिए केमिकल्स और कृत्रिम रंगो का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे गम्भीर स्वास्थ्य समस्याएं, यहां तक कि कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां भी हो सकती हैं। खासकर पहाड़ी क्षेत्रों में भी मिलावट की समस्या तेजी से बढ़ रही है।

हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों में भी मिलावट के मामले सामने आ रहे हैं। इन क्षेत्रों में जहां स्वच्छ और शुद्ध खाद्य पदार्थों की उम्मीद की जाती है, वहां भी मिलावट का प्रसार चिन्ता का विषय है। मिलावटखोर ऊंचे दामों पर वस्त्रायुक्त दवाओं, रासायनिक उर्वरकों और हानिकारक केमिकल्स का प्रयोग फलों और सब्जियों पर कर रहे हैं। इन पहाड़ी क्षेत्रों में लोग आमतौर पर अपने स्वास्थ्य को लेकर अधिक सतर्क होते हैं, लेकिन अब यहां भी लोगों को मिलावट से बचने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। मिलावटके दुष्परिणाम हमारे स्वास्थ्यपर गहरे प्रभाव डालते हैं। मिलावट से उत्पन्न होनेवाली बीमारियां जैसे कि पेट के रोग, त्वचा संबंधी समस्याएं, कैंसर, हृदय रोग आदि बढ़ रही हैं। छोटे बच्चों, गर्भवती महिलाओं और वृद्ध लोगों पर इसका प्रभाव विशेष रूप से हानिकारक होता है। जिन खाद्य पदार्थों का सेवन वे पोषण के लिए करते हैं, वही उनके स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने का कारण बनते हैं। इसके अलावा इन बीमारियों के इलाज पर होने वाला खर्च व्यक्ति और समाज दोनों के लिए आर्थिक बोझ बन जाता है। कई बार गम्भीर बीमारियों का इलाज इतना महंगा हो जाता है कि सामान्य परिवार इसे वहन नहीं कर पाते और इससे उनकी आर्थिक स्थिति भी खराब हो जाती है।

उत्तराखंड फाउंडेशन डे

बेहद खूबसूरत राज्य

उत्तर भारत में एक राज्य है, जिसका नाम उत्तराखंड है। उत्तराखंड बेहद खूबसूरत राज्यों में से एक है। आज यानी की 09 नवंबर को उत्तराखंड का स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। क्योंकि इसी दिन यानी की 09 नवंबर उत्तर प्रदेश से अलगकर उत्तराखंड को अलग राज्य का दर्जा दिया गया था। पहले इस क्षेत्र को उत्तरांचल के नाम से जाना जाता था। पहले यह उत्तर प्रदेश का भाग था। कई सालों के आंदोलन के बाद 09 नवंबर 2000 को भारत के 27वें राज्य के रूप में उत्तराखंड का निर्माण किया गया था। बता दें कि साल 2000 से 2006 तक इसको उत्तरांचल के नाम से जाना जाता था। वहीं स्थानीय लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए जनवरी 2007 में राज्य का ऑफिशियल नाम बदलकर उत्तराखंड कर दिया गया। उत्तराखंड राज्य की सीमाएं उत्तर में तिब्बत और पूर्व में नेपाल से लगी हुई हैं। वहीं पश्चिम में इसकी सीमाएं उत्तराखंड की सीमा हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में उत्तर प्रदेश से सटा है। उत्तराखंड को देवभूमि के नाम से जाना जाता है। हिंदू धर्म की सबसे पवित्र और भारत की सबसे बड़ी नदी गंगा और यमुना का उद्गम स्थल भी उत्तराखंड में है। यह वह दौर था, जब पूरे देश में कई राज्यों को बंटवारा कर नए राज्य बनाए गए थे। बता दें कि उत्तराखंड में कुल 13 जिले हैं। जिसमें बागेश्वर, चम्पावत, चमोली, अल्मोडा, उत्तरकाशी, टिहरी गढ़वाल, पिथौरागढ़, उधमसिंह नगर, हरिद्वार, देहरादून, पौड़ी गढ़वाल, रुद्रप्रयाग, मसूरी, ऋषिकेश, मसूरी शामिल हैं। यह राज्य जितना भारतीयों को पसंद आता है, उतना ही ज्यादा विदेशियों को भी पसंद आता है। इस राज्य को अपनी खूबसूरती के लिए दुनियाभर में जाना जाता है। हिंदू धर्म के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक भगवान केदारनाथ का मंदिर भी इसी राज्य में है।

लेखनी को पलने और बढ़ने का माहौल देता उत्तराखंड का 'लेखक गांव'

देहरादून के निकट सुरम्य हिमालयी क्षेत्र में स्थित थानो गाँव ने देश के अपनी तरह के पहले 'लेखक गांव' का गौरव हासिल किया है। इस गाँव की अवधारणा से लेकर उसका विकास उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने किया है जो स्वयं एक विशिष्ट साहित्यकार के रूप में भी पहचान रखते हैं। उनका दावा है कि इस गाँव में लेखकों को अपनी कृतियों के सर्जन के लिए जरूरी एक शांत और रचनाशील वातावरण मिलेगा।

देश के पहले लेखक गाँव थानो में स्पर्श हिमालय फाउंडेशन द्वारा हाल ही में आयोजित ₹स्पर्श हिमालय महोत्सव-2024₹ भारतीय साहित्य, संस्कृति और कला की समृद्ध धरोहर का प्रतीक बन गया। इस ऐतिहासिक आयोजन में उत्तराखण्ड के पहले ₹लेखक गाँव₹ का उद्घाटन हुआ, जहाँ लेखक और विचारक प्रकृति के सान्निध्य में सृजनात्मक चिंतन की स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं।

हिमालयीय वैषिश्ट्यता लिए 'लेखक गाँव' का उद्देश्य देश-दुनियाँ के उन विलक्षण, विद्वान साहित्यकारों, गीतकारों, कलाकारों को ठौर प्रदान करना है, जिनकी लेखनी नेअपने समय की कालजयी रचनाओं का सर्जन कर आमजन के बीच लोकप्रियता हासिल की। ₹लेखक गाँव₹ का यह अनूठा आयोजन न केवल साहित्यकारों को प्रेरणा प्रदान करेगा, बल्कि इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। यहाँ लेखक कुटीर, संजीवनी वाटिका, नक्षत्र और नवग्रह वाटिका, पुस्तकालय और गंगा व हिमालय संग्रहालय जैसी संरचनाओं ने इसे एक सम्पूर्ण साहित्यिक तीर्थ बना दिया है।

25 से 27 अक्टूबर 2024 को स्पर्श हिमालय फाउंडेशन के तत्वावधान में देहरादून के थानो में स्थित लेखक गाँव में अंतरराष्ट्रीय कला, साहित्य और संस्कृति महोत्सव का आयोजन किया किया। इस पाँच दिवसीय महोत्सव में 65 से अधिक देशों के साहित्यकार, लेखक और कलाकारों ने भाग लिया, जो हिन्दी भाषा और उत्तराखंड की सांस्कृतिक धरोहर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने में कामयाब हुए। यह महोत्सव हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार का एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुआ और इसमें भाग लेने वाले विदेशी साहित्यकार अपने देशों में हिन्दी के ब्रांड एंबेसडर के रूप में कार्य करेंगे।



'लेखक गांव' लेखकों, कवियों, साहित्यकारों और अन्य रचनाकर्मियों द्वारा महसूस की जा रही व्यावहारिक कठिनाइयों का निवारण करने की ओर एक अभिनव पहल है। उत्तराखंड में यह पहला लेखक गाँव भविष्य का पर्यटक गंतव्य बनकर उभरेगा। यह मंच उन लेखकों के लिए एक सुनहरा अवसर है जो अपने शब्दों के माध्यम से समाज को नयी राह दिखाने का सामर्थ्य रखते हैं। लेखक गाँव के वातावरण में सृजनशीलता का प्रवाह अनेक लेखकों और कवियों को प्रेरित करेगा।

देवभूमि उत्तराखण्ड का यह ₹लेखक गाँव₹ प्रदेश की अद्भुत रचनात्मकता और सृजनशीलता का प्रतीक है। यहाँ का शांत और सुरम्य वातावरण लेखकों को सर्जन के लिए एक आदर्श स्थान प्रदान करता है। चिंतन, मनन और स्वयं की खोज में ₹लेखक गाँव₹ जैसे स्थानों की महत्ता है। ऐसे एकांत और सृजनात्मक वातावरण में लेखकों को आत्म-साक्षात्कार का सजीव अनुभव प्राप्त होता है। लेखक गाँव की मूल परिकल्पना को यथार्थ के धरातल पर उतारते हुए 'लेखक कुटीर' इस परिसर का सबसे महत्त्वपूर्ण और संवेदनाओं को सहेजता है। जीवन के तमाम कड़वे-मीठे अनुभवों और झंझावतों को स्वयं में समेटे ऐसे वयोवृद्ध लेखकों के लिए यह परिसर स्वयं में स्नेह और आशीष की छाँव में स्थापित एक ऐसा स्थान है जहाँ प्रतिक्षण मानवता की सेवा चरितार्थ होगी। विश्व के हिमालयीय सरोकारों से जुड़े प्रसिद्ध लेखकों, साहित्य साधकों एवं कालाकारो के नाम से 'लेखक कुटीर' नाम की तख्ती सजी होगी। प्रकृति के आँचल में नाना प्रकार के फूलों की सुगन्धित खुशबू पूरे परिसर को सकारात्मक ऊजार्युक्त तरंगों से महका देगी। अध्ययन, लेखन और जीवन को जीवंत बनाने के लिए 'लेखक कुटीर' में निवास कर रहे लेखकों को यथासम्भव सुविधाएँ उपलब्ध कराने का प्रयास किया जायेगा। लेखक गाँव के ग्रंथालय में समस्त हिमालय राज्यों के साहित्य, संस्कृति, इतिहास, सामाजिक, राजनितिक, भूगोल, दर्शन, धर्म, ज्ञान-विज्ञान आदि विशयों से सम्बंधित ग्रंथो को स्थान दिया गया है और भी दिया जाएगा।

प्राचीन ऐतिहासिक मूर्तियों, चित्रों, सिक्को, पाण्डुलिपियों एवं अन्य दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह किया जाएगा। पहाड़ी चित्र कला, विश्व स्तरीय फोटोग्राफरों के चित्र ग्रंथालय की शोभा बढ़ाएंगे। ग्रंथालय का अतिरिक्त परिवेश निर्मित करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा जाएगा कि पवित्रता और शांति का वातावरण बना रहे। ग्रंथालय का निर्माण हिमालयी लोक संस्कृति, वास्तु शिल्प के उद्धरण रूप में निर्मित होगा। पहाड़ी गाँव के भवन निर्माण शिल्प के आधार पर हिमालय ग्रंथालय का निर्माण किया जाएगा जिसमे खोली, छज्जा एवं तिवारी बनाई जाएगी। ग्रंथालय पहाड़ी पत्थर एवं स्थानीय ककाश्ठ से निर्मित किया जाएगा। ग्रंथालय का निर्माण हिमालयी लोक संस्कृति, वास्तु शिल्प के उद्धरण रूप में निर्मित होगा।

लेखक गाँव में आने वाले छात्रों, शोधार्थियों, लेखकों एवं विभूतियों सहित सभी आगंतुकों की आवासीय व्यवस्था, भवन का परिवेश केवल छात्रावास या विश्रामगृह तक सीमित न हो कर सुख, परम शांति और अद्भुत आनन्द से परिपूर्ण घर का पूर्ण आभास प्रदान करेगा। आवासीय परिसर प्रकृति के मध्य आगंतुकों के चित और चिंतन को नव ऊर्जा प्रदान करके आवासीय समय को सकारात्मक, रचनात्मक तथा अविस्मरणीय बनायेगा। ₹लेखक गाँव₹ जैसे स्थान भारत के साहित्य और संस्कृति को नई ऊँचाइयों पर ले जाने की क्षमता रखते हैं। इनमें होने वाले महोत्सव साहित्य, कला और संस्कृति के विविध रंगों को संरक्षित और सशक्त बनाते हुए भारत की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करने का संकल्प दोहराते है।

लेखक गाँव के ₹स्पर्श हिमालय महोत्सव-2024₹ ने साहित्यिक और सांस्कृतिक जागरूकता का नया अध्याय लिखा है। यह आयोजन न केवल उत्तराखण्ड की धरती पर रचनात्मकता का संचार लाया है बल्कि साहित्य, संस्कृति और कला के माध्यम से भारतीय धरोहर को संजोए रखने में सहायक सिद्ध होगा।



- डॉ. सत्यवान सौरभ,

नदी बियानी रेत और कंकड़ पत्थर

यह सृष्टि बड़ी ही अद्भुत और अलौकिक है जिसमें जो जन्मता है वह मरता है। जन्म की इस नैसर्गिक प्रक्रिया में नारी जननी और नर जन्मदाता की भूमिका में होते है। इस प्रकृति में यह आवश्यक नही की जन्मदात्री नारी/ स्त्री ही हो, नारी रूप में सृष्टि का पालन पोषण और संहार में धरती भी जननी है, प्रकृति भी जननी है, नदिया भी जननी है जीवजन्तु, प्राणी, वनस्पति, पेड़ पौधे ओर लताबेला सभी जननी के रूप में है जो नित नूतन सृष्टि को जन्म देकर जगत को उपहार देते आ रहे है। जिस जाति प्रजाति में नरनारी के संसर्ग से जन्म हो वह उतनी ही अपनी जननी झजन्मदाता से संबन्धित ओर सीमाओं में विध्य होती है। पेड़ पोधे जन्म के बाद पतझड़ में अपने पत्तों का परित्याग कर बसंत में फिर हरे भरे तरोताजा हो जाते है। जीवजन्तु, वन्य प्राणी ओर जल के जीवों का भी प्रजनन काल सुनिश्चित है, जिसमें जन्म प्रक्रियाए सुचारु रूप से सदियों से चलती आ रही है।

जन्म की प्रक्रिया में कुछ भिन्नताए भी है जहां नर पौधे भी फल को जन्म देकर आहार की व्यवस्था संचालन में सम्मिलित है वही यह सारा जगत इन नर पेड़-पौधो से पैदा फलों के स्वादों के लिए लालायित होता है। परमात्मा की इस सृष्टि में नारी अकेली जननी नहीं फल बीज के रूप में नररूपी वृक्ष भी जननी के रूप में पैदावार करते है किन्तु हम उन्हे नर से पैदा होने से तिरष्कार नहीं करते बल्कि जीवन की आवश्यकता का अंग समझ स्वीकारते है। इन नर पेड़-पौधों की जड़ें भूमि में होने से उनको जननी का श्रेय नहीं मिल पाता है किन्तु वे जननी के रूप में तो है ही। इन नर पेड़ों की ही भांति हमे अनाज देने वाले नर बीज है जो हमारा नित्य का आहार है जिसमें अनाज रूप में गेहूं, चना, धान/चावल, कोदो आदि नर रूप की फसलें है वही फलों में प्रमुखरूप से देखा जाये तो- अंगूर, अन्ननास, अंजीर, आलूबुखारा, आम, अमरूद, करोंदा, केला, खरबूजा, नीबू, संतरा, पपीता, सेब, नारियल जामुन, चीकू, खजूर आदि नर वृक्ष है, जिन्हें हम नारी नहीं मानते है। कुछ पेड़ नारी के नाम की पहचान लिए नारीरूपा स्वीकार्य होकर फल देते है जिसमें इमली, मोसम्मी,लीची, खुबानी ओर सीताफल प्रमुख है, इस वृक्षों के रजस्वला होने के संबंध में मान्यता है की ये जब भी रजस्वला होते है तब उनसे गोंद/गाद की अतिरिक्त पैदावार होती है जो अधिकांश औषधि के रूप में प्रयोग की जाती है।

धरती पर जन्म की इस प्रक्रिया में पेड़ पौधे, फसले, फल, बीज आदि मनुष्य जाति ओर जीवजंतुओं ओर प्राणियों के पालनार्थ भोजन एवं ओषधिरूप में प्राप्त होता है। वनों से पैदा हुई लकड़ी, पहाड़ों ओर नदियों से पैदा हुये पत्थर, रेत गिट्टी आदि खनिज संसाधन का उपयोग नगरों झ गांवों सहित धरा के किसी भी स्थान पर उच्च इमारतें- कल कारखाने आवासीय भवनो आदि के लिए किया जाता है। हर साल इन जीवजंतुओं प्राणियों, मनुष्यों के साथ यह प्रकृति ओर सभी नदियां भी गर्भ धारण करती है, अर्थात नदियां भी पेट से होती है ओर रेत, कंकड़ पत्थर सहित अन्य उत्पाद वरदान में देती है।

धरती माँ नारी रूप में देवताओं द्वारा संबोधित है, यह भूदेवी धरती माँ भी साल में तीन दिन के लिए रजस्वला होती हैं जिसकी पौराणिक मान्यता है ओर ओर भगवान विष्णु की पत्नी के नाम पर ओडिशा के लोग आषाढ़ मास के तीन दिन इनके रजस्वला मानते है। इन तीन दिनों के लिए राज्य में कृषि संबंधी सभी कार्यों को रोककर इस समय को ॾरजॾ या ॾरजोॾ त्यौहार के तौर पर बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस दौरान धरती मां का प्रतीक मानकर सिल बट्टे की पूजा होती है और मिट्टी से जुड़े कार्य नहीं किये जाते। इस दिन भगवान सूर्य देव वृषभ राशि से मिथुन राशि में विचरण करते हैं जिसका विभिन्न राशियों पर भी असर होता है। मान्यता है रज संक्रांति के बाद ही बारिश की ऋतु की साल में एक बार धरती माता भी रजस्वला होती है। इसी तरह नदी ओर नदों का जिक्र है ओर कल्हण की राजतरंगिणी में नदियों के रजस्वला होने का उल्लेख है जब सूर्य देवता कर्क और सिंह राशि पर होते हैं तब नदियाँ रजस्वला होती हैं ।यह मूल वचन महर्षि अत्रि का है --सिंह कर्कट योर मध्ये सर्वा नद्यो रजस्वला ।तासु स्नानं न कुर्वीत वर्जयित्वा समुद्रगाः ।। भारत में ग्यारह नदियों को पवित्र माना गया है। ये हैं-- गंगा, महानदी , तापी , कृष्णा, वेणी , गोदावरी , तुंगभद्रा,ताम्रपर्णी , कावेरी ,रेवा (नर्मदा) और गोमती जिसे लेकर महर्षि देवल इन्हे रजस्वला होने के बाद भी पवित्र मानते है।

देश में प्रवाहित सारी नदियां कई युगों से बहती आ रही है। हमने नदियों को देवी माँ के स्थान पर रखा है ओर हमे जन्म देने वाले माता-पिताओं को वृद्धाश्रम में रखवा दिये। हम 16 साल में जवान होते है किन्तु नदिया कालजयी है वे समय की सीमाओं से बंधी नहीं होने से हमेशा तरोताजा जवान रहती है। हमारा पूरा जीवन 60 से 100 साल में पूरा हो जाता है ओर मरने के बाद दाहसंस्कार के बाद किसी नदी घाट से समेटी दो मुट्ठी राख में कैद हो जाता है। कई सदियां बीत गई कई युग बीत गए, हजारों पीढ़िया निकल गई जो नदी जहां बह रही थी वह वही पर बह रही है ओर पूरे वेग से बहते हुये आज भी जवान है जिसका सामना न तो कभी कोई देवता कर सके थे ओर न ही आज किसी के द्वारा करने का प्रश्न पैदा होता है। हाँ धरती पर आई प्रलय, भूकंप आदि बड़े उत्पादों के कारण सेकड़ों नदी ताल अपना अस्तित्व खो चुके है किन्तु गंगा, यमुना, सरस्वती, काबेरी, गोदावरी, नर्मदा, सरयू, ताप्ती आदि युगों से अपने स्थान पर लाखों सालों से अटल है।

लाख साल की उम्र के मामले में कहा जाता है की ब्रम्हा का एक दिन व्यतीत होता है तब धरती पर एक युग बदल जाता है यानि हजारों साल निकल जाते है, उस मायने से ये नदिया चिरयुवा ही तो है ओर जब भी ये युवा नदिया अपने प्रबलवेग में आ जाये पलक झपकते ही इंसान की सृष्टि को घास के तिनके की तरह बहा ले जाये। बाबजूद ये नदिया अपने तटीय आवादी को पालन पोषण कर उनकी सुख समृद्धि को उपहार में देती आई है। ये नदिया माँ कही जाती है ओर माँ का यानि नारी का धर्म को निभाती है ओर हर बरसात में जब साधु सन्यासी चातुर्मास करते है तब ये राजस्वला होती है ओर प्रकृति के गर्भ को अपनी कोख में सँजोये इंसान को लौटा देती है, यानि ये सारी नदिया रेत, कंकड़ पत्थर को जन्म देती है। नर्मदापुरम जिला हो या नर्मदा, गंगा के कोई भी तटीय किनारे हो वहाँ पर नदिया रेत का पहाड़ खड़ा कर देती है जिसकी सरेआम लूट को लेकर यह बात सच सावित होती है - नर्मदा उगले सोना बंफर, बम्हन ठकुरा सबई मिल, भर लेऊ अपने डंफर। नर्मदा की सहायक -नदिया बियानी अकरा ककरा, नर्मदा बियानी रेत। बूढ़ी बियानी दुई -दुई लोमरी तपोलट बालक, पेट ।। गाय, भैंस या बकरी जब दो दो बच्चे जनती है तब उसके पालने वाले को मिलने वाले सुख को बयान नही किया जा सकता, कारण उसे इन दो बच्चों के पैदा होने से धन वृद्धि का लाभ जो होता है। यहाँ तो नदी अपने दोनों किनारों को रेत, कंकड़ पत्थर से जो मलामाल कर इसे लूटने वालों के गालों पर लालिमा जो ला देती है। साँची कहो, सांची कहो, सांची कहो, ए हो सरकारवा, क्या चौगुनी नर्मदा तूने देखि। दिव्यता जाकी बड़ी निराली, अंबार रेत के न होवे खाली, लगे रहो दिन रात, नर्मदा सबकी लेखि ॥ यहाँ रेत चोरी कारोबार में लगे लोग नर्मदा मैया पर प्रसादी-भंडारा ही इसलिए कराते है ओर कहते है नर्मदा मैया तू सच में तो मेरी मैया नहीं है किन्तु धर्म से तू मैया है । मेरी मैया ने तो जन्म देके छोड़ गई है वो तो किस्मत से नर्मदा मैया तू अच्छी मिल गई जो हर साल हमें रेत से मालामाल कर रही है। तूने इनती रेत,कंकर पत्थर दिये की हमे मिले सुख की सौगात का वर्णन नहीं कर सकता हूँ। सच मे तूने तो हमे निहाल कर दिया ओर हमारी पीढ़िया तेरे गुण गाएगी, हमारी दुनिया ही तू है जन्म के बाद भले धर्म ओर जाति कोई हो पर तू तो जीवन भर कर्म की भी मैया हो गई जो तेरे आँचल से रेत कंकड़ पत्थरा बिना मूल्य चुकाए उठा रहा हूँ ओर इससे जहां सुख की सौगात तो मिली वही मेरी मुराद पूरी हो गई।

यह लिखते समय एक मित्र मेरा मजाक उड़ाकर बोला, अगर नदी गर्भवती होती है तो उसका पेट किसी को दिखाई क्यों नहीं देता है? आखिर प्रश्न का जबाव भी तो मिलना चाहिए। नदिया वषार्काल में पेट से हो जाती है ओर इसी वषार्काल में नदिया मुख्यधारा को छोड़ विकराल रूप में अपनी सीमाए त्यागकर गांवों शहरों ओर घरों में प्रवेश कर जाये ओर वर्षा समाप्ति पर अपने मूलस्वरूप में आ जाये तब उसके किनारों पर लगे रेत के टापुओं से पता चलता है की नदी भी पेट से थी ओर बियाने के बाद ये रेत कंकड़ आदि के अंबार लगा रखे है, जो क्रम सदियों से चला आ रहा है ओर हम उन अंबारों को अपनी जरूरत से ज्यादा उठाने को तत्पर हो गए है।

हमारे बीच बहने वाली नदी हमे बहुत प्रिय लगती है इसलिए नदी भी अपने स्वभाव को मानवीय बनाकर माँ के रूप में हमारे सुख दुख दूर करने लग जाती है ओर हमारे आंसू पोंछ कर हमे जो सहानुभूति देती है वह किसी मित्र रिश्तेदार के करीब आने पर नहीं मिलता है। आप कितने भी दुखी हो, कष्ट में हो, जीवन के सारे मार्ग बंद हो गए हो ओर मृत्यु को गले लगाना चाहते हो। माँ रूपी नदी के तट पर बैठ जाइए सब कष्ट दूर हो जाते है ओर सूनी गोद वाली बहू बेटियाँ अपनी गोद में लल्ला खिलाती है, यह माँ का स्वभाव जहां सबकी मानसिक व्यथा दूर हो जाती है जैसे गंदले पानी से कचरा अंदर बैठने के साथ ही नदी का जल उजला ओर साफ स्वच्छ हो जाता है। अब नदी को देखिये वे आपके लिए अपने कर्तव्य पालन करते कभी थकती नहीं ओर अपनी सतत यात्रा जारी रखती है। बरसात में ये सारी नदिया गर्भ धारण कर अपने तटों पर जनती है यानि प्रकृति के खजाना को जन्म देकर चारों ओर रेत, कंकड़ पत्थर का अम्बार लगा देती है। नदी के जन्म दिये रेत आदि को हम लूटने लग जाते है ओर नदी की कोख में आधुनिक मशीनों से दोहन जारी कर नदी का दिल छलनी कर देते है। अगर नदी हर साल बियाती है ओर अपनी कोख में प्रकृति का असीम भंडार लुटाती है तब वह यह आभास नहीं करती की पर्यावरण एवं उसके अस्तित्व को लहूलुहान कर उसकी कोख के भंडारों के लालच में आदमी ओर सरकार उसे खून के आँसू रुलाएंगे जबकि वह अपने पेट में भरी रेत, कंकड़ ,पत्थर आदि अपने तटों को सम्पन्न ओर प्रकृति की शोभा बढ़ाने के लिए धरती के कुलों से लेकर आती है ताकि वह हमारे उल्लास के लिए होता है न की नदी की गोद उजाड़ने के लिए उसकी कोख में, उसके दिल में छेद करने के लिए भारी भरकम मशीनों का प्रयोग करने के लिए है , वहाँ तो श्रमिकों का पसीना बहाकर उस रेत कंकड़ को उठाए तो उस जननी नदी का सम्मान होगा, जिस सम्मान से ये सारी माताए वंचित है। यही दुर्भाग्य सभी ओर विनाश का कारण बनता जा रहा है ओर नदियों के दिल में छेद कर बेदर्दी झबेरह्मी से उठाई संपदा से बनने बाली सरंचनाये भी अभिश्रप्त होने को तत्पर है।



आत्माराम यादव
ग्वालटोली नर्मदापुरम
मध्यप्रदेश

कुचल दिया भरोसा ले गया विश्वास निकाल

सुना था शहर में मिलता है फसल का अच्छा दाम
यही सोच कर निकल पड़ा गांव से एक किसान
दो घंटे की उतराई सिर पर बेचने के लिए कुछ सामान
जा पहुंचा भटकते भटकते सामने दिखी आढ़ती की दुकान
इतने में सामने से आ गया एक लड़का जवान
हाव भाव उसके देखकर लिया उसने यह जान
देहाती है पहली बार पहुंचा है गांव से शहर
पांव छुए उसके दिया बहुत इज्जत मान
इतना अपनापन क्यों जता रहा है यह अनजान
समझ नहीं पाया सीधा साधा भोला वह किसान
बातों ही बातों में फैलाया उसने ऐसा जाल
ऐसा लगा उसको जैसे बरसों की है पहचान
थोड़ी देर बात करके किसान को चंगुल में फंसाया
अच्छे दामों की बात करके उसका सामान उठाया
किसान को सड़क के किनारे पैरापिट पर बिठाया
माथा ठनका किसान का बहुत देर तक जब वह नहीं आया
थोड़ी देर में एक भद्रपुरुष उधर से गुजरा
नजर पड़ी उसकी गुमसुम बैठा था किसान
पूछा उसने क्यों भाई क्या हुआ क्या है बात
सुन कर उसकी बात बहुत हुआ हैरान
ठग था वह लड़का चल गया था अपनी चाल
अपना बन कर लूट लिया था किसान का सारा माल
पछता रहा था क्यों आया शहर बेचने सामान
कुचल दिया भरोसा ले गया विश्वास निकाल



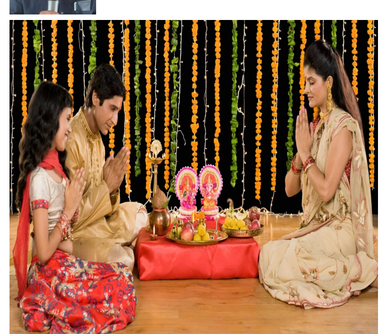
रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र



दीपावली का आध्यात्मिक महत्व

रोशनी का त्योहार आते ही घर घर दीपक की रोशनी नजर आने लगती है। दीपावली के पंद्रह दिन पहले से ही ग्रामीण क्षेत्रों में कच्चे घरों में लिपाई पुताई मांडने बनाना ।घर को अलग अलग प्रदेश में अपनी लोक संस्कृति के माध्यम से सजावट की जाती है। राजस्थान में घर का आँगन पांडु व गेरू हड़मची के माँड़ने बनाकर महिलाएं सजाती है जो बहुत सुंदर लगते हैं। यह सबसे बड़ा त्योहार है जिसे पूरा देश हर्षोल्लास से मनाता है ।बाजारों में दुकानों पर विशेष सज्जा डेक ोरेशन किया जाता है ।जगमग सड़कें गली मोहल्ले रोशनी में नहाती नजर आती है ।चारों ओर आलोक ही आलोक फैल जाता है ।दीवाली रोशनी का ही पर्व नहीं अपितु इसका आध्यात्मिक महत्व भी बहुत अधिक है ।यह आत्मा को शुद्ध करने और नकारात्मकता को दूर भगाने का समय है ।नये साल की तरह नये संकल्प के साथ दीवाली से हम नये शुभ कार्यों की शुरूआत करते हैं ।दीपावली हमें सकारात्मकता की रोशनी जलाने व भीतर के अंधकार को मिटाने का सन्देश देती है ।इस खास पर्व पर धन और सुख ,समृद्धि में वृद्धि पाने के लिए माता लक्ष्मी धन की देवी और प्रथम पूज्य श्री गणेश की पूजन अर्चन की जाती है ।दीवाली के त्योहार को भगवान श्रीराम लक्ष्मण सीता के चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या वापस पधारने की खुशी में मनाया जाता है ।उन्होंने लंका के राक्षस राज रावण को युद्ध मे पराजित किया था ।इस दिन अयोध्या में बड़ी खुशी मनाई गई ।दीपों से नगर को रोशन किया गया ।यह त्योहार समय की जीत और अच्छाई के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है ।अंधकार पर इस प्रकार प्रकाश की जीत का बड़ा त्योहार है दीपावली ।बुराई पर अच्छाई की जीत, अज्ञानता पर ज्ञान की जीत हुई।

यह त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है ।दीवाली विभिन्न धार्मिक आयोजनों देवताओं और व्यक्तियों से जुड़ी हुई है ।त्योहार के दौरान उत्सव मनाने वाले दीपक मोमबती लालटेन से रोशनी करते



हैं ।घर के फर्श को सुन्दर रंगोली बनाकर सजाया जाता है ।घर के अन्य हिस्सों को भी झालरों से अलंकृत किया जाता है ।घरों में मिष्ठान बनाये जाते हैं ।परिवार एक जगह एकत्रित होता है ।साथ साथ उत्सव मनाते हैं। परिवार में सहयोग अपनत्व की भावना देखने को मिलती है।

यह पाँच दिवसीय त्योहार होता है। पहले दिन धनतेरस दूसरे दिन रूप चौदस फिर अगले दिन लक्ष्मी पूजा भाई दूज कागज कलम दवात पूजा गोवर्धन पूजा आदि मुख्य मानी जाती है ।हिन्दू जैन ,सिख सभी धर्म दीवाली मनाते हैं।

आइए अवध का अर्थ जाने ।एक अयोध्या तो इस जगत में है जो बाहर है ।जिसे हम सब देखते हैं। भगवान राम अयोध्या में निवास करते हैं। अवध यानि जहाँ वह परम पिता परमात्मा प्रकाशित होता है ।अवध जहाँ,जह राम निवासु तहँ दिवस जहाँ भानु प्रकासू। ।यह शरीर रूपी मन्दिर ही अयोध्या है ।जिसे अवध मिल जाएगी उसका जीवन वनवास की तरह हो जाता है जहाँ वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है ।उसे अपने भीतर ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं ।भक्ति के द्वारा शक्ति मिल जाती है ।इस प्रकार साधक विजातीय शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है ।तब असत्य पर सत्य की जीत होती है। बुराई पर अच्छाई की जीत होती है ।अधर्म पर धर्म की जीत होती है ।तभी अवध में दीपावली मनाई जाती है।

भगवान श्री राम ज्ञान और अक्षय सुख के भंडार है ।उन्होंने मयार्दा में रहना सिखाया ।परिवार में भाई भाभी देवर पिता माता के साथ कैसे मयार्दा में रहा जाता है यह लीलाओं के माध्यम से सिखाया ।लक्ष्मण वैराग्य के प्रतीक है ।सीता भक्ति व शांति की प्रतीक है ।जहाँ भक्ति होती है वहीं सुख सुंदरता शांति और आनंद होता है। अयोध्या में आनंद ही आनंद हो गया था जब सीता का आगमन हुआ।

मोह व लोभ का प्रतीक रावण ।ज्ञान रूपी राम ।सीता रूपी शांति का हरण किया था मोह रूपी रावण ने। वैराग्य का अर्थ है भौतिक सुखों में आसक्ति का त्याग करना। दायित्व भी निभाना है। वैराग्य भाव भी रखना है ।यही रामायण शिक्षा देती है।

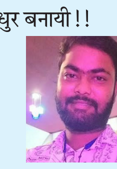
सत्य दान तप त्याग मित्रता पवित्रता प्रसन्नता विद्या गुरुजनों की सेवा यह सब गुण राम हमें सिखाते हैं ।जो इंद्रियों को अपने वश में कर लेता है उसी के पास सत्य व धर्म के शुभ गुण विधमान रहते हैं ।लक्षण महापराक्रमी व तेजस्वी हैं ।वे नीति व युद्ध में निपुण हैं ।हनुमान सर्व शास्त्र विशारद बलवान विद्यावान कहे गए हैं शारीरिक बल पराक्रम सामर्थ्य शत्रु को हराने की शक्ति हनुमान में है ।अवध में पूरा राम दरबार सजा है। आलोकित है आज सारी अवध। आज दीवाली है।

डॉ. राजेश कुमार शर्मा पुरोहित
भवानीमंडी



हसीन निगाहें

हसीन निगाहें से लूटकर मस्तानी चली
मैं ठहरा रहा ! नैनो से बातें होती गयी
मैंने देखा, उसने देखा, आँखे भर आयी !
उसकी नैनो से फिसल चला मैं, वो चली !!
आसरा जगी दिल में, गुंज उठी सहनायी
निंदिया में, उससे जुड़ा मैं, ख्वाबे भर आयी
मैंने भी ली अँगड़ायी ! दिल कयामत सायी !
ख़्वाबों में, चाँद मुझसे मिलने को आयी !!
तेरे निगाहे ! ख़्वाबों में मेरे आलोक जगायी
ख्यालों में,जज्बातों में,तुम जी भरकर आयी
चल चला मैं, मिलने को मन विभोर छायी !
ख़्वाबों की प्रासाद में, जीवंतता ले आयी !!
रंगमंच सजी, होगी विदायी या हो जुदायी
जीवन में खुशबू और सु मुस्कान आयी
इश्क की बवंडर में, इश्क कयामत लायी !
ख़्वाबों में, चाँद मुझसे मिलने को आयी !!
निगाहें से जतलायी, बेइंतहा तन्हाई ले गयी
मुझे बसाये रखा दिल में, मुझमें मिल गयी
खुशबू रचा में तुझमे, तुम सु मुस्कान लायी !
मेरे जीवन को आकर्षक और मधुर बनायी !!



-सौरभ कुमार,
जामताड़ा(झारखण्ड)



हरियाणा-दिवस के सुअवसर पर दिए गए अपने विशेष साक्षात्कार में डॉ. 'मानव' ने कहा कि पंजाब से अलग हरियाणा राज्य का गठन ही भाषा के आधार पर हुआ था, लेकिन सरकारों की उपेक्षा के चलते हरियाणवी पिछड़ती चली गई। हरियाणा के हिन्दी और हरियाणवी साहित्य के शोध और संरक्षण में अपने जीवन के पचास महत्त्वपूर्ण वर्ष खपा देने वाले डॉ. रामनिवास 'मानव' हरियाणवी की वर्तमान स्थिति से बहुत निराश हैं और व्यथित स्वर में कहते हैं कि अब तक हरियाणवी के विकास के लिए जितने भी प्रयास हुए हैं, उनमें से अधिकतर निजी स्तर पर हुए हैं, राज्य सरकार या राज्य की किसी अकादमी का शायद ही कोई योगदान उनमें रहा हो। यही कारण है कि आज तक न तो हरियाणवी का मानक रूप तय हो पाया है, न हरियाणा में हरियाणवी साहित्य अकादमी का गठन हुआ है और न हरियाणवी में कोई पत्रिका निकलती है। फिर हरियाणवी भाषा का समुचित विकास कैसे संभव है!

▶ सरकारों की उपेक्षा के चलते पिछड़ती गई हरियाणवी भाषा

वर्तमान अकादमी उपाध्यक्ष व निदेशक की पहल सराहनीय : डॉ. 'मानव'

स्वतंत्रता के पश्चात्यपंजाब में तो हरियाणवी की घोर उपेक्षा हुई ही, भाषा के आधार पर, पंजाब से अलग राज्य बनने के बाद भी, हरियाणा की सरकारों ने न तो हरियाणवी भाषा की सुध ली और न ही इसके विकास की कोई ठोस कार्य-योजना बनाई। यह कहना है हरियाणवी साहित्य के पुरोधा के रूप में विख्यात वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामनिवास 'मानव' का। हरियाणा-दिवस के सुअवसर पर दिए गए अपने विशेष साक्षात्कार में डॉ. 'मानव' ने कहा कि पंजाब से अलग हरियाणा राज्य का गठन ही भाषा के आधार पर हुआ था, लेकिन सरकारों की उपेक्षा के चलते हरियाणवी पिछड़ती चली गई।

उन्होंने स्पष्ट किया कि 'हरियाणा में कल्चर के नाम पर सिर्फ.एग्रीकल्चर है' का झूठा नैरेटिव चलाने वाले और हरियाणवी-विरोधी मानसिकता से ग्रस्त कथित साहित्यकारों ने सत्ता के सहयोग से पहले भाषा विभाग पर और फिर हरियाणा साहित्य अकादमी पर आधिपत्य जमा लिया। परिणाम? स्वतंत्रता के समय जो पंजाबी हरियाणवी से उन्नीस थी, वह न केवल संविधान की 8वीं सूची में शामिल होकर राष्ट्रीय भाषा का दर्जा पाने में सफल रही, बल्कि अब ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों में बसे करोड़ों पंजाबी भाषी लोगों के कारण विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। किंतु जो हरियाणवी अपने दम पर शताब्दियों पूर्व सुदूर दक्षिण भारत, नेपाल, तजाकिस्तान, कजाकिस्तान तथा कई यूरोपीय देशों तक पहुँच गई थी, स्वतंत्रता-प्राप्ति के सतत्तर और हरियाणा गठन के अड़सठ वर्ष बाद भी अपनी पहचान को बचाये रखने के लिए संघर्ष कर रही है। हरियाणा के हिंदी और हरियाणवी साहित्य के शोध और संरक्षण में अपने जीवन के पचास महत्त्वपूर्ण वर्ष खपा देने वाले डॉ. 'मानव' हरियाणवी की वर्तमान स्थिति से बहुत निराश हैं और व्यथित स्वर में कहते हैं कि अब तक हरियाणवी के विकास के लिए जितने भी प्रयास हुए हैं, उनमें से अधिकतर निजी स्तर पर हुए हैं, राज्य सरकार या राज्य की किसी अकादमी का शायद ही कोई योगदान उनमें रहा हो। यही कारण है कि आज तक न तो हरियाणवी का मानक रूप तय हो पाया है, न हरियाणा में हरियाणवी साहित्य अकादमी का गठन हुआ है और न हरियाणवी में कोई पत्रिका निकलती है। फिर हरियाणवी भाषा का समुचित विकास कैसे संभव है!

पूर्व में हरियाणा साहित्य अकादमियों की कार्य-प्रणाली पर क्षोभ प्रकट करते हुए डॉ. 'मानव' ने कहा कि सत्ता के आशीर्वाद से हरियाणा की अकादमियों पर दशकों से कुंडली मारकर बैठे कुछ लोगों ने, अपने पद का दुरुपयोग करते हुए, न केवल चाटुकारिता की अपसंस्कृति को बढ़ावा दिया, बल्कि अकादमियों द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कारों की प्रतिष्ठा को भी ठेस पहुंचाई। जो लोग अढाई हजार के पुरस्कार के योग्य नहीं थे, उन्हें अढाई-अढाई लाख के, जो पांच हजार के पुरस्कार के योग्य नहीं थे, उन्हें पांच-पांच लाख के और जो सात हजार के पुरस्कार के योग्य नहीं थे, उन्हें सात-सात लाख के नामित पुरस्कार थोक में बांटे गये। इससे भी दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण बात यह रही कि अनेक सुयोग्य और पुरस्कारों के सच्चे अधिकारी साहित्यकारों की घोर उपेक्षा की गई।

हरियाणवी भाषा और साहित्य के विकास हेतु हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के वर्तमान कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. कुलदीपचंद अग्निहोत्री और निदेशक डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा की जा रही पहल को सराहनीय बताते हुए डॉ. 'मानव' ने आशा प्रकट की है कि उनके प्रयासों के सार्थक और संतोषजनक परिणाम सामने आएंगे। हरियाणवी को हिंदी का पूर्व रूप और केंद्रीय साहित्य अकादमी के शब्दों में 'हिंदी की सहभाषा' बताते हुए डॉ. 'मानव' ने कहा कि अलग से हरियाणवी साहित्य अकादमी का गठन, हरियाणवी पत्रिका का प्रकाशन, हरियाणवी भाषा का मानकीकरण और समकालीन हरियाणवी साहित्य का मूल्यांकन बहुत जरूरी है। हरियाणवी साहित्य को फूहड़ सांगों, अश्लील रागिनियों और भौंडे चुटकुलों तक सीमित कर देना उचित नहीं है।

उल्लेखनीय है कि साठ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के लेखक और संपादक डॉ. रामनिवास 'मानव' हरियाणा में रचित हिंदी-साहित्य के प्रथम शोधार्थी और अधिकारी विद्वान तो हैं ही, हरियाणा के समकालीन साहित्य की शोध-परंपरा के विधिवत शुभारंभ का श्रेय भी इन्हें प्राप्त है। 'हरियाणा में रचित सृजनात्मक हिंदी-साहित्य' और 'हरियाणा में रचित हिंदी-महाकाव्य' इनके दो चर्चित शोधग्रंथ हैं। 'हरियाणवी : बोली और साहित्य' तथा 'हरियाणवी' इनकी हरियाणवी पर केंद्रित दो शोधपरक और समीक्षात्मक पुस्तकें हैं। 'हरियाणवी' पुस्तक केंद्रीय साहित्य अकादमी के अनुरोध पर लिखी गई थी तथा इसे 'हिंदी की सहभाषा' शृंखला के अंतर्गत साहित्य अकादमी द्वारा ही प्रकाशित किया गया था।



- डॉ. सत्यवान सौरभ,

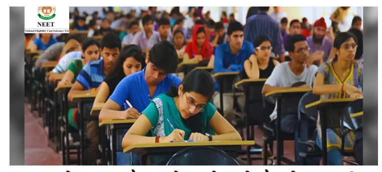
नीट युजी 2025 परीक्षा पैटर्न बदला जाएगा?

राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी, एनटीए जल्द ही नीट युजी, उवएळ सीयुईटी, जेईई-मेन सहित सभी महत्वपूर्ण परीक्षाओं के विवरण के साथ परीक्षा कैलेंडर जारी करेगी। राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा, एनईईटी यूजी 2025 4 मई, 2025 को आयोजित होने की उम्मीद है। संभावना अधिक है कि एनटीए विशेषज्ञ समिति की सिफारिश पर परीक्षा पैटर्न में बदलाव कर सकता है। नीट युजी परीक्षा पेपर लीक के जवाब में गठित विशेषज्ञ पैनल जल्द ही सुप्रीम कोर्ट को अपनी रिपोर्ट सौंपेगा। कर्मचारियों और परीक्षा केंद्रों की आउटसोर्सिंग को कम करना, अधिकतम प्रवेश परीक्षा ऑनलाइन आयोजित करना और प्रमुख प्रवेश द्वारों में प्रयासों की संख्या को सीमित करना केंद्र द्वारा स्थापित एक उच्च-स्तरीय पैनल द्वारा अनुशंसित उपायों में से एक है।

सुप्रीम कोर्ट ने 21 अक्टूबर को केंद्र को रिपोर्ट जमा करने के लिए दो सप्ताह का अतिरिक्त समय प्रदान किया। इस पैनल का नेतृत्व पूर्व इसरो प्रमुख आर राधाकृष्णन कर रहे हैं।

एक सूत्र ने पीटीआई को बताया, रिपोर्ट लगभग तैयार है। एनटीए के कामकाज और देश में प्रमुख प्रवेश परीक्षाओं के संचालन को सुव्यवस्थित करने के लिए कई सिफारिशें की जा रही हैं।

परीक्षा सुधार पर केंद्र के पैनल ने सिफारिश की



सूत्र ने कहा, पैनल ने इतने बड़े पैमाने पर परीक्षा आयोजित करने में शामिल जटिलताओं, जोखिमों और सुरक्षा उपायों को संबोधित करने के लिए 22 बैठकें कीं। पैनल ने छात्रों और अभिभावकों सहित हितधारकों से सुझाव भी मांगे थे और प्राप्त 37हजार से अधिक सुझावों पर विचार किया। कहा।

पैनल द्वारा ऐससी को सौंपी जाने वाली कई सिफारिशों में से एक सिब्रिड परीक्षाओं का विकल्प चुनना है, जहां ऑनलाइन मोड पर स्विच करना पूरी तरह से संभव नहीं है। यह भी उम्मीद की जाती है कि पैनल मेडिकल प्रवेश एनईईटी सहित प्रमुख परीक्षाओं में प्रयासों की संख्या को सीमित करने और परीक्षाओं की पवित्रता प्रभावित न हो यह सुनिश्चित करने के लिए आउटसोर्स कर्मचारियों और केंद्रों की भूमिका को कम करने की सिफारिश करेगा। उम्मीद है कि रिपोर्ट अगले सप्ताह अदालत में पेश की जाएगी। रिपोर्ट्स की मानें तो इस बात की संभावना ज्यादा है कि एनटीए नीट समेत सभी बड़ी परीक्षाओं के परीक्षा पैटर्न में बदलाव कर सकता है। आज तक, नीट युजी परीक्षा के लिए प्रयासों की संख्या पर कोई सीमा नहीं है। उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे अपडेट न छूटने के लिए एनटीए की आधिकारिक वेबसाइट पर नजर रखें।



विजय गर्ग, मलोट

आग खाओगे तो अंगार ही उगलोगे

युगों से भारत महान है इसका एक नाम आर्यावर्त है , अनादि वेदों की श्रवण भूमि है ये और वेद तथा ब्राह्मण इसके दो मजबूत स्तम्भ रहें है। पश्चिमी तथा वामपंथी इतिहासकार कहते हैं कि भारत कभी एक राष्ट्र रहा ही नहीं ।ब्रटिश काल में अंग्रेज भी यही कहते थे , आजाद भारत में कथित प्रगतिशील विचारक भारत को राज्यों का समूह मानते हैं। आजादी पाने तक रजवाड़ों , रियासतों का समूह मानते थे । कुछ वर्ष पूर्व सरदार पटेल की प्रतिमा स्थापना के बाद कई विद्वानों के ऐसे ही मत सामने आए थे ।जैसे कि पटेल रियासतों को एक न करते तो आज एक भारत देश में 550 देश होते ।वास्तव में रियासतों में बंटा होने पर भी भारत सम्पूर्ण प्रतिभा सम्पन्न राष्ट्र था। इसे भुलाने के षड़यंत्र होते आये हैं। विदेशी इतिहासकारों ने जो नहीं किया, वह राहुल गाँधी, अखिलेश यादव, मायावती जैसे जातिवादी नेताओं और रोमिला थापर जैसी वामपंथी इतिहासकारों ने कर दिखाया ।ये नेता और इतिहासकार भारत को कभी भी एक देश नहीं , टुकड़े - टुकड़े दिखाना चाहते हैं ।उदाहरण में देखिए जौनपुर में अनुराग यादव हत्याकांड और बहराइच में गोपाल मिश्रा हत्याकांड, अनुराग हत्याकांड जिसमें इस लड़के का सर काट हत्या कर दी गयी उसे ऐसे लिख रहे हैं सपाई जैसे ये कोई वर्ग संघर्ष का मामला हो और मर्डर अन्य किसी सवर्ण जाति नें किया हो ! हद हो गई राजनीति की जबकि अनुराग जैसे मासूम की हत्या उसी के जाति के, उसी के कुनबे के, उसी के पडोसी लालता यादव ने की जो मूलतः एक ही गोत्र कुनबे के है।।विवाद जमीन का था वो भी अवैध कब्जे का तो अखिलेश भईया आग खाओगे तो अंगार ही उगलोगे, और याद रहें नियत खराब रखोगे तो कीमत आगे की पीढ़ीयाँ चुकायेंगी। वैसे उत्तर प्रदेश में वाकई ग्रामसभा स्तर पर कड़ाई से चकबंदी और मैडबंदी करवाई जाना अनिवार्य है शासन द्वारा। जमीनी विवाद और अवैध कब्जे खत्म हो जाएँ तो अपराधों में बड़ी गिरावट आएगी। बाकी यूपी हिन्दी पट्टी में कुछ जाति वालों को राजनीति से बेईमानी और गुंडई की सामाजिक स्वीकार्यता जिस तरह मिली हुई है उसका तो कहना ही क्या। भारत तो विश्व की प्राचीनतम सभ्यता है ।हमारा प्रथम सम्वत ही करीब 195 करोड़ वर्ष पुराना है । इस देश को रियासतों से मत पहचानिए ? 29 राज्यों में बंटा मत मानिए ? बड़ी पुरानी है हमारी हस्ती ।यह भूमि मानव संस्कृति की जन्मदात्री है ।इसे केवल राजनीतिक जान से मत नापिये !इन दिनों हमारे मुल्क में खासकर दबंग जाति वर्ग में एक जाति का जिक्र बार-बार आता है. कई बार यह इतनी बार आता है कि लगता है हम उसी जाति के ३ बाशिंदे हैं, दिन रात एक ही तरह का सुर अलाप. खैर हर जाति की कुछ न कुछ खासियत होती है। वहां से कुछ सीखने और न सीखने के बहुत से तजुर्बे हासिल किए जा सकते है। हर जाति में सांस्कृतिक मूल्यों अपनी विरासत के लिए जाने जाते है। जिसे वहां की पृष्ठभूमि और योग्य मिलकर संभव बनाते हैं। एक जाति का व्यक्ति किसी दूसरे जाति से क्या ले सकता है यह पहलू हर व्यक्ति के सामने विचारणीय होता है। दुनिया में अमन हो, मुझे लगता है यह हर व्यक्ति सोचता होगा। ज्ञान कलाओं के निहितार्थ भी यही है, और ब्राह्मण हमेशा देश और दुनिया के लिए समर्पित रहता है उसकी योग्यता दुनिया को एक नया रास्ता दिखाती है। विगत तीन चार दशकों से दर्शकों का दिल बहलाने वाले इस विरले लोग ही अपनी एक खास जगह बनाईं। स्टैंड-अप जातियों के रूप में मशहूर हुए चंद्रशेखर रावण भी बड़ा नाटककार है, दबंग भी है, वकील भी और एक जातिवादी नेता भी है। 90 के दशक में मशहूर पाकिस्तानी ड्रामा 'बकरा किश्तों पर' से आगाज करते हुए उमर शरीफ ने हमेशा दर्शकों का मनोरंजन किया। ऐसे ही भारत में भी कुछ ऐसे चहते जातिवादी कलाकारों की उपस्थिति लोगो को चुभ रही। इस शस्यश्यामला मातृभूमि का इतिहास तो देखिये ! आज दुनिया कुछ कुछ जान रही है। जबकि हम अनंत काल से जानते हैं कि हमारी धरती सृष्टिकर्ता विष्णु की शैय्या शेषनाग के फन पर टिकी है ! हमसे पुराना भला कौन ? अतीत को जानने और पहचानने का यही समय है ! सनातन ही सत्य है और यही सही समय है अपने को ढूढ़ने का !



पंकज सीबी मिश्रा,
जौनपुर यूपी

एक दिया शहीदों के नामः देश भक्ति गीतों से गूंजा परिसर



गोरखपुर (जीकेबी)। गोरखपुर में प्रत्येक वर्ष कि भांति इस वर्ष भी गोरखनाथ मंदिर एवं भोजपुरी एसोसिएशन ऑफ इंडिया ह्लभाईह्व के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दीपोत्सव एवं अमर शहीदों को समर्पित ह्लएक दिया शहीदों के नामरु में 11000 दिया जलाकर देश के अमर शहीदों को याद किया गया। गोरखनाथ मंदिर स्थित भीम सरोवर पर दीप जला कर एवं मुक्ताकाशी मंच पर शहीदों के चित्र पर पुष्पांजलि कर कार्यक्रम का शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि सीएम योगी आदित्यनाथ ने किया।

वैदिक मंत्रोच्चार के बीच मां गंगा का हुआ दुग्धाभिषेक



वाराणसी। कांग्रेस कार्यकताओं ने गंगा में दुग्धाभिषेक कर स्वच्छ गंगा का संदेश दिया। शीतला घाट पर विधि विधान से पूजन किया गया और गंगा को स्वच्छ रखने का संकल्प लिया गया। कांग्रेस कार्यकताओं ने कहा कि इसी दिन 2008 में मनमोहन सिंह की कांग्रेस सरकार द्वारा गंगाजी को राष्ट्रीय नदी घोषित किया गया था। तब से हर वर्ष उसी तिथि वाराणसी के कांग्रेसजन मां गंगा को पूजते हैं। सुबह वेद मंत्र गूंजे और गंगा की धारा में उतरकर उनकी निर्मलता के लिए प्रयास की सौगंध खाई गई। इसके साथ ही इसे अभियान के तौर पर लिया जाएगा ये बात कही गई। कांग्रेस कार्यकताओं ने मांग की कि राष्ट्रध्वज की तरह ही राष्ट्रीय नदी मां गंगा को समुचित आदर दिया जाए।

नदियों का प्रदूषण दुखद ही नहीं शर्मनाक भी

भारत में नदियों का हाल दुखद ही नहीं, शर्मनाक भी है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में ही अगर हम यमुना का हाल देखें, तो सिर झुक जाता है। इन दिनों यमुना नदी पर बहुत आसानी से जहरीला झाग तैरते देखा जा सकता है, क्योंकि नदी में प्रदूषण का स्तर अब तक के उच्चतम स्तर पर बना हुआ है। धर्मशास्त्र के हिसाब से भी यमुना का बहुत महत्व है, पर इसमें साफ पानी का नामोनिशान नहीं है। सफाई का काम करने वाले भी शर्मसार और दुखी हैं। मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा सहित पड़ोसी राज्यों में औद्योगिक गतिविधियों के बढ़ने और पराली जलाने जैसे कारकों के चलते इन दिनों दिल्ली का हाल बुरा है। दिल्ली में भी औद्योगिक उत्पादन के बढ़ने से यह प्रदूषण बढ़ा हो सकता है, पर फिलहाल किसी भी जिम्मेदार अधिकारी या नेता को इस विषय की चर्चा करते नहीं देखा जा रहा है। सभी नदी से झाग के हटने के इंतजार में हैं। इतना तय है कि नदियों को साफ करने के बड़े-बड़े दावे खूब हुए हैं। औद्योगिक कचरे को नदी में गिरने से रोकने के लिए भी बड़ी-बड़ी बातें हुई हैं, पर नतीजा वही ढाक के तीन पात।

विशेषज्ञों के अनुसार, जलीय जीवन के लुप्त होने की ओर इशारा करते हुए यमुना नदी को मृत करार दिया है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के भौतिकी विद्वान फणींद्र पति के अनुसार, यह गिरावट मुख्य रूप से औद्योगिक कचरे के कारण बढ़ते पानी के तापमान के चलते आई है, जो जल के आवश्यक तत्वों या अणुओं को मार देती है। यमुना कोई ऐसी अकेली नदी नहीं है, जिसका हाल इतना बुरा है। देश की ज्यादातर नदियों में समय-समय पर जहर को बहते देखा जाता है। नदियों में ही क्यों, आसपास के तमाम सरोवरों को ही अगर हम देखें, तो पाएंगे कि ज्यादातर का बुरा हाल है। सरोवरों में साफ पानी नहीं है और सरोवरों में गिरने वाले गंदे पानी को रोकने के लिए कुछ भी खास नहीं किया जा रहा है। पहले के दौर में आसपास के तालाब, सरोवरों, जल स्त्रोतों की बहुत मुस्तैदी से सफाई होती थी, जिसमें स्थानीय स्तर पर लोग बड़ी संख्या में भाग लेते थे, पर अब धीरे-धीरे अच्छी सामाजिक व प्रकृति अनुरूप संवेदनशील परंपराओं से हमने अपना पीछा छुड़ा लिया है। हम स्वार्थी हो गए हैं, सिर्फ हमारे घर या रसोई तक काम भर का साफ पानी पहुंच जाए,



उसके बाद हमें गांव- प्रदेश-देश के समग्र पानी की कोई चिंता नहीं होती है। उत्तर प्रदेश में देश की सबसे ज्यादा नदियां बहती हैं। करीब 48 नदियों के इस प्रदेश में केवल प्रमुख नदियों पर ही अगर हम नजर फेर लें, तो हमें छोटी नदियों का अंदाजा लग जाएगा। बिहार में हाल ही में एक रिपोर्ट आई है कि मानसून के समय जिन नदियों में 80 मीटर तक पानी बह रहा था, ऐसी 11 नदियों में नाममात्र का पानी रह गया है और तीन नदियां तो सूखने के कगार पर हैं। आज वास्तविकता यह है कि हम नदियों के बारे में नहीं सोच रहे हैं। वैसे, नदियों के बारे में सोचने से पहले हमें यह भी देखना चाहिए कि नदियों को कहां से पानी मिलता था। विगत दशकों में न केवल सरोवरों को घोर उपेक्षा हुई, हमने जल के बहने के तमाम प्राकृतिक रास्तों को भी बंद कर दिया है। मानसून में जगह-जगह जल भराव तो होता है, पर जल को जहां पहुंचना चाहिए, वहां जल नहीं पहुंच पाता है। दरअसल, जल या जलस्त्रोत शोधन का कोई भी काम हमें अपने आसपास से शुरू करना पड़ेगा, क्या हम इसके लिए तैयार हैं? नदियों को फिर से सेहतमंद बनाने के लिए ठोस जन-जल योजना बनाने का वक्त आ गया है।

विवेकसम्म्मत सेवा का संकल्प है दीपावली, मिलनसारिता को देती है बढ़ावा

कभी कभी मैं सोचता हूँ कि लक्ष्मी-गणेश की पूजा हम भारतीय लोग करते हैं, लेकिन हमसे ज्यादा समृद्धि ईसाई और इस्लामिक मुल्कों में दिखाई पड़ती है। आखिर इसके पीछे क्या प्राकृतिक रहस्य/राज छिपा हुआ है, तभी मुझे स्मरण हो आता है कि हमारे पास अष्ट समृद्धि (अष्ट लक्ष्मी के पूजन से प्राप्त) है जबकि उनके पास सिर्फ आर्थिक वो भी महज मौद्रिक ! दरअसल, सनातनी वैदिक मूल्यों, जिसके उदारमना उद्देश्य से जनसाधारण में कर्मकांड यानी पूजापाठ को बढ़ावा दिया जाता है, का लक्ष्य ही है नागरिक जीवन में सुचिता पैदा करना, वसुधैव कुटुंबकम का भाव भरना और सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे भवन्तु निरामया की मंगलकामना करना। इस हेतु शानदार दिनचर्या सुनिश्चित करना ताकि इंसान निरोग रह सके। जब ऐसा होगा तभी वह शेष दुनियादारी के काम आएगा।

वेद मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा कहा जाता है कि यदि भगवान गणेश की पूजा न कर सको तो विवेकसम्म्मत कार्य किया करो। भगवान विष्णु की पूजा न कर पाओ तो अपने हृदय को विशाल बनाओ। भगवान सूर्य की पूजा न कर पाओ तो दिनदहाड़े यानी सबके संज्ञान में रहने वाला/आने वाला कार्य बेझिझक किया करो। भगवती दुर्गा की पूजा न कर पाओ तो सबमें श्रद्धा रखो। भगवान शिव की पूजा न कर सको तो कल्याणकारी कार्य करो। भगवान ब्रह्मा की पूजा हमेशा नहीं की जाती है, लेकिन सृष्टिबर्द्धक कार्यों में अपना योगदान देते रहो। भगवान कुबेर की पूजा न कर पाओ तो धन संचय की भावना रखो और सद्कार्यों में अपना योगदान देते रहो।

इसी प्रकार, यदि माता सरस्वती की पूजा न कर पाओ तो लोगों के लिए हुनरमंद कार्य करते-करवाते रहो। माता लक्ष्मी की पूजा न कर सको तो सेवा और संचय की भावना जगत कल्याण हेतु रखो। महाकाली की पूजा न कर पाओ तो वीरोचित कार्य किया करो। कहने का तातपर्य यह कि पूजा-पाठ और उपवास से आपके जीवन में वही भावना प्रबल होती है, जिनकी चर्चा ऊपर में मैंने की है। यह दिव्य भाव ही हरि अनंत, हरि कथा अनंता की उक्ति को चरितार्थ करता है। सभी 33 कोटि देवता में ऐसे ही मूलभूत गुण अंतर्निहित हैं, जो उनकी पूजा, मंत्रजप आदि से जागृत होते हैं। इसकी विशद चर्चा फिर कभी करूँगा।

बस इतना समझ लीजिए कि समस्त प्रारब्ध के मूल में यही पवित्र भावना है, जिसका सम्यक फल भगवान शनिदेव देते हैं, राहू और केतु के सहयोग से। सूर्य से निकली ऊष्मा और उस पर आधारित रंग रहस्य से महिमा मंडित ग्रहों के फलाफल का मूल भी यही है। ज्योतिष को वेदों की आंख कहा जाता है, जो व्यापक समय विज्ञान है। इसमें आगे-पीछे के संकेत सूत्र बद्ध हैं, लेकिन उसे समझने-समझाने वाली अंतर्दृष्टि अब भोगी साधकों के पास न्यून हो चली है ! इस स्थिति को बदलने के लिए सबको संकल्प बद्ध होना पड़ेगा। एक बार सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा, पालक भगवान विष्णु और संहारकर्ता भगवान शिव अपनी-अपनी अधिष्ठात्री देवियों क्रमशः सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती के साथ जगत कल्याण के निमित्त इस दुनिया की प्रवृत्ति पर विचार कर रहे थे और इसको और अधिक स्वर्गिक बनाने के लिए विचार-विमर्श कर रहे थे, तभी यह बात क्षणकर सामने आई कि जन्म और मृत्यु को



शाश्वत सत्य रहने दिया जाए और हिंसा भाव को प्राकृतिक, ताकि दुनिया की आबादी नियंत्रित रहे। इसी उद्देश्य से हिंसक और अहिंसक प्राणियों की रचना हुई। लेकिन इस गुण से मनुष्यों को बचने की सीख दी गई, जिसका अनुपालन संभव नहीं हो सका। फलतः सुर-असुर संग्राम की जो परम्परा बन चली, वह अब विश्व युद्ध जैसे विराट रूप में पूरी मानवता के सम्मुख समुपस्थित है।

लोकतंत्र और प्रशासनिक संगठन भी देश-दुनिया को वह शांति भाव नहीं दे सका, जिसकी परिकल्पना हमारे सनातन ग्रंथों में की गई है। इसकी सततता के लिए ही पर्व-त्यौहार बनाये गए और सामाजिक कर्तव्यों का निर्धारण हुआ, जिसका विस्तार हमलोग राष्ट्र-राज्य के रूप में देख रहे हैं। कई अर्थों में संसार के सम्यक संचालन के लिए दीपावली सबसे बड़ा त्यौहार है। हमारे ऋषि आशीर्वाद स्वरूप भी कहते हैं कि तुम्हारे घर में हर रोज दिवाली हो।

ऐसा इसलिए कि संसाधनों की सार्वत्रिक सुलभता का नाम व्यापार है और यह पर्व उसी का सबसे बड़ा उत्सव है। इसमें लक्ष्मी, गणेश और कुबेर की उपासना का मतलब है कि कारोबार विवेक सम्मत हो, उसमें सबके हानि लाभ का विचार रखा जाए। इसके प्रतिबिंब ही भगवान गणेश हैं। वहीं पूरी मानवता की सेवा करने और इस हेतु धन-संपदा का सदुपयोग करने की शिक्षा देने और सब कार्यों में सौंदर्य बोध करते रहने की प्रेरणा माता लक्ष्मी देती हैं। उनकी पूजा के साथ भगवान विष्णु की आराधना अनिवार्य है, जो हृदय को विशाल बनाये रखने की सद्प्रेरणा देते हैं।

वहीं भगवान कुबेर को देवताओं का कोषाध्यक्ष कहा गया है, जिनकी पूजा से धनसंग्रह की प्रेरणा हमें मिलती है। यह दुनिया अर्थ प्रधान है। उसके बिना को सत्कार्य संपादित नहीं हो सकता। इसलिए सच्चे मार्ग से धनसंग्रह होता रहे और जनकल्याण में उसका सदुपयोग होता रहे, इसलिए भगवान कुबेर की भी पूजा की जाती है। प्रकाश पर्व दीपावली स्चच्छता का भी संदेश देती है। मोदी सरकार ने योजनात्मक रूप से इस क्षेत्र को व्यापक विस्तार दिया है। यह पर्व समान रूप से संसाधनों के बंटवारे की भी प्रेरणा देता है। इसी उद्देश्य से तरह तरह के उपहार वितरण की परंपरा निभाई जाती है। प्रकाश और ऊर्जा के सदुपयोग का पर्व भी है दीपावली। यह अंतस ऊर्जा और बाह्य ऊर्जा के बीच समन्वय को प्रेरित करती है। इससे भी पारस्परिक मिलनसारिता को बढ़ावा मिलता है।

भारत में रक्षाबंधन को ब्राह्मणों (नाना विध विद्या के जानकारों) का, दुर्गा पूजा को क्षत्रियों (जनसुरक्षा कार्य के प्रति समर्पित समूहों), दीपावली को वैश्यों (दुनियावी संसाधनों को समान रूप सर्वत्र उपलब्ध करवाने वाला समूह) और होली को शूद्रों (हर प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वृति में लगे लोगों के साथ देते रहने वाला समूह) का त्यौहार कहा जाता है। इस नजरिए से भी दीपावली सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि बिना संसाधन के ब्राह्मणों, क्षत्रियों और शूद्रों कार्य भी असंभव हैं। इसलिए हमें दीपावली पर संकल्प लेना चाहिए कि मिलावटी और घटिया सामग्री का विरोध किया जाएगा, क्योंकि इससे हमारा तनमन रुग्ण होता है। समकालीन लोकतांत्रिक प्रशासन अपनी भ्रष्ट प्रवृति के चलते मिलावटी व घटिया सामानों की आपूर्ति पर रोक नहीं लगा पा रहा है। दीपावली में शुभ लाभ और रिद्धि-सिद्धि की पूजा होती है, जिसका आशय यह है कि जो दुनिया के लिए शुभ होगा, उसी से लाभ संभव है, अन्यथा हानि तय। वहीं रिद्धि-सिद्धि का मतलब हर तरह की बढोत्तरी से है, जिसके लिए कार्य सिद्ध, लक्ष्य सिद्ध होना अपरिहार्य है। आपने महसूस किया होगा कि गांवों में, शहरों में जो समान बनते हैं, उसे एक दूसरे तक पहुंचाने में व्यापारी वर्ग का बहुत बड़ा योगदान होता है। वह हर प्रकार के रिस्क लेते हुए, क्षति सहते हुए भी इस कार्य में लगा रहता है। पहले राजा और अब नेता-नौकरशाही के शोषण-दोहन का शिकार भी यही वर्ग होता है। फिर भी अपने मूलभूत नैसर्गिक गुणों के चलते समाज का धनाड्य वर्ग भी यही है। सनातन मूल्यों का रक्षक और सेवक वर्ग भी यही है। स्कूल-अस्पताल और धर्मशाला का संरक्षक वर्ग भी यही है, जिसे अब कारोबारी स्वरूप मिल चुका है। इसलिए दीपावली हमें विवेकसम्म्मत तरीके से समाजसेवा हेतु अभिप्रेरित करती है, ताकि मिलनसारिता भाव में बढ़ोतरी हो। समस्त शांति के मूल में यही भाव सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए शुभ दीपावली कहने की परंपरा है, जहां शुभ ही शुभ की कामना सर्वोपरि है।

कालांतर में दीपावली को विभिन्न सनातनी घटनाओं से जोड़ा गया, ताकि दीप से बनीं दीपमालिकाओं का समग्र विस्तार हो। जब तक राम और रावण (सुर-असुर की प्रवृत्ति के प्रतीकमात्र) हैं, तबतक दीपावली की महिमा और उपयोगिता दोनों बनी रहेगी। इसलिए उत्सवधर्मी बने रहे, जीवन उल्लसित, आनंदित, सुखमय बना रहेगा। बस, अपने सगे-सम्बन्धियों, हित-मित्रों का ख्याल रखिए। इन्हीं का विराट विस्तार यह दुनिया है। जिसका हित भारत चाहता है, भारतवासी चाहते हैं, इसलिए संकल्प लीजिये कि हमें वह हालात पैदा करने हैं जब पूरी दुनिया में दिवाली मनेगी और संत्रस्त मानवता जगमग करेगी।

- कमलेश पांडेय



दीपों की कतारें दीपावली का शाब्दिक अर्थ ही नहीं, वास्तविक अर्थ है। कतारों के लिए निरंतरता जरूरी है। और निरंतरता के लिए नपा-तुला क्रम। दीप जब कतार में होते हैं, तो आनंद का सूचक बन जाते हैं। जैसे कोई मूक उत्सव हो- जगर-मगर उजाले का। उजालों की पंक्तियां उल्लास का द्योतक हैं। दीप होते ही प्रेरक हैं। एक बाती, अंजुरी-भर तेल और राह-भर प्रकाश। जितना सादा दीपावली का दीपक होता है, उससे सादा कुछ नहीं हो सकता। माटी ने ज्यों पक-जमकर, बाती के बीज से ज्योत पल्लवित की हो। यह विजय पताका कार्तिक अमावस्या के अंधेरे की पूरी रात दूर रखती है। दीपावली की रात को हर दीप रोशनी की लहर बनाता है, उजालों के समन्दर में अपना योगदान देता है।



समृद्धि, खुशहाली एवं रोशनी का लौकिक पर्व दीपावली

दीपावली एक समृद्धि, खुशहाली एवं रोशनी का लौकिक पर्व है। यह जितना भौतिक पर्व है, उतना ही आध्यात्मिक पर्व भी है, इसलिये यह केवल बाहरी अंधकार को ही नहीं, बल्कि भीतरी अंधकार को मिटाने का पर्व भी बने। हम भीतर में धर्म का दीप जलाकर मोह और मूर्च्छा के अंधकार को दूर कर सकते हैं। दीपावली के मौके पर सभी आमतौर से अपने घरों की साफ-सफाई, साज-सज्जा और उसे संवारने-निखारने का प्रयास करते हैं। उसी प्रकार अगर भीतर चेतना के आँगन पर जमे कर्म के कचरे को बुहारकर साफ किया जाए, उसे संयम से सजाने-संवारने का प्रयास किया जाए और उसमें आत्मा रूपी दीपक की अखंड ज्योति को प्रज्वलित कर दिया जाए तो मनुष्य शाश्वत सुख, शांति एवं आनंद को प्राप्त हो सकता है।

दीपावली का सम्पूर्ण पर्व एक ऊर्जा है, एक शक्ति है, एक प्रकार की गति है। एक सत्य से दूसरे सत्य की ओर अनवरत, अनिरुद्ध गति ही दीपावली की जीवंतता है। जीवन के अनेक अनुभवों का समवाय है दीपावली। एक अनुभूति से दूसरी अनुभूति तक की यात्रा में जो दीपावली के विलक्षण एवं अद्भुत क्षणों की गति है, वही जीवन की वास्तविकता है। जीवन एक यात्रा है, सतत यात्रा। ठीक इसी तरह दीपावली भी एक यात्रा है, एक प्रस्थान है, कुछ नया पाने की, अनूठा करने की। समय बह रहा है, जीवन बीत रहा है। वर्ष पर वर्ष, माह पर माह, दिन पर दिन एवं पलों पर पल बीत रहे हैं, सांसों के घट रीत रहे हैं। इन घटती सांसों को अर्थपूर्ण बनाने, सम्पूर्णता से जी लेने एवं उपयोगी करने का पर्व है दीपावली। वृक्ष भी जीते हैं, पशु-पक्षी भी जीते हैं, परंतु वास्तविक जीवन वे ही जीते हैं, जिनका मन मनन का उपजीवी हो। मननशीलता की संपदा मानव को सहज उपलब्ध है। अपेक्षा है उसका सम्यक उपयोग और विकास कर जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करें। उजालों का स्वागत करें।

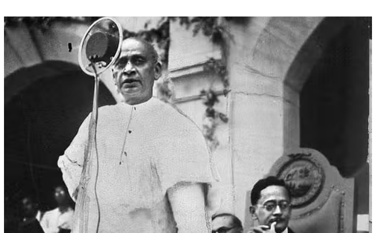
दीपावली की रात भारत भूमि पर आसमान उतर आता है। ज्यों आकाश में तारे टिमटिमाते हैं, सो उस रात धरा पर दिए टिमटिमाते हैं। चांद से रीती इस रात का हर पक्ष उजला है। अमावस कहकर कोई याद नहीं रखता इसे। इसमें इतना उजास जो है। कहते हैं सूनी राह पर, अकेले द्वार पर, कुएं की तन्हा मेड़ पर और उजाड़ तक में दीप रखने चाहिए। कोई भूले-भटके भी कहीं किसी राह पर निकले, तो उसे अंधेरा न मिले। इस रात हरेक के लिए उजाले जुटा दिए जाते हैं। अब उजालों के इस अपूर्व एवं अलौकिक पर्व की जगर-मगर में दीपों की माटी कम और लट्टूओं वाली बिजली एवं पटाखों का प्रदूषण अधिक है। वक्त के साथ खुशियों का अहसास तो नहीं बदलता, पर उसकी आमद के जरिए अलग हो जाते हैं। दीपावली पर रोशनी का परचम बुलंद किए हौसलेमंद दिए ज्यों तम के सामने डट जाते हैं, वह एक कालजयी ऐलान है विजय का। इस विजय को पाने एवं मोह का अंधकार भगाने के लिए धर्म का दीप जलाना होगा। जहाँ धर्म का सूर्य उदित हो गया, वहाँ का अंधकार टिक नहीं सकता। एक बार अंधकार ने ब्रह्माजी से शिकायत की कि सूरज मेरा पीछा करता है। वह मुझे मिटा देना चाहता है। ब्रह्माजी ने इस बारे में सूरज को बोला तो सूरज ने कहा-मैं अंधकार को जानता तक नहीं, मिटाने की बात तो दूर, आप पहले उसे मेरे सामने उपस्थित करें। मैं उसकी शक्ल-सूरत देखना चाहता हूँ। ब्रह्माजी ने उसे सूरज के सामने आने के लिए कहा तो अंधकार बोला-मैं उसके पास कैसे आ सकता हूँ? अगर आ गया तो मेरा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

जीवन का वास्तविक उजाला लिबास नहीं है, भोजन नहीं है, भाषा नहीं है और उसकी साधन-सुविधाएं भी नहीं हैं। वास्तविक उजाला तो मनुष्य में व्याप्त उसके आत्मिक गुणों क महक ही है, जो मानवीय बनाते हैं, जिन्हें संवेदना और करुणा के रूप में, दया, सेवा-भावना, परोपकार के रूप में हम देखते हैं। असल में यही गुणवत्ता उजालों की बुनियाद है, नींव हैं जिसपर खड़े होकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाता है। जिनमें इन गुणों की उपस्थिति होती है उनकी गरिमा चिरंजीवी रहती है। समाज में उजाला फैलाने के लिये इंसान के अंदर इंसानियत होना जरूरी है। जिस तरह दीप से दीप जलता है, वैसे ही प्यार देने से प्यार बढ़ता है और समाज में प्यार और इंसानियत रूपी उजालों की आज बहुत जरूरत है।

दीपों की कतारें दीपावली का शाब्दिक अर्थ ही नहीं, वास्तविक अर्थ है। कतारों के लिए निरंतरता जरूरी है। और निरंतरता के लिए नपा-तुला क्रम। दीप जब कतार में होते हैं, तो आनंद का सूचक बन जाते हैं। जैसे कोई मूक उत्सव हो- जगर-मगर उजाले का। उजालों की पंक्तियां उल्लास का द्योतक हैं। दीप होते ही प्रेरक हैं। एक बाती, अंजुरी-भर तेल और राह-भर प्रकाश। जितना सादा दीपावली का दीपक होता है, उससे सादा कुछ नहीं हो सकता। माटी ने ज्यों पक-जमकर, बाती के बीज से ज्योत पल्लवित की हो। यह विजय पताका कार्तिक अमावस्या के अंधेरे की पूरी रात दूर रखती है। दीपावली की रात को हर दीप रोशनी की लहर बनाता है, उजालों के समन्दर में अपना योगदान देता है।

शेक्सपियर की चर्चित पंक्ति है- ह्यअगर रोशनी पवित्रता का जीवन रक्त है तो विश्व को रोशनीमय कर दो/ जगमगा दो और इसे जी-भरकर बाहुल्यता से प्राप्त करो।ह्ल शेक्सपियर ने यह पंक्ति चाहे जिस संदर्भ में कही हो, पर इसका उद्देश्य निश्चित ही पवित्र था और अनेक अर्थों को लिए हुए यह उक्ति सचमुच में जीवन व्यवहार की स्पष्टता के अधिक नजदीक है। दीपावली का पर्व और उससे जुड़े रोशनी के दर्शन का भी यह उद्घोष है। रोशनी! उत्सव का प्रतीक, खुशी के इजहार करने का प्रतीक है, सफलता का प्रतीत है। अगर हम इस सोच को गहराई में डुबो लें तो ये सूक्तियां हमारे जीवन की रक्त धमनियां बन सकती हैं और उससे उत्तम व्यवहार की रश्मियां प्रस्फुटित हो सकती है। उन रश्मियों की निष्पत्तियां के स्वर होंगे- "सदा दीपावली संत की आठों पहर आनन्द", "घट-घट दीप जले", "दीये की लौ सूरज से मिल जाये"।

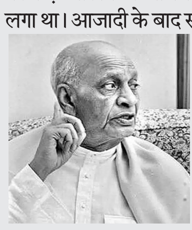
जीवन के ह्रास और विकास के संवादी सूत्र हैं- अंधकार और प्रकाश। अंधकार स्वभाव नहीं, विभाव है। वह प्रतीक है हमारी वैयक्तिक दुर्बलताओं का, अपाहिज सपनों और संकल्पों का। निराश, निष्क्रिय, निरुद्देश्य जीवन शैली का। स्वीकृत अर्थशून्य सोच का। जीवन मूल्यों के प्रति टूटती निष्ठा का। विधायक चिन्तन, कर्म और आचरण के अभाव का। अब तक उजालों ने ही मनुष्य को अंधेरों से मुक्ति दी है, इन्हीं उजालों के बल पर उसने ज्ञान को अनुभूत किया अर्थात सिद्धांत को व्यावहारिक जीवन में उतारा। यही कारण है कि उसकी हस्ति आजतक नहीं मिटी। उसकी दृष्टि में गुण कोरा ज्ञान नहीं है, गुण कोरा आचरण नहीं है। दोनों का समन्वय है। जिसकी कथनी और करनी में अंतर नहीं होता वही समाज में आदर के योग बनता है। हम उजालों की वास्तविक पहचान करें, अपने आप को टटोलें, अपने भीतर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि कषायों को दूर करें और उसी मार्ग पर चलें जो मानवता का मार्ग है। हमें समझ लेना चाहिए कि मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभ है, वह बार-बार नहीं मिलता। समाज उसी को पूजता है जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीता है। इसी से गोस्वामी तुलस-ीदासजी ने कहा है-ह्यपरहित सरिस धरम नहीं भाईह्ल। स्मरण रहे कि यही उजालों को नमन है और यही उजाला हमारी जीवन की सार्थकता है। जो सच है, जो सही है उसे सिर्फ आंख मूंदकर मान नहीं लेना चाहिए। खुली आंखों से देखना एवं परखना भी चाहिए। प्रमाद टूटता है तब व्यक्ति में प्रतिरोधात्मक शक्ति जागती है। वह बुराइयों को विराम देता है।



अपनी राजनीतिक और कूटनीतिक क्षमता का परिचय दिया सरदार पटेल ने

31 अक्तूबर को एकता की मिसाल कहे जाने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म हुआ था। उन्होंने हमेशा देश की एकता को सबसे बड़ी प्राथमिकता दी। सरदार पटेन से बड़ी कुशलता के साथ आजादी के बाद भारत का एकीकरण किया। तभी उनके बारे में 'असरदार सरदार' कहा जा सकता है। उन्होंने अपनी राजनीतिक और कूटनीतिक क्षमता का परिचय देते हुए देश को एकजुट करने का असाधारण कार्य भी बेहद कुशलता से कर दिखाया।

गुजरात के आणंद के पास स्थित करमसाद गांव के एक साधारण भूस्वामी के घर 31 अक्तूबर 1875 को वल्लभभाई जवेरभाई पटेल का जन्म हुआ था। किसान परिवार में जन्में पटेल अपनी कूटनीतिक क्षमताओं के लिए याद किए जाते हैं। सरदार पटेल ने 22 साल की उम्र में 10वीं की परीक्षा पास की थी। वहीं युवा वकील के रूप में अपनी कड़ी मेहनत की और इंग्लैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त की। वहीं आने वाले समय में वह एक निडर वकील के तौर पर सामने आए और उनको जनहित के मुद्दों पर कड़े और निडर अधिवक्ता के रूप में जाना जाने लगा था। आजादी के बाद सरदार वल्लभ भाई पटेल



देश के उप प्रधानमंत्री के अलावा गृह, सूचना और रियासत विभाग के मंत्री बने थे। इसके साथ ही पटेल ने कश्मीर से लेकर लक्ष्यद्वीप तक फैले विशाल देश को एक करने में अपना अहम योगदान दिया था। देश कभी भी सरदार पटेल का यह ऋण नहीं चुका सकता है। पटेल ने काठियावाड़ से 250, उड़ीसा से 23, नागपुर से 38, मुंबई और पंजाब जैसे 562 रियासतों को भारत में मिलाने का काम किया था। सरदार पटेल द्वारा आधुनिक इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से सभी रियासतों का देश में विलय कराया था। उनका मातृभूमि के लिए प्रेम, सादगी, नेतृत्व क्षमता, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, जमीन से जुड़े होने की प्रवृत्ति, सांसारिक बुद्धिमत्ता, अनुशासन, उलझी हुई समस्याओं को हल करने के व्यावहारिक दृष्टिकोण और कौशल क्षमता सभी देशवासियों के लिए प्रेरणास्त्रोत बने। भारत की एकता की रक्षा करने के दौरान सामने कई चुनौतियां थीं। लेकिन पटेल ने लाजवाब कौशल के साथ इन चुनौतियों का सामना किया औ.र देश को एकता के सूत्र में बांधने का काम किया। वह एकीकृत भारत के शिल्पकार बनें और स्वतंत्रता आंदोलन समेत कई मोर्चों पर सफल नेतृत्व किया। 15 दिसंबर 1950 को 75 साल की आयु में दिल का दौरा पड़ने से सरदार वल्लभभाई पटेल का निधन हो गया था।

सांस्कृतिक एकता का पर्व है दीपावली

भारतीय संस्कृति में त्यौहारों का अलग ही महत्व है। वर्ष भर होने वाले छोटे बड़े त्यौहार हमारे समाज को धर्म और संस्कृति से जोड़े रखते हैं। इन्हीं त्यौहारों में से ही एक त्यौहार है दीपावली। दीपावली का त्यौहार जिसे हम प्रकाश का त्यौहार कहते हैं। आज क्या यह प्रकाश का त्यौहार रह गया है।



भारत के त्यौहारों की विशेषता यह है कि यह सामाजिक एकता के अनुपम आदर्श हैं। इसी भाव के साथ प्राचीन काल से यह पर्व हम सभी मनाते चले आ रहे हैं। वर्तमान में पर्वों का यह शाश्वत भाव आज भी प्रचलन मे है। दीपावली के त्यौहार पर भी ऐसा ही स्वरुप दिखाई देता है। भारतीय आवागमन के साधनों में त्यौहारों पर बढ़ती भीड़ इसका साक्षात्कार भी करा रही है। वास्तव में भारतीय त्यौहार आज भी परिवार और समाज के एकत्रीकरण का ही त्यौहार है। दूर रहने वाले लोग भी त्यौहार के अवसर पर अपने घर जाकर ही त्यौहार मनाते हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आधुनिक वातावरण में भी दीपावली पर्व अपनी परंपराओं को जीवंत बनाए हुए है। देश की कई संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले मिलन कार्यक्रम भी दीपावली को सार्थकता प्रदान कर रहे हैं। दीपावली का पावन पर्व पूरे देश में एक ही दिन मनाया जाता है, जो देश की सांस्कृतिक का दर्शन कराता है। यही विविधता में एकता का आदर्श है।

भारत में दिवाली का अलग ही महत्व है। वैसे तो भारत का प्रत्येक पर्व प्रकृति और संस्कृति से गहरा सामंजस्य रखते हैं, लेकिन वर्तमान में इन त्यौहारों पर हम अपनी शाश्वत परंपराओं को लगभग भुलाने की मुद्रा की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। वास्तव में प्राकृतिक वातावरण से तालमेल स्थापित करने के लिए ही भारतीय त्यौहार मनाए जाते हैं। इन त्यौहारों में संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने का संदेश समाहित है। हम कहते हैं कि संस्कृति और प्रकृति के विरुद्ध किया जाने वाला प्रत्येक कदम अपने स्वयं के लिए विनाशकारी होता है। इसलिए सांस्कृतिक पक्ष को मजबूत करने वाले इन त्यौहारों की मानवीय जीवन में भी खास अहमियत है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे पूर्वजों ने भी यह माना है कि प्रकृति पूज्य है, जीवन दायिनी है। हमारी प्रकृति ही हमारी संस्कृति है। इसलिए हमारे सांस्कृतिक त्यौहार भी प्रकृति प्रदत्त हैं। जो प्रकृति प्रदत्त है उसकी सुरक्षा करना हमारा नैतिक दायित्व है, क्योंकि प्रकृति हमारे संपूर्ण जीवन को हमेशा ही देती है। इसलिए हमारा दायित्व भी बढ़ जाता है। वर्तमान में हमारा प्राकृतिक स्वभाव समाप्त होता जा रहा है यानी हम लेने की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। वर्तमान में प्रायः एक बात सबके मुख से सुनी जाती है कि हमारे त्यौहार पहले जैसे नहीं रहे। क्या हमने कभी इस बात पर चिंतन किया है कि ऐसी अवस्था क्यों आई। इसका मूल कारण क्या है। इसके लिए हम ही दोषी हैं। सामाजिक एकत्रीकरण के लिए मनाए जाने वाले त्यौहारों को हमने ही दीवालों में कैद कर लिया है। हम क्यों नहीं त्यौहारों को समाज का हिस्सा बनाते हैं? वास्तविकता यह है कि आज हम अकेले में ही त्यौहारों का आनंद लेने का निरर्थक प्रयास करते दिखाई देते हैं। लेकिन अकेले में त्यौहार का आनंद वैसा कभी नहीं मिल सकता, जो पहले था। इसलिए हमें अपने त्यौहारों को सामाजिकता की ओर ले जाने की ओर अग्रसर होना पड़ेगा, तभी त्यौहारों की सार्थता है और तभी दीवाली की सार्थकता है।

भारतीय संस्कृति में त्यौहारों का अलग ही महत्व है। वर्ष भर होने वाले छोटे बड़े त्यौहार हमारे समाज को धर्म और संस्कृति से जोड़े रखते हैं। इन्हीं त्यौहारों में से ही एक त्यौहार है दीपावली। दीपावली का त्यौहार जिसे हम प्रकाश का त्यौहार कहते हैं। आज क्या यह प्रकाश का त्यौहार रह गया है। हम सभी बाहर तो प्रकाया की व्यवस्था कर देते हैं, लेकिन हमने अपने ह्रदय में कितना प्रकाश किया है। हम आंतरिक रुप से आज भी अंधेरे का हिस्सा हैं। आज के दौर में जिस प्रकार से सामाजिक विषताएं पनप रही हैं, वह इसी अंधकार रुपी जीवन का हिस्सा हैं। दीवाली पर्व बाह्य जगत को प्रकाशित करने के साथ आंतरिक रुप से प्रकाशित होने की भी प्रेरणा भी देता है। यह प्रेरणा ही हमारे जीवन का पथ आलोकित करती है। हम केवल शब्दों के द्वारा शुभकामनाएं देकर एक दूसरे का पथ आलोकित करने की बात तक ही सीमित होते जा रहे हैं। जिनके मन में ज्ञान का दीपक नहीं जला, उसे शुभकामनाएं देने का कोई अधिकार नहीं है।

वास्तव में दीपावली का त्यौहार प्रकाश का त्यौहार होने के साथ साथ हमें हमारे अपनों को हमारे करीब आने का त्यौहार भी है। क्योंकि हमारे अपने दूर होने के बाद भी इस त्यौहार पर अपने घर आते हैं, जिससे कहा जाता है कि यह ऐसा त्यौहार है, जो अपनों की दूरी को समाप्त करता है। दीपावली के त्यौहार से जुड़ी एक किदवंती है कि अयोध्या के राजा भगवान श्रीराम जब लंका पर विजय करके लौटे थे, तब अयोध्या में उनके स्वागत में चारों ओर दीप प्रज्वलित कर आनंद का उत्सव मनाया गया था, उसी आनंद और उत्साह का प्रदर्शन करते हुए हमारे देश में दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है, लेकिन वर्तमान में आधुनिकता के दौर में कार्यों के चलते लोग एक दूसरे से दूर रहने या दूसरे शहरों में रहने के लिए मजबूर होते हैं, लेकिन जब दीवाली का त्यौहार आता है तो वह व्यक्ति चाहे कितनी भी दूर क्यों न हो अपनों के निकट आने का हर संभव प्रयास करता है। तो यहां हम कह सकते हैं कि दीवाली एक ऐसी डोर है जो हमें हमारे अपनों से जोडे? का काम करती है। दिवाली जहां अपनों को समीप लाती है, वहीं जो लोग समयाभाव के कारण नहीं मिल पाते हैं, उनको भी मिला देती है। हम जानते हैं कि दिवाली पर कहीं कहीं दिवाली मिलन के कार्यक्रम होते हैं, जो सामाजिक एकता को बढ़ावा देने का ही काम करते हैं। इसके अलावा दिवाली के पर्व पर एक दूसरे के घर जाकर शुभकामनाएं प्रदान कर दिवाली मिलन जैसा ही कार्यक्रम बन जाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि दिवाली मात्र पटाखे छोडे? का त्यौहार नहीं है, सभी को करीब लाने का भी त्यौहार है।

अब बात की जाए स्वास्थ्य की तो वर्षभर या किसी अन्य त्यौहार पर लोग अपने घरों की सफाई करें या न करें, लेकिन दीवाली के आने से पहले अपने घरों की साफ सफाई जरूर करते हैं। लिपाई-पुताई करते हैं और अपने घर को सजाने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग भी करते हैं। इसके कारण घरों पर नई आभा बिखर जाती है, पूरा घर नया सा दिखने लगता है। दीपाली के दौरान होने वाली साफ-सफाई घर में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यही सकारात्मकता व्यक्ति के जीवन में तमाम खुशियों का संचार करती है। यह सच है कि पूरे घर की सफाई कभी नहीं होती, लेकिन दिवाली एक ऐसा त्यौहार है, जब पूरे घर के कौने कौने की सफाई हो जाती है। कुल मिलाकर दीवाली स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डॉ. वंदना सेन

देश के पहले दलित राष्ट्रपति के आर नारायणन



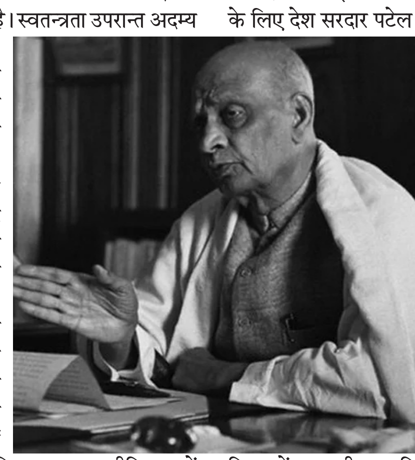
केरल के कोट्टायम जिले के उझावूर गांव में 27 अक्तूबर 1920 को के आर नारायणन का जन्म हुआ था। वह पारवन जाति से ताल्लुक रखते थे। जिसको उस समय अछूत माना जाता था। इसी गांव से नारायणन की सर्वोच्च पद तक की उल्लेखनीय यात्रा शुरू हुई थी। बताया जाता है कि उनका जन्म 04 फरवरी 1921 को हुआ था, लेकिन उनकी वास्तविक बर्थ डेट मालूम न होने की वजह से स्कूल में 27 अक्तूबर 1920 जन्मतिथि लिखवाई गई थी। जिसको बाद में नारायणन ने भी आधिकारिक ही रहने दिया। घर से करीब 8 किमी दूर एक मिशनरी स्कूल में नारायणन से शिक्षा ली। वह एक प्रतिभाशाली छात्र थे। जिस कारण त्रावणकोर के शाही परिवार ने कॉलेज जाने के लिए उन्हें छात्रवृत्ति दी। वहीं कोट्टायम के सीएमएस कॉलेज से नारायणन ने 12वीं की पढ़ाई पूरी की। फिर उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में ऑनर्स की डिग्री हासिल की। इसके बाद उनका लंदन के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में स्कॉलरशिप-समर्थित पढ़ाई करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से उन्होंने आगे की पढ़ाई पूरी की और राजनीति विज्ञान में विशेषता हासिल की। साल 1948 में भारत लौटने के बाद उनकी मुलाकात पं. नेहरू से हुई। इस दौरान नेहरू ने उनको भारतीय विदेश सेवा में शामिल होने के लिए कहा। साल 1949 में वह भारतीय विदेश सेवा में शामिल हो गए। जिसके चलते उन्होंने टोक्यो, रंगून, लंदन, कैनबरा और हनोई में दूतावास के रूप से सेवा की। नारायणन की कार्य कुशलता को देखते हुए उनको तुर्की और चीन में भारत के राजदूत के तौर पर नियुक्त किया गया। साल 1980 से लेकर 1984 तक अमेरिका के राजदूत के तौर पर उनका सफर शानदार रहा। फिर साल 1955 में पं. नेहरू द्वारा के आर नारायणन को देश के सर्वश्रेष्ठ राजनायिक के तौर पर नामित किया गया। वहीं उन्होंने विदेश मंत्रालय में सचिव के रूप में भी काम किया और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में बतौर प्रोफेसर छात्रों को पढ़ाया। फिर साल 1978 में रिटायरमेंट के बाद वह जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी में कुलपति बनें। साल 1984 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने पहली बार चुनाव में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने केरल के ओट्टपालम सीट से जीत हासिल की। वहीं कांग्रेस के टिकट पर नारायणन ने लगातार तीन बार आम चुनाव में हिस्सा लिया और जीत हासिल की। वह राजीव गांधी सरकार में राज्यमंत्री रहे। पीएम इंदिरा गांधी और राजीव गांधी सरकार में उन्होंने विभिन्न मंत्री पद संभाले।

बता दें कि साल 1992 में के आर नारायणन को भारत का उपराष्ट्रपति चुना गया। फिर साल 1997 में उनको देश के 10वें राष्ट्रपति के तौर पर चुना गया। राष्ट्रपति पद को ग्रहण करने वाले वह केरल के पहले व्यक्ति और पहले दलित हैं।

नये भारत के शिल्पी एवं भारतीयों के सच्चे सरदार

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन एवं आजादी के बाद आधुनिक भारत को वैचारिक एवं क्रियात्मक रूप में एक नई दिशा देने के कारण सरदार वल्लभभाई पटेल ने राजनीतिक इतिहास में एक गौरवपूर्ण, ऐतिहासिक एवं स्वर्णिम स्थान प्राप्त किया। वास्तव में वे आधुनिक भारत के शिल्पी थे। भारत की माटी को प्रणम्य बनाने एवं कालखंड को अमरता प्रदान करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनकी अखण्ड भारत को लेकर जितनी बड़ी कल्पनाएं थी, जितने बड़े सपने थे, उसी के अनुरूप लक्ष्य बनाये और उतने ही महत्वपूर्ण कार्य किये। उनके कठोर व्यक्तित्व में बिस्मार्क जैसी संगठन कुशलता, कौटिल्य जैसी राजनीति सत्ता तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति अब्राहम लिंकन जैसी अटूट निष्ठा थी। जिस अदम्य उत्साह, असीम शक्ति एवं कर्मठता से उन्होंने नवजात भारत गणराज्य की प्रारम्भिक कठिनाइयों का समाधान किया, उसके कारण विश्व के राजनीतिक मानचित्र पर वे एक अमिट आलेख बन गये। राजनीतिक कारणों से इस लोकपुरुष को उतना गौरवपूर्ण स्थान नहीं मिला, जितना अपेक्षित था। कांग्रेस के शासन में पटेल को भुलाने की भरपूर कोशिशें हुई, लेकिन नरेन्द्र मोदी ने इस कमी को पूरा किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2015 में सरदार पटेल की याद में देश की एकता व अखंडता के लिए पूरे देश को संकल्पित करने हेतु ह्यराष्ट्रीय एकता दौड़ह्न का आयोजन शुरू किया था। इस वर्ष इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय एकता दौड़ के आयोजन को गृहमंत्री अमित शाह ने हरी झंडी दिखाकर प्रारंभ किया। 143वीं जयंती के मौके पर गुजरात के केवड़िया में उनकी 182 मीटर ऊंची प्रतिमा का अनावरण भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। उनके व्यक्तित्व के अनुरूप प्रतिमा का निर्मित होना एवं राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन, उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि एवं एक बड़ी भूल का सुधार है। सरदार पटेल भारत के देशभक्तों में एक अमूल्य रत्न थे। वे आधुनिक भारत के शक्ति स्तम्भ थे। आत्म-त्याग, अनवरत सेवा तथा दूसरों को दिव्य-शक्ति की चेतना देने वाला उनका जीवन सदैव प्रकाश-स्तम्भ की अमर ज्योति रहेगा।

सरदार पटेल मन, वचन तथा कर्म से एक सच्चे भारतीय एवं भारतीयता के प्रतीक पुरुष थे। वे वर्ण-भेद तथा वर्ग-भेद के कट्टर विरोधी थे। वे अन्तःकरण से निर्भीक थे। अद्भुत अनुशासन प्रियता, अपूर्व संगठन-शक्ति, शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता एवं अनूठी प्रशासनिक क्षमता उनके चरित्र के अनुकरणीय अलंकरण थे। कर्म उनके जीवन का साधन था। संघर्ष को वे जीवन की व्यस्तता समझते थे। गांधीजी के कुशल नेतृत्व में सरदार पटेल का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान उत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण रहा है। स्वतन्त्रता उपरान्त अदम्य साहस से उन्होंने देश की विभिन्न 562 रियासतों का विलीनीकरण किया तथा भारतीय प्रशासन को निपुणता तथा स्थायित्वता प्रदान किया। उनका जन्म गुजरात के नडियाद (ननिहाल) में 31 अक्टूबर 1875 को हुआ। सरदार पटेल विदेश में शिक्षा पूरी कर भारत लौट आए और स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान देने लगे। सरदार पटेल ने अपना महत्वपूर्ण योगदान 1917 में खेड़ा किसान सत्याग्रह, 1923 में नागपुर झंडा सत्याग्रह, 1924 में बोरसद सत्याग्रह के उपरांत 1928 में बारडोली सत्याग्रह में देकर अपनी राष्ट्रीय पहचान कायम की। अनेक राष्ट्रहित के फैसलों एवं



दृढ़ता के कारण सरदार पटेल का व्यक्तित्व कुछ राजनीतिक दलों एवं नेताओं की नजरों में विवादास्पद रहा है। प्रायः उन्हें 'असमझौतावादी', 'पूँजी समर्थक', 'मुस्लिम विरोधी', तथा 'वामपक्ष विरोधी' कहा जाता है। पटेल की राजनीतिक भूमिका, योगदान तथा चिंतन का सही विश्लेषण किया जाना एवं उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर पैदा की गयी भ्रान्तियाँ दूर कर पक्षपातों तथा पूर्वाग्रहों से रहित वास्तविक तथ्यों को उजागर किये जाने के प्रयास किये जाने अपेक्षित है। उनके राजनीतिक जीवन से सम्बन्धित उपेक्षित या छिपे हुए महत्त्वपूर्ण तथ्यों को सामने लाकर उसका आलोचनात्मक विश्लेषण किया जाये, ताकि भारत के स्वतंत्रता संग्राम एवं आधुनिक भारत के निर्माण के प्रारंभिक इतिहास का वास्तविक स्वरूप सामने आये। सरदार पटेल ने कुल 562 रियासतों को जोड़ने का असंभव जैसा कार्य संभव कर दिखाया, कुछ रियासतें स्वतंत्र रहना चाहती थी, जो देश की एकता के लिए खतरा थी। सरदार पटेल ने इन्हें बुलाया और समझाया। वे मानने के लिए तैयार नहीं हुए तो पटेल ने सैन्य शक्ति का इस्तेमाल किया। आज एकता के सूत्र में बंधे भारत के लिए देश सरदार पटेल का ही ऋणी है। कहा जाता है कि एक बार उनसे किसी अंग्रेज ने इस बारे में पूछा तो सरदार पटेल ने कहा- मेरा भारत बिखरने के लिए नहीं बना। निःसंदेह स्वतंत्र भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री व गृहमंत्री सरदार पटेल भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी योद्धा व भारत सरकार के आधार स्तंभ थे। आजादी से पहले भारत की राजनीति में इनकी दृढ़ता और कार्यकुशलता ने इन्हें स्थापित किया और आजादी के बाद भारतीय राजनीति में उत्पन्न विपरीत परिस्थितियों को देश के अनुकूल बनाने की क्षमताओं ने सरदार पटेल का कद काफी बड़ा कर दिया। निःसंदेह सरदार पटेल द्वारा रियासतों का एकीकरण विश्व इतिहास का एक आश्चर्य था। भारत की यह रक्तहीन क्रांति थी। सरदार पटेल ने फरीदकोट के नक्शे पर अपनी लाल पैंसिल घुमाते हुए केवल इतना पूछा कि क्या मर्जी है? राजा कांप उठा। आखिर 15 अगस्त 1947 तक केवल तीन रियासतें-कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद छोड़कर उस लौह पुरुष ने सभी रियासतों को भारत में मिला दिया। इन तीन रियासतों में भी जूनागढ़ को 9 नवम्बर 1947 को मिला लिया गया तथा जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया। 1948 में हैदराबाद भी केवल 4 दिन की पुलिस कार्रवाई द्वारा मिला लिया गया। न कोई बम चला, न कोई क्रांति हुई, जैसा कि डराया जा रहा था। पटेल ने इन्हें एक सूत्र में पिरोया और वह काम कर दिखाया जिसकी उस वक्त कल्पना भी कठिन थी। अटल इरादों और लौह इच्छाशक्ति के कारण ही उन्हें लौह पुरुष कहा जाता है। महात्मा गांधी ने सरदार पटेल को इन रियासतों के बारे में लिखा था, ह्यरियासतों की समस्या इतनी जटिल थी जिसे केवल तुम ही हल कर सकते थे। सरदार पटेल गृहमंत्री के रहते जहां पाकिस्तान की छद्म व चालाकीपूर्ण चालों से सतर्क थे वहीं देश के विघटनकारी तत्वों से भी सावधान करते थे। विशेषकर वे भारत में मुस्लिम लीग तथा कम्युनिस्टों की विभेदकारी तथा रूस के प्रति उनकी भक्ति से सजग थे। अनेक विद्वानों का कथन है कि सरदार पटेल बिस्मार्क की तरह थे। लेकिन लंदन के टाइम्स ने लिखा था ह्यबिस्मार्क की सफलताएं पटेल के सामने महत्वहीन रह जाती हैं ह्न यदि पटेल के कहने पर चलते तो कश्मीर, चीन, तिब्बत व नेपाल के हालात आज जैसे न होते। पटेल सही मायनों में मनु के शासन की कल्पना थे। उनमें कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरदर्शिता थी। वे केवल सरदार ही नहीं बल्कि भारतीयों के हृदय के सरदार थे।

जहां तक कश्मीर रियासत का प्रश्न है इसे पंडित नेहरू ने स्वयं अपने अधिकार में लिया हुआ था, परंतु यह सत्य है कि सरदार पटेल कश्मीर में जनमत संग्रह तथा कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने पर बेहद क्षुब्ध थे। यद्यपि विदेश विभाग पं॰ नेहरू का कार्यक्षेत्र था, परंतु कई बार उप-प्रधानमंत्री होने के नाते कैबिनेट की विदेश विभाग समिति में उनका जाना होता था। उनकी दूरदर्शिता का लाभ यदि उस समय लिया जाता तो अनेक वर्तमान समस्याओं का जन्म न होता। यदि पटेल की बात मानी गई होती तो 1961 तक गोवा की स्वतंत्रता की प्रतीक्षा न करनी पड़ती। गृहमंत्री के रूप में वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय नागरिक सेवाओं (आई.सी.एस.) का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवाएं (आई.ए.एस.) बनाया। अंग्रेजों की सेवा करने वालों में विश्वास भरकर उन्हें राजभक्ति से देशभक्ति की ओर मोड़ा। यदि सरदार पटेल कुछ वर्ष जीवित रहते तो संभवतः नौकरशाही का पूर्ण कायाकल्प हो जाता। पडौसी देशों एवं कश्मीर की समस्या भी इतनी लम्बी नहीं होती। क्योंकि सरदार पटेल शास्त्रों के नहीं, शस्त्रों के पुजारी थे। पटेल अखण्ड एवं सुदृढ़ भारत का सपना देखते थे।

–ललित गर्ग

रस्म आदाएगी बनते त्योहार

इन दिनों भारतीय त्योहार महज रस्म अदायगी के तौर पर मनाए जाने तक ही सिमटता दिखाई दे रहा है। अब वैसी न तो मस्ती और उमंग है और न ही लोगों में पहले जैसा जोश ही देखने को मिलता है। हमारी जेबों में बेशक पहले से ज्यादा धन मौजूद होने के बाद भी भी उनका सही इस्तेमाल किस तरह से किया जाए लोगों में इस बात की उलझन अक्सर ही देखने को मिलती है। दीपावली में लोगों के घर तो रोशनी से नहा रहे होते हैं लेकिन इस आतिशबाजी भी जमकर की जाती है। लेकिन इस त्योहार की जो रौनक पहले देखने को मिलती थी बच्चों की वह खिलखिलाहट, गलियों में पटाखों के फोड़ने के बाद का शोर-शराबा अब जैसे इस दीपावली में कहीं गुम हो गया है। यकीन न हो तो उत्तर भारत के तमाम शहरों में घूमकर देख लीजिए।

पहले दीपावली के दिन लोग एक दूसरे के घरों में आया जाया करते थे लोगो का हाल चाल लिया करते थे, दीपावली मिलन जैसा वातावरण उपहारों का आदान प्रदान भी करते थे लेकिन अब ऐसा कुछ भी नहीं देखने को मिला।

ऐसा लगा कि लोग इस दीपावली में अपने घरों में ही दुबके बैठे रहे क्योंकि आतिशबाजी इतनी होने लगी कि घर से निकलना सुरक्षित नहीं रहा। फिर प्रदूषण की समस्या। लोग बाहर निकलने से घबराने लगे। दीपावली के अगले दिनों तक वायुगुणवत्ता का सूचकांक खतरे के निशान को पार करता दिखाई दिया।

जो स्वस्थ व्यक्ति को खासा बीमार करने के लिए सक्षम है। दमा या सांस रोग पीड़ितों के लिए तो जान पर भी कभी-कभी बन आती है।

त्रेता की पहली दीपावली जैसी अयोध्या का दीपपर्व

त्रेता युग में लंका विजय के बाद अपने राम को देख अयोध्या निहाल हो गई थी। चौदह वर्ष के वनवास के बाद सरयू के तीर पर अपने राम के स्वागत में अयोध्या ने खुद को प्रकाशमान करने की जो परंपरा डाली, आज पूरी दुनिया उसे दीपावली के नाम से जानती है। अयोध्या की इस बार की दीपावली त्रेता युग की पहली दीपावली जैसी ही है। अयोध्या के पावन मंदिर में रामलला की स्थापना के बाद दीपों का पहला त्योहार आया है। राम की वापसी के बाद अयोध्या इस बार त्रेता युग की ही तरह निहाल हुई। सरयू के तीर पर स्थित पचपन घाटों पर 28 लाख से ज्यादा दीपों के जरिए अयोध्यावासियों ने अपने राम का स्वागत किया। उत्तर प्रदेश सरकार का दावा है कि यह दीपोत्सव दुनिया में नया कीर्तिमान बना। उत्तर प्रदेश में जब से योगी सरकार आई है, तब से हर दीपावली को अयोध्या के घाट दीपों से सजे। इस लिहाज से देखें तो यह योगी सरकार के दीपोत्सव का आठवां संस्करण है जिसके प्रबंधन का दायित्व बाकायदा अयोध्या के ही डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की कुलपति प्रतिभा गोयल को दिया गया है। जो 30 हजार वालंटियर्स के सहयोग से 28 लाख से अधिक दीयों को प्रज्ज्वलित हुए। दीपों के जलाते वक्त तेल बाहर ना गिरे, इसका सावधानी पूर्वक ध्यान रखने के लिए वालंटियरों को कहा गया है। दीपोत्सव के दीयों में तेल डालने के लिए एक-एक लीटर के सरसों तेल की बोतलें दी गईं। हर दीप में सावधानीपूर्वक तेल डालने के लिए विशेष तौर पर दिशा-निर्देश दिए गए हैं। घाट पर तेल न गिरे, इसका विशेष ध्यान रखा गया। त्रेता



युग में राम के स्वागत में पूरी अयोध्या दीपों से जगमगा उठी थी। इसके बाद से ही हर साल कार्तिक महीने की अमावस्या को पूरा सनातन समाज, उसके घर, उसकी झोपड़ियां, उसके ठीये, उसके पशुओं की नाद, उसके कुएं के चबूतरे, तुलसी के चबूतरे, मंदिरों के दरवाजे राम के स्वागत में दीपों से सजाता रहा है। सनातन समाज की हर गली, हर हर रास्ता, हर अंधियारा कोना इस दिन प्रकाश की रेखाओं से जैसे खिल उठता है। इस परंपरा में समूची अयोध्या भी इस दीपावली को इसी अंदाज में सजी, लेकिन योगी सरकार की डाली परंपरा के अनुसार सरयू के 55 घाट अलग ही अंदाज में नजर आए, चूंकि अयोध्या के मंदिर में रामलला की स्थापना के बाद की यह पहली दीपावली है, इसलिए सरयू के घाट इस बार 28 लाख दीयों के साथ अलग ढंग से सजाए गए, जिनसे उठी रोशनियों की लंबी लकीरें सरयू की लहरों में अप्रतिम दृश्य वितान रचा जा सके। दीपोत्सव की भव्यता विश्व पटल पर दिखे, इसके लिए सरयू नदी के दसवें नंबर के घाट पर 80 हजार दीयों के जरिए स्वास्तिक बनाया गया इसके जरिए दीपोत्सव की टीम पूरी दुनिया को रौशनी युक्त शुभ्रता का संदेश देने की कोशिश की। माना जा रहा है कि दीपोत्सव में यह दृश्य अद्भुत आकर्षण का केन्द्र रहा। अयोध्या के घाटों पर दीयों को सजाने और उन्हें रोशनी से जगमगाने की जिम्मेदारी 30 हजार वालंटियर को दी गयी थी। घाटों को र 16 गुणा 16 दीए का ब्लाक से सजाया जा रहा है। जिनमें 256 दीए सजाये जा रहे हैं। इनमें एक वालंटियर को 85 से 90 दीए प्रज्ज्वलित करने का लक्ष्य निर्धारित था।

दीपोत्सव नोडल अधिकारी प्रो. संत शरण मिश्र के मुताबिक, उत्तर प्रदेश शासन के निर्देशन में अयोध्या का जिला प्रशासन दीपोत्सव के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन को यह अप्रतिम दृश्य रचने के लिए हर संभव सहयोग दे रहा था। राम नगरी के 55 घाटों पर दीयों की सुरक्षा पुलिस प्रशासन व विश्वविद्यालय के सुरक्षा कर्मियों द्वारा की जा रही है। घाटों पर सुरक्षा सख्त कर दी गई है। बिना आई कार्ड के प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया था।

यह सच है कि रोशनी के महत्व को हम तभी समझ पाते हैं, जब हमारे सामने गहन अंधकारा होता है। बेशक अपना देश वैश्विक युद्ध से बचा हुआ है। लेकिन इजरायल-फिलीस्तीन के साथ ही रूस-यूक्रेन युद्ध के आंच की ताप में दुनिया झुलस रही है। इसकी किंचित आंच भारत और भारतीयों तक भी पहुंची। त्रेता युग में राम ने रावण वध और लंका विजय के जरिए संदेश दिया था कि शांति ही दुनिया और मानव जीवन की प्रगति का आधार है। रामलला के अपने पावन घर में आ विराजने के बाद की पहली दीपावली सिर्फ दीयों की संख्या के आधार पर ही रिकॉर्ड नहीं बनाने जा रही, बल्कि वह दुनिया को एक संदेश भी देने जा रही है। संदेश यह कि रोशनियों के सामने अंधेरे को हारना ही होता है। अयोध्या की यह दीपावली दुनिया को यह भी संदेश यह कि युद्ध के अंधेरे से उसे निकलना ही होगा और मानव जीवन की प्रगति के लिए रोशनियों की लहरों पर ही सवार होना होगा।

परिवारवाद व भ्रष्टाचार की राजनीति देश के लिए खतरा

लगातार तीसरी बार उत्तर प्रदेश की पौराणिक और सांस्कृतिक पहचान सुस्थापित करने वाली बाबा विश्वनाथ की दिवय नगरी वाराणसी लोकसभा सीट से विजय हासिल कर देश में सतत तीसरी बार सरकार बनाकर प्रधानमंत्री पद पद आसीन हुए नरेन्द्र मोदी ने अपनी मौजूदा तीसरी पारी के सवा सौ दिन पूरा होने से पहले वाराणसी पहुंचकर काशी की जनता को 3300 करोड़ रुपए की विभिन्न योजनाओं का दीपावली उपहार प्रदान किया। प्रधानमंत्री ने विविध परियोजनाओं की सौगात सौंपने के बाद अपने उद्बोधन में कहा कि परिवारवाद एवं भ्रष्टाचार की राजनीति देश के लिए बड़ा खतरा हे। इस स्वेच्छाचारी मनोवृत्ति के चलते सबसे बड़ा खामियाजा आम युवाओं को होता है। इन कुनबापरस्त पार्टियों के आकाओं के स्तर से प्रमुख सभी पद सिलसिलेवार तरीके से अपने ही बेटा-पत्नी-भाई-भतीजों अथवा अन्य निकट संबंधियों के बीच बाकायदा तश्तरी में परोसे जाने के प्रचलन पर तीखा कटाक्ष करते हुए पीएम ने रेखांकित किया और संघटनात्मक कार्य करने वाला युवा अपने को ठगा-सा महसूस करता आ रहा है। विदित हो कि बीते पन्द्रह अगस्त को लाल किले की प्राचीर से किये गये अपने संबोधन में भी नरेन्द्र मोदी ने इस ज्वलन्त मुद्दे को पहली बार मुखरता से उठाकर देश के सामान्य युवक-युवतियों को भारतीय राजनीति की मुख्य धारा में सक्रिय एवं समर्पित भाव के साथ शामिल होने का निमंत्रण दिया था। अपनी इसी बात को काशी की सभा में भी प्रभावी संप्रेषण के जरिये दुहराते हुए उन्होंने आश्वस्त किया कि हम गैर-सियासी परिवारों के एक लाख युवाओं को राजनीति में लाएंगे, जो भ्रष्टाचार और परिवारवादी संकीर्ण राजनीति का खात्मा करेंगे। युवाओं में नवस्फूर्ति का संचार करते हुए प्रधानमंत्री ने आह्वान किया कि वे राजनीति में बदलाव की नवीन धुरी बनने हेतु स्वेच्छापूर्वक दृढसंकल्पित दृष्टिकोण और आत्मविश्वास भरी सोच के साथ आगे आएं।

हद तो यह परिलक्षित है कि आसन्न यूपी के नौ विधानसभा उपचुनावों को विभिन्न सीटों पर समावादी पार्टी के सुप्रीमों अखिलेश यादव ने लगभग सभी सीटों पर पूर्व में इन सीटों से निर्वाचित एमएलए के परिवार जन को ही टिकट आवंटित करने का कथित फै सला किया है। परिवारवाद की अनवरत श्रृंख्ला में हालिया सम्पन्न जम्मू-कश्मीर केन्द्र शासित राज्य के सीएम चुने गये उमर अब्दुल्लाह भी मरहूम शेख अब्दुल्लाह और पूर्व सीएम रहे फारूख अब्दुल्ला के ही सुपुत्र हैं। इसी क्रम में लम्बे समय तक पंजाब में अपना राजनीतिक सिक्का कायम कर सरकार चलाने वाले बादल परिवार का नमूना सामने रहा है। झारखंड में आदिवासी समुदाय से आने वाले शिबू सोरेन के परिवार की बात हो या फिर तमिलनाडु की द्रमुक मुनेत्र कड़गम (डीएमके) के एक छत्र राज्य करने वाले दिवंगत नेता स्वर्गीय करूणानिधि के बाद उनके सुपुत्र स्टालिन के हाथ में सत्ता की कुंजी हासिल होने तक नहीं वरन अनेक परिवार जन को सक्रिय राजनीतिक हैसियत भी सामने दृष्टिगत है। महाराष्ट्र में हिन्दी हृदय सम्राट कहलाने वाले स्वर्गीय बाला साहब ठाकरे के पुत्र उधव ठाकरे का मुख्यमंत्री बनना और इनके बेटे आदित्य ठाकरे का सक्रिय रूप से भूमिका निभाना भी परिवारवाद काजीता-जागता नमूना ही है। हरियाणा की राजनीति में चौटाला परिवार देवीलाल परिवार मौजूदा हुड्डा परवार की धमक से देश वाकिफ है। निश्चित तौर पर यदि समाजवाद के पुरोधा स्व. डा. राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव स्वर्गीय जेपी, जॉर्ज फर्नांडीस, राजनारायण जैसे दिग्गज स्वनिर्मित व्यक्तित्व के धनी राजनेताओं की सोच का विश्लेषण करें तो जाहिर है कि यह सभी नेता लोकतांत्रिक व्यवस्था में परिवार वाद को अभिशाप ही मानते थे, कभी परिवारवाद और भाई भतीजावाद को प्रोत्साहित करने के पक्ष में नहीं रहे। जाहिर है कि प्रधानमंत्री की इस सार्वजनि एवं तीखी टिप्पणी का सबसे ज्यादा असर देश की सबसे पुरानी कही जाने वाली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मौजूदा सुप्रीमों सोनिया गांधी, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, वायनाड के आसन्न लोकसभा चुनाव की प्रत्याशी प्रियंका गांधी वाड्रा पर पड़ना स्वाभाविक ही है।

स्व. मोतीलाल नेहरू के बाद से ही प्रथम प्रधानमंत्री स्व. जवाहरलाल नेहरू उनकी सुपुत्री स्व. इंदिरा गांधी इसके बाद सुपुत्र स्व. राजीव गांधी ने देश के प्रधानमंत्री पद पद को ही सुशोभित नहीं किया अपितु समूचे रौब और धमक के साथ। भारतीय चुनावी राजनीति में अपना प्रबल वर्चस्व और रूतबा कायम करने का जैसे एकाधिकार हासिल कर लिया था। इसी परिवार के संजय गांधी का भी धमाकेदार अवतरण राजनीतिक परिदृश्य में देखने को मिलता है। परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना में हुई मृत्यु के चलते पटाक्षेप की हो चुका हे। 2004 से 2014तक चली यूपीए गठबंधन सयरकार में डाक्टर मनमोहन सिंह यद्यपि औपचारिक रूप से प्रधानमंत्री अवश्य रहे परन्तु सुपर प्राइम मिनिस्टिर तथाकथित रूता या टाइटल सोनिया गांधी के नाम के साथ ही जुड़ा माना जाता रहा। इसी परिवार के राबर्ट वाड्रा भी सक्रिय पालिटिक्स में आने की इच्छा बखूबी सार्वजनिक रूप से जाहिर कर चुके हैं। कांग्रेस के साथ-साथ देश के अलग-अलग राज्यों की परिवार केन्द्रित रीजनल पार्टियों के स्वयंभू आकाओं को भी पीएम की यह बात तीर की तरह चुभना स्वाभाविक है। बिहार की राजनीति में लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार छत्र वर्चस्व कायम रहता परिहलक्षित हुआ है।

मुख्यमंत्री रहते आर्थिक कदाचार के गम्भीर प्रकरणमें जेल जाने के कारण आनन-फानन में सीएम की कुसी अपनी पत्नी श्रीमती राबड़ी देवी को सौंपना देश के सामने उजागर हो चुका है। तेजस्वी यादव का उपमुख्यमंत्री बनना, दूसरे पुत्र तेज प्रताप यादव का मंत्री बनना, बेटी मीसा का सांसद बनना, अन्य पुत्री का सक्रिय राजनीति में सक्रिय होना सब जगजाहिर है।

उत्तर प्रदेश की बात की जाय तो स्व. मुलायम सिंह यादव के बाद उनके बेटे अखिलेश यादव जैसे पैराशूट के जरिये अवतरित होकर यूपीए का सीएम बनना सबके सामने उदाहरण प्रस्तुत करता है। मौजूदा समय में राम गोपाल यादव का सांसद होना शिवपाल यादव का विधायक बनना, धर्मेन्द्र यादव सहित परिवार के अन्य निकट संबंधियों का एमपी चुना जाना और तो और धर्म पत्नी डिंपल यादव का मेंबर आफ पार्लियामेंट चुना जाना साफ प्रदर्शित करता हे कि देश के प्रधानमंत्री को आखिरकार परिवारवाद से संक्रमित भारतीय राजनीति को सही ढर्रे पर ऐसा आह्वान करना पड़ता।



मेरी मां ने दिया शानदार तोहफा : निया शर्मा

मुंबई। निया शर्मा को दिवाली पर मां से मिला सोने का ब्रेसलेट, इस दिल को छू लेने वाले उपहार के लिए जताया आभार अपनी नाटकीय भूमिकाओं के लिए मशहूर निया शर्मा को उनकी माँ ने 'लाफ्टर शेफ़्स' शो में उनकी सफल कॉमेडी का जश्न मनाने के लिए सोने का ब्रेसलेट भेंट किया।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45, बादशाह बाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित।
संपादक: पंकज धर द्विवेदी
संपर्क सूत्र : ghoonghatkibagawat37@gmail.com